श्रीगणेशाय नमः ॥

नित्य कर्मयोग पद्धति

तथा

देवपूजा और उपदेश ॥

संग्रहकर्त्ता और प्रकाशक—

रामप्रसाद कपूर

संशोधक

पं० श्रीरामवल्लभ झा शास्त्री

किताब मिलनेका पता:—

रामप्रसाद कपूर

नं० १६४ हरिसन रोड, कलकत्ता ।

चण्डिका मन्दिर

ठाकुर द्वारा लालपेड़ा मल्ल दरवाजा लोगर अमृतसर सहर

मूल्य केवल प्रेमसे पढ़ना

जेनरल प्रिंटिंग वर्क्स लि० ८३, पुराना चीनाबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता ।

परम पूज्यनीय पिताजी और

परम पूज्यनीया माताजी

को

चरण कमल में यह

नित्य कर्मयोग पद्धति

नामका पुस्तक रूपी पुष्प

समर्पण

करता हूँ ।

राम प्रसाद कपूर

॥ भूमिका ॥

प्रिय पाठक जी ! यद्यपि अनेको प्रकारके नित्य कर्मके विषय पर पुस्तकें छप चुके हैं और महर्षि प्रणित अनेकों धर्म ग्रन्थसे निकालकर विद्वानोंने सन्ध्या तर्पण देवपूजा और बलि विश्व देव इत्यादि पुस्तकोंमें देकर द्विजातियोंके लिये परम उपकार किया है अतः उन सज्जनोंको मैं सहस्र धन्यवाद देता हूँ ॥ पाठकजो। यह नित्य कर्म योग पद्धति नामका पुस्तक जो आप लोगोंके सामने रखता हूँ इन पुस्तकमें ऐसी २ बात है जो अज्ञानी भी इनको शान्त चित्तसे पढ़कर तथा इस पुस्तकमें जो लिखा है उस मुताविक क्रिया करेंगे तो शीघ्र ही अज्ञानता उनकी नष्ट हो जायगी और अन्तःकरण में ज्ञान पैदा हो जायगा और थोड़ा ही समयमें वह मनुष्य इस असार संसारसे पार हो जायंगे। यद्यपि मैं अल्पज्ञ हूँ ऐसी ग्रन्थ रचना करनेकी बुद्धि नहीं तथापि परम ब्रह्म परमेश्वरकी असीम कृपासे तथा परम पूज्यनीय पिताजीका आशीर्वादसे तथा गुरुजनोंका तथा महात्मायोंका आशीर्वादसे नित्य कर्मयोग पद्धति नामका छोटीसी पुस्तक अनेकों ग्रन्थसे निकालकर तथा अपने बुद्धि की अनुसार रचना किया हूँ और इस रचनात्मक कार्यमें दरभंगा जिलाके अन्तर्गत जयदेवपट्टी ग्रामके रहनेवाले पं० श्री राम वल्लभ झा शास्त्रीके द्वारा सहायता मिली है। इसलिये उक्त पं० जी को मैं सहस्र धन्यवाद देता हूँ ।

पाठक महोदय जी ! यद्यपि नित्य कर्मयोग पद्धतिमें भी अनेकों विषय हैं और आजकाल अल्पायुके कारण समय ज्यादा मिलना भी कठिन है इसलिये इनमेंसे जिन देव अथवा देवीके ऊपर विश्वास हो उनको नित्य स्मरण ध्यान पूजा पाठ करें और पूरा ख्याल रखे जो कभी भी उनका पूजा पाठ इत्यादि न छोड़े इस नियमसे जो अपने समयको व्यतीत करेंगे वह निश्चय ही इस संसार रूप समुद्रसे शीघ्र ही पार हो जायँगे ।

पाठकजी इस ग्रन्थमें गुप्त रहस्य नहीं लिखा हूँ क्योंकि ग्रन्थ बहुत बड़ा हो जाता इसलिये विराट ज्ञान प्रकाश कोरण नामका ग्रन्थ मैं लिख रहा हूँ उसमें गुप्त रहस्य ऐसा २ हैं जो कि थोड़ा ही समयमें और थोड़ा ही परिश्रम करनेसे गृहस्थाश्रममें रहने पर भी परम ज्ञानी तथा जीतेन्द्रीय और वैरागी हो जायँगे और कर्ममें लिपायमान न होंगे । और इस संसारोंका सब भोगोंको भोगकर अन्तमें मोक्षपदको प्राप्त कर जायगें ।

आप लोगोंका सेवक —
राम प्रसाद कपूर

विषय-सूची

* श्री गणेशाय नमः *



नित्य कर्मयोग पद्धति

।। अथ मंगला चरण ।।

स जयति सिन्धुर वदनो देवो यत्पाद पङ्कज स्मरणम् ।
वासर मणिरि व तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ।। १ ।।

खर्वं स्थूल तनूं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरम् ।
प्रस्यन्दन्मद गन्ध लुब्ध मधुप व्यालोल गण्डस्थलम् ।
दन्ताघात विदारितारिरूधिरैसिन्दूर सोभाकरम् ।
वन्दे शैल सुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ।। २ ।।

य जामो गणेशं भजामो गणेशम् ।
जपामो गणेशं वदामो गणेशम् ।।
स्मरामो गणेशं स्मरामो गणेशम् ।
नमामो गणशं नमामो गणेशम् ।। ३ ।।

या कुन्देदु तुषार हार धवला याशुभ्रवस्त्रा वृता ।
यावीणा वर दण्डमण्डित करा या श्वेत पद्मासना ।।
या ब्रह्मा च्युत शङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सामाम्पातु सरस्वती भगवती निःशेष जा ढयापहा ।। १ ।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन सलाकया ।
चक्षुरून्मिलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।। १ ।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शिनं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥ २ ॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मी कान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भवभय हरणं सर्व लोकैक नाथम् ॥ १ ॥
कर चरण कृतम्वा काय जङ्कर्म जम्वा ।
श्रवण नयन जम्वामान सम्वाऽपराधम् ॥
विहित मवहितम्वा सर्व मे तत्क्षमस्व ।
जयजय करुणाऽब्धे श्री महादेव शम्भो ॥ १ ॥
सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वेभ्यः ऋषिभ्यो नमः, सर्वेभ्यः पितृभ्यो नमः, । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, अयमारम्भः शुभायभवतु ॥

अथ प्रातः स्मरणम्

ब्रह्म मुहुर्त्तमें उठकर सय्यापर ही नीचे लिखे देवता आदिका स्मरण करें ।

प्रातः स्मरामि गणनाथ मनाथ वन्धुम् ।
सिन्दूरपूर परिशोभित गण्ड युग्मम् ॥
उदण्ड विघ्न परिखण्डन चण्ड दण्ड—
मारवाण्डलादि सुरनाथकवृन्द वद्यम् ॥ १ ॥

गणपति विघ्नराजो लम्बतुन्डो गजाननः ।
द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः ॥
विनायकश्चारु कर्णः पशुपालोभवात्मजः ।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यःपठेत् ॥
विश्वं तस्यभवेद्वश्यं नचविघ्नं भवेत् क्वचित ॥ २ ॥
सत्यरूपं सत्यसन्धं सत्यनारायणं हरिम् ।
यत्सत्यत्वेन जगतस्तं सत्यं त्वं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥
त्रैलोक्य चैतन्य मयादिदेव श्री नाथ विष्णोभवदा ज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तवप्रियार्थं संसार यात्रा मनुवर्त्तयिष्ये ॥ ४ ॥
सौ राष्ट्रे सोमनाथंच श्री शैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमों कारे ममलेश्वरम् ॥
केदारंहिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीम शङ्करम् ।
वाराणस्यांच विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे ॥
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुका वने ।
सेतुवन्धेच रामेशं घुश्मेशंच शिवालये ॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यःपठेत् ।
सर्व पाप विनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिः फलंलमेत् ॥ ५ ॥
आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयन्तु दिवाकरः ।
तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थंच प्रभाकरः ॥
पञ्चमंच सहास्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः ।

सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमंच विभावसुः ॥
नवमं दिन कृत्प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः ।
एकादशं त्रयी मूर्तिं द्वादशं सूर्य एवच ॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः ।
दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ ६ ॥

ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वेममसुप्रभातम् ॥७॥
सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरि पिङ्गलोच ।
सप्तस्वराः सप्तरसा तलानि कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम् ॥८॥
भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्सः पुलहुश्च गौतमः ॥
रैम्यो मरीचिश्च्य वनश्च दक्ष कुर्वन्तुसर्वे ममसुप्रभातम्॥९॥

सप्तार्णवाः सप्तकुला चलाश्च ।
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ॥
भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त ।
कुर्वन्तु सर्वेमम सुप्रभातम् ॥ १ ॥

अश्वत्थामा वलिर्व्यासो हनुमानश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥ ११ ॥
सप्तैतान्संस्मरै न्नित्यं मार्कण्डेय मथाष्टमम् ।
जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सव व्याधि विवर्जितः ॥ १२ ॥
पुण्यश्लोको नलोराजा पुण्य श्लोकौ युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोकाचवैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥ १३ ॥

हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम् ।
पञ्चकं वैस्मरेन्नित्यं घोर संकट नाशनम् ॥ १४ ॥
महाल क्ष्मिनमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि ।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥ १५ ॥
उमाउषाच वैदेहीरमागङ्गेति पञ्चकम् ।
प्रातरेवस्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्द्धते सदा ॥ १६ ॥
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे शर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ १७ ॥
अहल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती, मन्दोदरी तथा ।
पञ्चकं ना (नरः) स्मरेन्नित्यं महापातक नाशनम् ॥१८॥
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची हयवन्तिका ।
पुरी द्वारवती चैव सप्तैता मोक्षदायिकः ॥ १९ ॥
कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च ।
ऋतु पर्णस्य राजर्षेः कीर्त्तनं कलिनाशनम् ॥ २० ॥
अनिरूद्धं गजं ग्राहं वासुदेवं महाद्युतिम् ।
संकर्षणं महात्मानं प्रद्युम्नं च तथैवच ॥
मत्स्यं कूर्मच वाराहं वामनं तार्क्ष्यमेव च ।
नार सिंहश्च नागेन्द्रं सृष्टिसंहार कारकम् ॥
विश्वरूपं हृषीकेशं गोविन्दं मधुसूदनम् ।
त्रिदशैर्वन्दितं देवं दृढ़भक्ति मनूपमम् ॥

एतानि प्रातरुत्थाय संस्मरिष्यन्ति ये नराः ।
सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते स्वर्गलोक मवाप्नुयुः ॥ २१ ॥
श्रोत्रियं सुभगां गांच अग्निमग्निचितिं तथा
प्रात रुत्थाय यःपश्येदापद्भ्यः सविमुच्यते ॥ २२ ॥
हे जिह्वे रस सारदे सर्वदा मधुरप्रिये ।
नारायणा रन्य पीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम् ॥ २३ ॥

इसके वाद वशिष्ठ विश्वामित्र गौतम कपिलमुनि नारद अंगिरा भृगु, च्यवन परास र वेद व्यास सुखदेव तब, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, इन्द्र बरूण यम गणेश, भैरव, हनुमान, दशोदिक्पाल, सूर्य, चन्द्रमा तारागण, नक्षत्रगण, नवग्रह, तैतीसों कोटि देवता। ए सबोंका नाम लेकर चारों कुमार' सप्तर्षि सातों समुद्र, हिमालय आदि सब पवतों, चौदहो लोक, चल, अचल, आठों चिरजोवी अश्वत्थाम, बलि, व्यास, हनुमान, बिभीषण, कृपाचार्य, परशुराम, मार्कण्डेय, नल युधिष्ठिर, जनार्दन, इन पुण्यात्माका स्मरण करते हुये हरिश्चन्द्र, कर्ण, इन दानियोंका नाम लेकर, पञ्चकन्या अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा, मन्दोदरी, सप्तपुरी अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, पूरी, द्वारका गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली, महा चण्डिका।

ध्रुव, प्रहलाद, इन भक्तोंका नाम लेकर आदि शक्ति आदि भवानो, आदि कुमारी, आदि दुर्गा, नव दुर्गा, षोडश मातृका चौसठ योगिनो पक्षी योनि, काकभुसण्डो, गरूड़, सिंह, हस्ती,, गौ, घोड़ा पशुयोनि, कीट पतंग लता पत्र वट पिप्पल

इत्यादि वनस्पति कंद मूल फल आम केड़ा नारियल आदि (चारो योनि) स्वेतज, अण्डज, उद्भिज, जारज, चौरासी लाख योनि चारो वेद सामवेद, अर्थवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अठारहो पुराण सत्स्य पुराण माकर्ण्डेय पुराण, पद्मपुराण, गरूड़ पुराण, शिवपुराण इत्यादि छवो शास्त्र, सांख्य योग, मिमांसा पातञ्जलि वेदान्त, आदि इष्ट देवता शरीर देवता, (पितरोंका नाम) पिता पितामह वृद्धप्रपितामह मता मह प्रमतामह वंशमे जो पुण्यात्मा हो उनका नाम गुरू परम गुरू इत्यादियोंका स्मरण करते हुए पहले अपाने हाथोंका दर्शन करते हुए बोले।

कराग्रे वसते लक्ष्मोः कर मध्ये सरस्वती।
करमूले वसेत ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम् ॥

तब जहांपर सोते हो वहांपर टंगे हुए तसवीरोंका दशन करे, भगवान, शिव हनुमान गणेश लक्ष्मी इत्यादि तब नीचे लिखे श्लोक पढ़कर पृथ्वीके ऊपर पांव रक्खे।

समुद्र मेखले देवि पर्वतस्तन मण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्वमे ॥

तब वाह्य क्रिया करके शौचादिसे निवृत्ति होकर दन्तधावन करके तेल शरीरमें लगाकर समयानुकूल व्यायाम् करे तब नदी तालाब वा कूप अथवा घर होमें स्नान करे हो सके तो गंगाजल भी थोड़ा जलमें मिलाकर स्नान करे।

(स्नान करनेसे पहले ही सब तीर्थोंका अवाहन करे)। तब शुद्ध वस्त्र धारण करके आसनका शुद्धी करके।

॥ आसन शुद्धिका मन्त्र ॥

पृथ्वी त्वयेति मंत्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सूतलं छन्दः
कूर्मो देवता आसनोप वेसने वियोगः ॥
ओँ पृथ्वित्वया धृता लोकादेवित्वं विष्णुना धृता ॥
त्वंच धायरयनि त्वं पवित्रं कुरु चासनम् ॥

इस मन्त्रसे आसन बिछावे फिर चावल चन्दन पुष्प और जल लेकर आसनके नीचेमें पढ़कर छोड़े।

ओँ आधार शक्ति कम्वलासनाय नमः।

बैठ करके सन्ध्योपासन करे। सन्ध्योपासनका पहला विधि घृत या तेलसे ज्योति जलाकर मंत्र पढ़कर चावल छोड़ दे।

भोदीप देव रूपस्त्वं, कर्मसाक्षीहय विघ्न कृत।
यावत्कर्म समाप्तिःस्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

इसके बाद इष्ट देवताका स्थापना करे। मिट्टीका हो या धातुका हो या चित्र लिखित हो या पत्थर का हो या यन्त्र लिखित ही जिसमें अपना विश्वास हो। इसके बाद, जल लेकर

अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवास्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

इस मन्त्रसे अपना शरीरके ऊपर जल छोड़े।

शिखा वांधे गायत्री मंत्रसे और नीचे लिखे मन्त्रसे

चिद्रुपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्वमे ॥

तब तिलक लगावे। ललाट में गलेमें दोनों वाहू मूलमें हृदयमें नीचे लिखे मंत्र से।

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पाप नाशनम् ।
आपदंहरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा ॥

इसके बाद मंत्र पढ़कर तीन वार आचमन करे। माधवाय नमः। केशवाय नमः। दामोदराय नमः। इसके बाद सरस्वती कवच का पाठ करे।

॥ अथ सरस्वती कवच प्रारम्भ ॥

ब्रह्मोवाच ।

श्रृणुवत्स प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदम् ।
श्रुति सारं श्रुति सुखं श्रुत्युक्तं श्रुति पूजितम् ॥१॥
उक्तं कृष्णेन गोलोके मह्यं वृन्दा वने वने ।
रासेश्वरेण विभुना रासने रास मण्डले ॥२॥
अतीव गोपनीयं च कल्पवृक्ष समं परम् ।
अश्रुताद्भुत मन्त्राणां समूहैश्च समन्वितम् ॥३॥
यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मन् बुद्धिमांश्च बृहस्पतिः ।
यद्धृत्वा भगवाञ्छुक्रः सर्वदैत्येषु पूजितः ॥४॥
पठनाद्धारणाद्वाग्मी कवीन्द्रोवाल्मिको मुनिः ॥५॥
स्वायम्भुवो मनुश्चैव यद्धृत्वा सर्व पूजितः ।
कणादौ गौतमः कण्वः पाणिनिः शाकटायनः ॥६॥
ग्रन्थं चकार यद्धृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयम् ॥७॥
धृत्वा वेद विभागं च पुराणान्यखिलानिच ।
चकार लीला मात्रेण कृष्णोद्वैपायनः स्वयम् ॥८॥

शता तपश्चसंवर्त्तों वशिष्ठश्च पराशरः ।
यद्धृत्वा पठनाद् ग्रन्थं याज्ञवल्क्यश्चकारसः ॥९॥
ऋष्य श्रृङ्गोभरद्वाजश्चास्तीको देवलस्तथाः ।
जैगीषब्योऽथ जा बालिर्यद्धृत्वा सर्व पूजितः ॥१०॥
कवचस्यास्यविप्रेन्द्र ऋषिरेव प्रजापतिः ॥
स्वयं वृहस्पतिश्छन्दो देवो रासेश्वरः प्रभुः ॥११॥
सर्वतत्व परिज्ञान सर्वार्थसाधनेषु च ।
कवितासुच सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥१२॥
ओंह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः ।
श्रीवाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदावतु ॥१३॥
ओं सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रंपातु निरन्तरम् ।
ओँ श्रीं ह्रीं भारत्यै स्वाहा नेत्र युग्मं सदावतु ॥१४॥
ओँ ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वतोऽवतु ।
ह्रीं विद्याधिष्ठातृ देव्यै स्वाहा ओष्ठं सदावतु ॥१५॥
ओँ श्रीं ह्रीं ब्राह्मयै स्वाहेति दन्तपङ्क्ती सदावतु ।
ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो ममकण्ठं सदावतु ॥१६॥
ओँ श्रींह्रीं पातुमेग्रीवां स्कन्धं मे श्रीः सदावतु ।
श्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहावक्षः सदावतु ॥१७॥
ओँ ह्रीं विद्या स्वरूपायै स्वाहामे पातु नाभिकाम् ।
ओँ ह्रीं ह्रीं वाण्यै स्वाहेति मम पृष्ठं सदावतु ॥१८॥

ओँ सर्व वर्णात्मिकायै पादयुग्मं सदावतु ।
ओँ रागाधिष्ठातृ देव्यै सर्वाङ्गं मे सदावतु ॥१९॥
ओँ सर्व कण्ठ वासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदावतु ।
ओँ ह्रीं जिह्वाग्र वासिन्यै स्वाहाऽग्नि दिशि रक्षतु॥२०॥
ओँ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै बुध जनन्यै स्वाहा ।
सततं मन्त्र राजोऽयं दक्षिणे मां सदावतु ॥२१॥
ओँ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां मे सदावतु ।
कवि जिह्वाग्र वासिन्यै स्वाहा मां वारुणोऽवतु ॥२२॥
ओँ सदाम्बिकायै स्वाहा वायव्यां मां सदावतु ।
ओँ गद्य पद्य वासिन्यै स्वाहा मा मुत्तरेऽवतु ॥२३॥
ओँ सर्व शास्त्र वासिन्यै स्वाहे शान्यां सदावतु ।
ओँ सर्व पूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदावतु ॥२४॥
ऐं ह्रीं पुस्तक वासिन्यै स्वाहा धोमां सदावतु ।
ओंग्रन्थबीजरूपायै स्वाहामां सर्वतोऽवतु ॥ २५ ॥
इतिते कथितं विप्र सर्व मन्त्रोघ विग्रहम् ।
इदं विश्व जयं नामःकवचं ब्रह्म रूपिणम् ॥ २६ ॥
पुराश्रुतं धर्म वक्त्रात् पर्वते गन्धमादने ।
तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥२७॥
गुरु मभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालङ्कारचन्दनैः ।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ कवचं धारयेत्सुधीः ॥ २८ ॥

पंचलक्ष जपेनैव सिद्धंतु कवचं भवेत् ।
यदिस्यातिसिद्ध कवचो वृहस्पति समोभवेत् ॥ २९ ॥
महावाग्मी कवीन्द्रश्च त्रैलोक्य विजयी भवेत् ।
शक्नोति सर्वजेतुं सकवचस्य प्रसादतः ॥ ३० ॥
इति ते काण्व शाखोक्तं कथितं कवचं मुने ।
स्त्रोत्रं पूजाविधानंच ध्यानंच वन्दनं तथा ॥ ३१ ॥

इति श्री ब्रह्मवैवर्त्तमहापुराणे प्रकृत खण्डे नारायण
नारद संवादे सरस्वती कवचं सम्पूर्णम् ॥

इसके बाद संकल्प करे हाथमें जल आदि लेकर ओँ तत्सद् श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राजया प्रवर्त्तमा नस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वतःमन्वन्तरे अष्टा विंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्विपे भरत खण्डे अर्या-वर्त्तैक देशान्तर्गते (अमुक) देशे पुण्य (अमुक) क्षेत्रे (अमुक) ग्रामे बौद्धावतारे विक्तमसं वत्सरे (अमुक) संख्यके शालिवाहन शाके (अमुक) संख्यके (अमुक) नाम्नि सम्वतसरे (अमुक) अयने अमुक ऋतौ (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) नक्षत्रे (अमुक) गोत्रोत्पन्नः (अमुक) नामाहं मम कायिक वाचिक मानसिक ज्ञाता ज्ञात सकलदोष परिहारार्थ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं (अमुक) काले अमुक सम्मुखे (अमुक) कर्म करिष्ये यह पढ़कर जल छोड़ दें दोसरेके लिये करे तो (अमुक) यजमानस्य (अमुक) गोत्रस्य, (अन्तमें करिष्येके जगह करिष्यामि कहें ॥

(सन्ध्या विधि)

ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्योंको सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये संन्ध्या नहीं करनेसे शुभ कर्मों का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता।

सन्ध्या हीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु।
यदन्यत्कुरुते कर्म न तस्य फल भागभवेत् ॥ १ ॥

ब्राह्मण क्षत्रीय वैश्य यदि सन्ध्या नहीं करे तो वे अपवित्र है और उन्हें किसी पुण्य करनेपर भी फल नहीं होता। जलमें सूखा वस्त्र और स्थलमें गीला वस्त्र धारण कर संन्ध्या तर्पण न करें। प्रातःकाल तारोंके रहते हुए मध्यान्हमें सूर्य आकाशके मध्यमें और सायंकालमें सूर्य अस्तसे पहले ही संन्ध्या करनी चाहिये। दाहिने हाथमें जल आदि लेकर संकल्प पहलेके अनुसार कर अन्तमें (प्रातः सन्ध्योपासन कर्म करिष्ये) कहकर जलादि छोड़े। यदि संयोगवश उपरोक्त समयमें सन्ध्या न कर सकें तो किसी समयमें भी करनी चाहिये। तीनोंकाल सन्ध्या करें तो उत्तम नहीं तो प्रातः काल और सायंकाल करनी चाहिये यदि दोनों समय सन्ध्या न कर सकें तो प्रातःकाल अवश्य ही करनी चाहिये।

अघमर्षण सूक्तस्या घमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाव वृत्तो देवता आचमने विनियोगः। ओँ ऋतञ्च सत्यञ्चा भीद्धात्तपसोऽध्य जायत ततो राज्य जायत ततः समुद्रो अर्णवः समुद्रा दर्णवा दधि संवत्सरो अजायत अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्यमिषतोवशी सूर्या चन्द्रम सौधाता यथा पूर्व मकल्पयत् दिवञ्च पृथिवीं चान्त रिक्ष मथोस्वः ॥

इस मन्त्रको पढ़कर एक बार आचमन करें। तब दाहिने हाथ में जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रसे दाहिनी तरफसे अपने चारों ओर छोड़े—

ओँ आपो मा मभिरक्षन्तु ॥

फिर नीचे विनियोग को पढ़े।

ओँ कारस्य ब्रह्म ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्व कर्मारम्भे वियियोगः ॥ ओँ सप्त व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिगायत्र्युष्णि मनष्टुपबृहती पंक्ति त्रिष्टुब जग- त्यश्छन्दां स्यग्नि वायु सूर्य बृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वे देवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चिते प्रणायामे विनियोगः ॥ ओँ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताऽग्नि- र्मुख मुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥ ओँ शिरसः प्रजा- पतिर्ऋषि र्गायत्री छन्दो ब्रह्माऽग्नि वायु सूर्या देवता प्रणा- यामे विनियोगः ॥

इसके पश्चात् आंखें बन्द करके नीचे लिखे मन्त्रसे प्राणायाम करे। इसके विधि इस प्रकार है। पहले दाहिने हाथके अंगुठेसे नासिका का दायां छिद्र बन्द करके बायें छिद्रसे वायुको अन्दर खींचे साथ ही नाभि देशमें नील कमल दलके समान श्याम- वर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णुका ध्यान करते हुए प्रणायाम मन्त्रका तीन बार पाठ कर जाय। यदि तीन बार मन्त्र पाठ न हो सके तो एक ही बार पाठ करें और अधिक के लिये अभ्यास बढ़ावें) इसको पूरक कहते हैं। पूरकके पश्चात् अनामिका और कनिष्ठिका

अंगुलियोंसे नासिकाके बायें छिद्रको भी बन्द करके तब तक श्वासको रोके रहे जबतक कि प्राणायाम तीन बार या शक्तिके अनुसार एक बार पाठ न हो जाय, इस समय हृदयके बीच कमल के आसन पर विराजमान अरुण गौर मिश्रित वर्णवाले चतुर्मुख ब्रह्माजीका ध्यान करे। यह कुम्भक क्रिया है। इसके बाद अंगूठा हटाकर नासिका के दाहिने छिद्रसे वायुको धीरे धीरे तब तक बाहर निकाले जबतक प्राणायाम मन्त्रका तीन बार या एक बार पाठ न हो जाय। इस समय शुद्ध स्फटिक समान श्वेत वर्णवाले त्रिनेत्रधारी भगवान् शङ्करका ललाटमें ध्यान करे यह रेचक क्रिया हैं। यह सब मिलकर एक प्राणायाम कहलाता है। प्राणायामका मन्त्र यह है।

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओं आपो ज्योतो रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

फिर नीचे लिखे मंत्र एक बार पढ़कर एक बार आचमन करे यह आचमन मंत्र प्रातःकाल संध्याका है।

सूर्यश्च मेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपा मुपस्पर्शने विनियोगः ओं सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्या मुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चदुरितं मयि इद महं मामृतयो नौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

मध्याह्न और सायंकालके, केवल आचमन मन्त्र। मध्याह्नका मन्त्र।

आपः पुनन्त्विति नारायण ऋषिरनुष्टुम् छन्द आपः पृथिवी ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मच देवतां आपा मुपस्पर्श नेविनियोगः।

ओं आपः पुनन्तु पृथिवीपूतापुनातुमाम् पुनन्तुब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातुमाम् यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं ममसर्वं पुनन्तु मामापोऽसतांचप्रतिग्रह ॐ स्वाहा॥

सायंकालके आचमनका मंत्र इस प्रकार है।

अग्निश्च मेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्नि देवता सायमाचमने विनियोगः।

ओं अग्निश्च मामन्युश्च मन्यु पतयश्च मन्यु कृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्ताम् यदह्ना पापमकार्षं मनसावाचा हस्ताभ्यां पदभ्या मुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतुयत्किञ्चदुरितंमयि इदमहं माममृतयो नौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

फिर नीचे लिखे वाक्यसे विनियोग पढ़कर मार्जन करे।

आपो हिष्ठेति त्र्यचस्य सिन्धुद्वीप ऋषि र्गायत्री। छन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः॥

॥ मार्जन मन्त्र यह हैं॥

ओँ आपो हिष्ठा मयोभुवः ओँ तान ऊर्जेदधातन। ओँ महे रणाय चक्षसे। ओँ योव शिवतमो रसः।

ओँ तस्य माजयते हनः ओँ उशतीरिव मातरः। ओँ तस्मा अरंगमाभवः।

ई मन्त्र पढ़कर शिरपर जल सींचे एकेक मन्त्रसे एकेक बार फिर नीचे मन्त्रसे पृथ्वीपर जल डाले।

ओँ यस्य क्षयाय जिन्वथ।

फिर नीचे मन्त्रसे शिरपर जल सींचे।

ओँ आपो जनयथाचनः।

इसके बाद नीचे लिखे विनियोगको पढ़े।

द्रुपदा दिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टच्छन्द:।
आपो देवता सौत्रामण्य वभृ थे विनियोगः॥

नीचे लिखे मंत्रसे तीन बार या एक बार मस्तकपर जल छोड़े—

ओँ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातोमला।
दिव पूतं पवित्रेणवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥

इस मन्त्रको पढ़कर तीन बार या एक बार मस्तकपर जल छोड़े।

फिर दाहिने हाथमें जल लेकर नासिकाके समीप करके नीचे लिखे मन्त्रसे तीन या एक बार पढ़ते हुए मनही मन यह भावना करे कि यह जल नासिकाके दायें छिद्रसे भीतर घुसकर अन्त:करण के पापों को बायें छिद्रसे निकाल रहा है फिर उस जलकी ओर दृष्टि न डालकर अपनी बायें ओर फेंक दे।

अघमर्षण ऋषिरनुष्ट च्छन्हो भाववृतो देवता अश्वमेधावमृथे विनियोगः। ऋतञ्च सत्यञ्चा भीद्धात्तपसोऽध्य-

जायत। ततोरात्र्य जायत ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रा दर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य सिषतो वशी। सूर्याचन्द्र मसौधाता यथापूर्व मकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरि क्ष मथो स्वः॥

इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रसे एक वार आचमन करें।

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टपूछन्द आपोदेवता अपा मुपस्पर्श नेविनियोग ओँ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।

इसके बाद गायत्री मंत्र पढ़कर तीन वार सूर्यको अर्घ दें। (मंत्र)

ओँ भूर्भुवः स्वः तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्। ब्रह्म स्वरूपिणे सूर्यनारायणायनमः॥

फिर खड़ा होकर प्रातःकाल और सायंकालमें अञ्जलि बांधकर तथा मध्याह्न कालमें दोनों भुजाएँ ऊपर उठाकर उपस्थान करे।

उद्वयमिति प्रस्कण्व ऋषि रनुष्टुपछन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ओँ उद्वयं तम सस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवता सूर्य मगन्म ज्योति रुत्तमम्॥

उदुत्य मिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्द सूर्यो देवता सूयोपस्थाने विनियोगः।

ओँ उदुत्यं जात वेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।

चित्र मिति कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ओँ चित्रं देवाना मुद गादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण-स्याग्नेः आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्ष ॐ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। तच्चक्षुरितिदध्यङ्गा थर्वर्ण ऋषि रक्ष-रातीत पुर उष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनि-योगः॥

ओँ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छु क्र मुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जी वेमशरदः शत ॐ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शत मदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्चशरदः शतात्॥

फिर बैठकर षड़ङ्गन्यास करे।

ओँ हृदयाय नमः। ओँ भूः शिरसे स्वाहा। ओँ भुवः शिखायै वषट्। ओँ स्वः कवचायहुम्। ओँ भूर्भुवः नेत्रत्राय वौषट्। ओँ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्॥

इनमें से पहले वाक्यका उच्चारण कर दाहिने हाथकी पांचो अंगुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे। दूसरे वाक्यसे मस्तकका। तीसरे वाक्यसे शिखाका स्पर्श करें। चतुर्थ वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ की अँगुलियोंसे बायें कन्धे का और बायें हाथकी अँगुलियोंसे दाहिने कन्धेका स्पर्श करें। पञ्चम वाक्यसे मध्यमा और तर्जनी से नेत्रोंका स्पर्श करें। छठा वाक्य पढ़कर बायें हाथको हथेली पर

मध्यमा तथा तर्जनीसे ताली बजावें । इस प्रकार तीन बार करे पश्चात् अपने चारों ओर चुटकी बजावे ।। इसके बाद विनियोग पढ़े ।

ओँ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः जपे विनियोगः । त्रिव्याहृतीनां प्रजापति ऋषिर्गायत्र्युष्णि गनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वा दित्या देवता जपे विनियोगः । गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः ।।

इसके बाद गायत्री देवीका ध्यान पढ़े ।

ओँ श्वेत वर्णा समुदिष्टा कौशेय वसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैर लङ्कारैश्च भूषिता ।।
आदित्य मण्डलस्थाच ब्रह्मलोक गताथवा ।
अक्ष सूत्र धरा देवी पद्मासन गता शुभा ।।

इसके बाद गायत्री देवीकी आवाहन करे ।

तेजो सीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्री छन्दो गायत्र्या वाहने विनियोगः ।

ओँ तेजोसि शुक्रमस्य मृत मसि धामना मासि प्रियं देवानामना धृष्टं देव यजन मसि ।

फिर उपस्थानका मन्त्र पढ़े ।

तुरीयस्य विमल ऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ।

ओँ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्य पदसि नहिं पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परो रजसेऽसावदो मा प्रापत् ।

ओँ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी ।
गायत्री छन्दसां मातर्जपेमे सन्निधी भव ॥

इसके बाद गायत्री शापोद्धार का मन्त्र पढ़े ।

ब्रह्म शाप विमोचन मन्त्र

अस्य श्री ब्रह्म शाप विमोचन मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः भुक्ति मुक्ति प्रदा ब्रह्म शाप विमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्म शाप विमोचने विनियोगः ।

ओं गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्म विदो विदुः
तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः ।

ओं वेदान्त नाथाय विद्महे हिरण्य गर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् । ओं देवी गायत्री त्वं ब्रह्म शापाद्वि मुक्ताभव ॥

वसिष्ट शाप विमोचन का मन्त्र

अस्य श्री वसिष्ठ शाप विमोचन मन्त्रस्य निग्रहानुग्रह कर्त्ता वसिष्ठ ऋषिः वसिष्ठानुग्रहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठ शाप विमोचनार्थे जये विनियोगः ।

ओं सोहमर्क मयं ज्योति रात्म ज्योति रहं शिवः ।
आत्म ज्योति रहं शुक्रः सर्व ज्योति रसोऽस्म्यहम् ।
(यह पढ़कर योनि मुद्रा दिखाके तीन बार गायत्री जपे) फिर
ओं देवी गायत्री त्वं वसिष्ठ शापाद्वि मुक्ताभव ॥

विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्र

अस्य श्री विश्वामित्र शाप विमोचन मन्त्रस्य नूतन सृष्टिकर्त्ता विश्वामित्र ऋषिः विश्वामित्रानु गृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्र शाप विमोचनार्थे विनियोगः ।

ओं गायत्रीं भजाम्यग्नि मुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्व सृष्टिं तां कल्याणी मिष्टकरीं प्रपद्ये । यन्मुखान्निः सृतोऽखिल वेद गर्भः ।

शाप युक्ता तु गायत्री सफलानकदाचन । शापा दुत्तारिता सातु मुक्ति फल प्रदा । ओं गायत्री त्वं विश्वामित्र शापाद्वि मुक्ताभव । फिर प्रार्थना

ओं अहो देवि महादेवि सन्ध्ये विद्ये सरस्वति ।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ॥

ब्रह्म शापाद्वि मुक्ताभव । वशिष्ठ शापाद्वि मुक्ताभव विश्वामित्र शापाद्वि मुक्ताभव ।

इसके बाद गायत्री की ध्यान करे—

प्रातः काल ब्रह्मरूपा गायत्री ध्यान

ओं बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम् । रक्ताम्बर द्वयोपेता मक्ष सूत्र करां तथा । कमण्डलु धरां देवीं हंस वाहन संस्थिताम ।

ब्रह्माणीं ब्रह्म दैवत्यां ब्रह्मलोक निवासिनीम् । मन्त्रेणावाहयेद्देवी मायान्तीं सूर्य मण्डलात् ॥

इसके बाद गायत्री का हृदय पढ़े ।

ओं अस्य श्री गायत्री हृदयस्य नारायण ऋषि र्गायत्री च्छन्दः परमेश्वरी गायत्री देवता गायत्री जपे विनियोगः ॥ अथार्थन्यासः ॥ दयौर्मूर्ध्नि दैवतम् ॥ दन्त-पंक्तावश्विनौ ॥ उभे सन्ध्ये चोष्ठौ ॥ मुखमग्निः ॥ जिह्वा सरस्वती ॥ ग्रीवायां तु बृहस्पतिः ॥ स्तनयो र्व सवोऽष्ठौ ॥ बाह्वोर्मरुतः ॥ हृदयेपर्जन्यः ॥ आकाशमुदरम् ॥ नाभावंत-रिक्षम् ॥ कटयोरिन्द्राग्नी ॥ जघनेविज्ञानघनः प्रजापतिः ॥ कैलाशमलये उरः ॥ विश्वेदेवाजान्वोः ॥ जंघायांकौशिकः ॥ गुह्यमयने ॥ उरूपितरः ॥ पादौपृथ्वी ॥ वनस्पतयोऽङ्गु-लीषु ॥ ऋषयोरोमाणि ॥ नखानि मुहूर्तानि ॥ अस्थि षु ग्रहाः ॥ असृङ्मांसं ऋतवः ॥ संवत्सरा वैनिमिषम् ॥ अहोरात्रावादित्य चन्द्रमा ॥ प्रवरां दिव्यां गायत्रीम् ॥ सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये ॥ ओं तत्सवितुर्वरेण्यायनमः ॥

ओं तत्पूर्वाजयायनमः ॥ तत्प्रातरादित्याय नमः ॥ तत्प्रातरादित्य प्रतिष्ठायै नमः ॥ प्रातरधीयानो रात्रि कृतं पापं नाशयति ॥ सायं प्रातरधीयानो अपापो भवति ॥ सर्वं तीर्थेषु स्नातो भवति ॥

अवाच्य वचनात्पूतो भवति । अभक्ष्य भक्षणात्पूतो भवति । अभोज्य भोजनात्पूतो भवति । अचोष्य चोषणात्पूतो भवति । असाध्य साधनात्पूतो भवति । दुष्प्रतिग्रह शत सहस्रात्पूतो भवति ॥
सर्व प्रति ग्रहात्पूतो भवति । पंक्ति दूषणात्पूतो भवति । अनृत वचनात्पूतो भवतिं । अथाब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति । अनेन हृदये नाधीतेन ऋतु सहस्रेणेष्टं भवति । षष्ठि शत सहस्र गायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयेत् तस्य सिद्धिर्भवति । य इदं नित्य मधीया नो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्व पापैः प्रमुच्यते, इति ॥ ब्रह्मलोके महीयते । इत्याह भगवान् नारायणः ॥

इसके बाद मुद्रा करें ।

चौबीस २४ मुद्रायें—

सम्मुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा द्विः मुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पंच मुखं तथा । षण्मुखाऽधो मुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा । शकटं यम पाशश्च ग्रथितं चोन्मु-

खोन्मुखम् प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा। एता मुद्राश्चतुर्विंश जपादौ परिकीर्त्तिताः।

मुद्राय करने की विधि—

समुखम् १—दोनों अंगुलियोंको मोड़ कर हाथ परस्पर मिलावे। सम्पुटम् २—दोनों हाथोंको फुला कर मिलावे। विततम् ३—दोनों हाथोंकी हथेली परस्पर सामने करें। विस्तृतम् ४--दोनों हाथोंकी अंगुलियां खोल कर हाथोंको कुछ अधिक अलग कर। द्विमुखम् ५—दोनों हाथोंकी कनिष्ठासे कनिष्ठा तथा अनामिकासे अनामिका मिलावें। त्रिमुखम् ६—दोनों मध्यमा भी और मिलावे। चतुर्मुखम् ७—दोनों तर्जनी भी और मिलावे। पंचमुखम् ८—दोनों अंगूठा भी और मिलावे। षण्मुखम् ९—हाथ वैसे ही रखते हुये दोनों कनिष्ठा खोले। अधोमुखम् १०—उलटे हाथोंकी अंगुलियोंको मोड़ कर तथा मिला कर नीचेकी ओर करे। व्यापकाञ्जलिकम् ११—वैसे ही मिले हुए हाथोंको शरीरकी तरफसे घुमा कर सीधा करें। शकटम् १२—दोनों हाथोंको उलटा कर अंगुठेसे अंगुठा मिला कर तर्जनियोंको सीधी रखते हुए मुट्ठी बांधे। यमपाशम् १३--तर्जनीसे तर्जनी बाँध कर दोनों मुट्ठी बांधे। ग्रन्थिनम् १४—दोनों हाथोंकी अंगुलियोंको परस्पर गूंथे। उन्मुखोन्मुखम् १५—हाथोंकी पाँचों अंगुलियांको मिला कर पहिले बाएँ पर दाहिना फिर दाहिनेपर बायां हाथ रखे। प्रलम्बम् १६—अंगुलियोंको कुछ मोड़ कर दोनों हाथोंको उलटा कर नीचेकी ओर करें। मुष्टिकम् १७—

दोनों अंगूठे ऊपर रखते हुए दोनों मुट्ठी बांध कर मिलावे। मत्स्यः १८—दाहिने हाथकी पीठपर बायां हाथ उलटा रख कर दोनों अंगूठे हिलावे। कूर्मः १६—सीधे बायें हाथकी मध्यमा अनामिका तथा कनिष्ठा मोड़ कर उलटे दाहिने हाथकी मध्यमा अनामिकाको उन तीनों अंगुलियोंके नीचे देकर बांयी तर्जनीपर दाहिनी कनिष्ठा और बायें अंगूठेपर दाहिनी तर्जनी रखे। वराहकम् २०—दाहिनी तर्जनीको बायें अंगूठेसे मिला कर दोनों हाथोंकी अंगुलियोंको परस्पर बांधे। सिंहाक्रान्तम् २१—दोनों हाथों को कानोंके समीप करे। महाक्रान्तम् २२—दोनों हाथोंकी अंगुलियोंको कानोंके समीप करे। मुद्गरम् २३—मुट्ठी बांध कर दाहिनी कुहनी बायें हथेली पर रखे। पल्लवम् २४—दाहिने हाथकी अंगुलीको मुखके सम्मुख हिलावे। इसके बाद गायत्री मन्त्रका जप करें।

गायत्री-मन्त्र

नीचे लिखे गायत्री मन्त्रका करमाला पर भी अवश्य जप करना चाहिये।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॐ ॥

गायत्री मन्त्रका २४ लक्ष जप करनेसे एक पुरश्चरण होता है। इसलिये स्वयं करे अथवा ब्राह्मणसे करवाये।

सुरभिर्ज्ञान वैराज्ञे योनिः शंखोऽथ पङ्कजम् लिङ्ग निर्वाण मुद्राष्टौ जपान्ते च प्रदर्शयेत् ॥

जपके बादकी ८ आठ मुद्रायें करनेकी विधि—

सुरभिः १—दोनों हाथोंकी अंगुलियां गूँथ कर बायें हाथकी

तर्जनीसे दाहिने हाथकी मध्यमा, मध्यमासे तर्जनी, अनामिकासे कनिष्ठा और कनिष्ठासे अनामिका अंगुली मिलावे। ज्ञानम् २—दाहिने हाथकी तर्जनीसे अंगूठा मिला कर हृदयमें तथा इसी प्रकार बायां हाथ बायें गोड़पर सीधा रखे। वैराग्यम् ३—दोनों तर्जनियोंसे अंगूठा मिला कर गोड़ोंपर सीधा रखे। योनिः ४—दोनों मध्यमाओंके नीचेसे बायीं तर्जनीके ऊपर दाहिनी अनामिका और दाहिनी तर्जनीपर बायीं अनामिका रख कर दोनों तर्जनियों से बांध दोनों मध्यमाओंको सीधी करे। पश्चात् दोनों अंगूठे मध्यमाओंपर रखे। शंखः ५—बायें अंगूठेको दाहिनी मुट्ठीमें बांध दाहिने अंगूठेसे बायीं अंगुलियोंको मिलावें। पङ्कजम् ६—दोनों हाथोंके अंगूठे तथा अंगुलियोंको मिला कर ऊपरकी ओर करें। लिङ्गम् ७—दाहिने अंगूठेको सीधा रखते हुए दोनों हाथोंकी अंगुलियोंको गूँथ कर बायां अंगूठा दाहिने अंगूठेकी जड़के ऊपर रखे। निर्वाणम् ८—उलटे बायें हाथपर दाहिना हाथ सीधा रख अंगुलियोंको परस्पर गूँथ दोनों हाथ अपना-अपना तरफसे घुमा कर दोनों तर्जनियोंको सीधी कानके समीप करें।

इसके बाद गायत्री कवच पढ़े।

गायत्री कवच।

ॐ अस्य श्री गायत्री कवचस्य ब्रह्मऋषिर्गायत्रीच्छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः वीजम् भुवः शक्तिः स्वः कीलकम् गायत्री प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

अथ ध्यानम्

पञ्च वक्त्रां दशभुजां सुर्यकोटि समप्रभाम्। सावित्री

ब्रह्म वरदाम् चन्द्रकोटि सुशीतलाम् ॥ त्रिनेत्रां सितवक्त्रांच मुक्ताहार विराजिताम् । वराभयांकुशकशा हेम पात्राक्ष मालिकाः ॥ शङ्खचक्राब्ज युगलं कराभ्यां दधतीं पराम् । सितपंकज संस्थांच हंसारूढ़ाँ सुखस्मिताम् ॥ ध्यात्वेवं मान साम्भोजें गायत्री कवचं जपेत् ॥

॥ ॐ ब्रह्मोवाच ॥

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्री कवचं शृणु । यस्यविज्ञान मात्रेण त्रैलोक्यं वशयोत्क्षणात् ॥ १ ॥ सावित्रीमे शिरः पातु शिखाया ममृतेश्वरी ललाटे ब्रह्म दैवत्या भ्रुवोमेपातु वैष्णवी ॥ २ ॥ कर्णौमे पातु रुद्राणी सूर्यासावित्री त्रिकाऽम्बिके । गायत्रीवदनं पातु शारदा दशनच्छदो ॥३॥

द्विजान् यज्ञप्रियापातु रसनायां सरस्वती । सांख्यांयनी नासिकामे कपोलौचन्द्र होसिनी ॥४॥ चिबुकं वेद गर्भाच कण्ठं पात्वघनासिनी । स्तनौमे पातु इन्द्राणी हृदरं ब्रह्म वादिनी ॥५॥ उदरं विश्वभोक्तीच नाभौ पातु सुरप्रिया, जघनं नारसिंहीच पृष्ठं ब्रह्माण्ड धारिणी ॥६॥ पार्श्वौं मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गागोष्विकाऽवतु । ऊर्वोरोंकाररुपाच जान्वोः सन्ध्यात्मिकाऽवतु ॥७॥ जंघयोः पातु अक्षोम्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका । सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रापादाङ्गुलीषुच ॥८॥ सर्वाङ्गम वेद जननीं पातु मे सर्वदाऽनघा । इत्ये-

तत्कवचंब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वं पावनम् ॥९॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामान वाप्नुयात् सर्व शास्त्रार्थ तत्वज्ञ सभवेद्वेदेवित्तमः ॥१०॥ सर्वयज्ञ फलं प्राप्य ब्रह्मान्ते सम वाप्नुयात्। प्राप्नोति जप मात्रेण पुरुषार्थांश्चतु र्विधान् ॥११॥

श्री विश्वामित्र संहितोक्तं कवचं सम्पूर्णम् ॥

इसके बाद प्रातः सन्ध्यामें गायत्री तर्पण करें।

गायत्री तर्पण।

ओं गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सवितुर्देवता गायत्री छन्दः गायत्री तर्पणे विनियोगः ॥ ओं भूः ऋग्वेद पुरुषं तर्पयामि। ओं भुवः यजुर्वेद पुरुषं तर्पयामि। ओं स्वः सामवेद पुरुषं त०। ओं महः अथर्वेद पुरुषं त०। ओं जनः इतिहास पुराण पुरुषं त०। ओं तपः सर्वागम पुरुषं तर्पयामि। ओं सत्यम् सत्यलोक पुरुषं तर्पयामि। ओं भू० भूर्लोक पुरुषं त०। ओं भुवः भुवर्लोक पुरुषं त०। ओं स्वः स्वर्लोक पुरुषं त०। ओं भूः एक पदां गायत्रीं त०। ओं भुवः द्विपदां गायत्रीं त०। ओं स्वः त्रिपदां गायत्रीं त०। ओं भूर्भुवः स्वः चतुष्पतां गायत्रीं तपयामि। ओं उषसीं त०। ओं गायत्रीं तर्पयामि। ओं सावित्रीं त०। ओं सरस्वती त०। ओं वेद मातरम् त०। ओं पृथ्वीं त०। ओं अजां त०।

ओं कौशिकीं त० । ओं सांकृतीं त० । ओं सर्व-जितां तर्पयामि । ओं तत्सत् ब्रह्मार्पणम स्तु ॥

इसके बाद प्रदक्षिणा करे ।

प्रदक्षिणा मन्त्र ।

यानि कानिच पापानि जन्मान्तर कृतानि च तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ।

तब क्षमा प्रार्थना करें ।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्रा हीनंच यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरी ॥

तब विसर्जन करें ।

विनियोग ।

ओँ उत्तरे शिखरे इत्यस्य कश्यप ऋषिः सन्ध्या देवता अनुष्टुप्छन्दः सन्ध्या विसर्जने विनियोगः ।

विसर्जन ।

ओँ उत्तरे शिखरे देवि भूम्याँ पर्वत मूर्द्धनि ।
गायत्रीच्छन्दसाँ मातर्गच्छदेवि यथा सुखम् ॥

सन्ध्या समाप्त होनेपर पात्रोंमें बचा हुआ जल अपवित्र हो जाता है, इसलिये उसे फेंक देना चाहिये । जपादि समाप्त होनेके बाद आसनके नीचे जल छोड़ कर मस्तकमें लगावे ।

मध्याह्न सन्ध्या प्रातः सन्ध्याके अनुसार करे, किन्तु प्रणायाम के बाद ॐ सूर्यश्चमेति । के विनियोग तथा आचमनके स्थानपर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े ।

विनियोग।

आपः पुनन्त्वितिविष्णु ऋषि, रनुष्टप्छन्द आपो देवता आपा मुपस्पर्शने विनियोगः आचमन। ओँ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनन्तुब्रह्मण स्पति ब्रह्मपूता पुनातु मां यदुच्छिष्ट मभोज्यञ्चयद्वा दुश्चरितं मम सर्व पुनन्तु मामापोऽसताञ्च प्रतिग्रह ॐ स्वाहा ॥

और सूर्योपस्थान दोनों हाथ ऊपर उठा कर करें। विष्णुरूपा गायत्रीका ध्यान करें।

मध्याह्ने विष्णु रूपांच तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्य मण्डल संस्थिताम् ॥

सायं सन्ध्या प्रातः सन्ध्याके अनुसार करें। सूर्य रहते पश्चिमाभिमुख करें। प्रणयामके बाद 'ॐ सूर्यश्चमेति' इसके स्थानपर नीचे लिखे विनियोग तथा मन्त्र पढ़े।

अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः प्रकृतिच्छन्दोऽग्निर्देवता अपा मुपस्पर्शन विनियोगः। इत्यादि लिख चुका हूँ।

इसके बाद पञ्च महायज्ञ करना आवश्यक है गृहस्थोंके लिये।

ब्रह्मयज्ञ १—वेद, वेदान्त तथा पुराणादिका पढ़ना और पढ़ाना। पितृयज्ञ २—श्राद्ध तथा तर्पण। देव यज्ञ ३—देवताओंका पूजन और हवन। भूत यज्ञ ४—बलि वैश्वदेव। मनुष यज्ञ ५—अतिथि सत्कार।

इसके बाद तर्पण करे।

देव तर्पण ।

पूर्वाभिमुख बैठ कर दूसरा वस्त्र ले आचमन कर दो कुशायों को पवित्री दाहिने तथा तीनकी बायें हाथकी अनामिकाकी जड़में धारण करें, तब जलादि लेकर संकल्प करें ।

ओँ अद्येत्यादि श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं देव ऋषि पितृ तर्पण महं करिस्ये ।

ये कह कर जलादि छोड़े ।

आवाहन (तीर्थों में नहीं करे) ।

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः ।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदर वर्तिनः ॥

देव तर्पण—देव तीर्थसे करें अर्थात् अंगुलियोंके अग्रभागसे चावल सहित प्रत्येकको एक-एक अञ्जलि देवें ।

ओँ ब्रह्मा तृप्यताम् । ओँ विष्णुस्तृप्यताम्
ओँ रुद्रस्तृप्यताम् । ओँ प्रजापति स्तृप्यताम् ।
ओँ देवास्तृप्यंताम् । ओँ छन्दां स्तृप्यंताम्
ओँ वेदांस्तृप्यंताम् । ओँ ऋषयस्तृप्यन्ताम् ।
ओँ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् । ओँ संवतसरः सावयवास्तृप्यन्ताम् । ओँ देव्यस्तृप्यन्ताम् ।
ओँ अप्सरसस्तृप्यम्ताम् । ओँ देवतानुगास्तृप्यन्ताम् ।
ओँ नागास्तृप्यंताम् । ओँ सागरास्तृप्यंताम् ।
ओँ पर्वतास्तृप्यन्ताम् । ओँ सारिस्तृप्यन्ताम् ।

ओँ मनुष्यास्तृन्ताम् । ओँ यक्षास्तृप्यन्ताम् ।
ओँ रक्षांसितृप्यन्ताम् ओँ पिशाचास्तृप्यन्ताम् ।
ओँ सुपर्णास्तृप्यताम् । ओँ भूतानि तृप्यंताम् ।
ओँ पशवस्तृप्यन्ताम् ओँ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् ।
ओँ ओषधयस्तृप्यन्ताम् । ओँ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यन्ताम्

इसके बाद इसी प्रकार ऋषि तर्पण करे ।

ओँ मारीचिस्तृप्यताम् । ओँ अत्रिस्तृप्यताम् ओँ अङ्गिरास्तृप्यन्ताम् । ओँ पुलस्त्य स्तृप्यताम् । ओँ पुलहस्तृप्यताम् । ओँ क्रतुष्तृप्यताम् । ओँ प्रचेतास्तृप्यंताम् । ओँ वसिष्ठ स्तृप्यताम् । ओँ भृगुस्तृप्यताम् । ओँ नारदस्तृप्यताम् ॥

इसके बाद उत्तराभिमुख हो जनेऊ तथा गमछेको कण्ठी कर कनिष्ठाका मूल तथा कुशाओंके मध्यसे जव सहित प्रत्येकको दो-दो अञ्जली देवें ।

ओँ सनकस्तृप्यताम् । ओँ सनन्दनस्तृप्यताम् । ओँ सनातनस्तृप्यताम् ओँ कपिलस्तृप्यताम् । ओँ आसुरिस्तृप्यताम् । ओँ वोढ़स्तृप्यताम् । ओँ पञ्च शिषस्तृप्यताम् ।

इसके बाद पितृ तर्पण करे । दक्षिणाभिमुख हो बायां घुटना मोड़ जनेऊ तथा अंगोछेको दाहिने कांधेपर कर (पितृ तीर्थ) तर्जनीके मूल तथा कुशाके अग्रभागसे तिल सहित प्रत्येक नामसे तीन-तीत अञ्जलि देवे ।

ओँ कव्यवाट् तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३॥
ओँ नलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा ३॥
ओँ सोमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३॥
ओँ यमस्तृप्यता मिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३॥
ओँ अर्यमा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३॥
ओँ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यःस्वधा३॥
ओँ सोमपास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३॥
ओँ बर्हिषदस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३।

इसी प्रकार १४ यमोंको भी तीन-तीन अञ्जलि देवें।

ओँ यमाय नमः ३। ओँ धर्मराजाय नमः ३। ओँ मृत्यवे नमः ३। ओँ अन्तकाय नमः ३। ओँ वैवस्वताय नमः ३। ओँ कालाय नमः ३॥ ओँ सर्वभूतक्षयाय नमः ३। ओँ औदुम्बराय नमः ३। ओँ दध्नाय नमः ३ ओँ नीलायनमः३। ओँ परमेष्ठिने नमः ३। ओँ वृकोदराय नमः ३। ओँ चित्राय नमः ३। ओँ चित्रगुप्ताय नमः ३। पितृआवाहन, ओँ आगच्छन्तु मेपितर इमं ग्रह्णन्त्वपोऽञ्जलिम् ॥

ए मन्त्र बोल कर पितरोंके लिये १—अञ्जलि देवें। इसके बाद नीचे लिखेके अनुसार तीन-तीन अञ्जलि देवें।

ओं अद्य, अमुक, गोत्रः अस्मत्पिता अमुक शर्मा

(वर्मा) वैश्यः। वसु स्वरूपः, तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मैस्वधा: ३।

ओं अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्पितामहः अमुक नामा रुद्रस्वरूप स्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।

ओं अद्य अमुक गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुक नामा आदित्य स्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।

नीचे लिखा प्रत्येक बार बोल कर एक-एक अञ्जलि देवें।

ओं तृप्यध्वम्। ओं तृप्यध्वम्। ओं तृप्यध्वम्।

इसके बाद माता, दादी और परदादीको तीन-तीन अञ्जलि देवें।

ओं अमुक, गोत्रा, अस्मत् माता अमुकी, नाम्नी देवी गायत्री स्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

ओं अमुक गोत्रा अस्मत् पितामही अमुकी नाम्नी देवी सावित्री स्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

ओं अमुक गोत्रा अस्मत् प्रपितामही अमुकी नाम्नी देवी सरस्वती स्वरुपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

नीचे लिखा मन्त्र प्रत्येक बार बोल कर नानाको तीन अञ्जलि देवें!

ओं अद्य अमुक गोत्रः (अस्मत्) मातामहः अमुक नामा अग्नि स्वरूपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।

इसके बाद परनानाको तीन अञ्जलि देवे।

ओं अद्य अमुक गोत्रः अस्मत् प्रमातामहः अमुक नामा वरुण स्वरुपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।

इसके बाद वृद्ध परनानाको तीन अंजली देवे।

ओं अद्य अमुक गोत्रः अस्मत् वृद्ध प्रमातामहः अमुक नामा प्रजापति स्वरुपः तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३।

इसके बाद नानी, परनानी वृद्ध परनानीको तीन-तीन अंजलि देवे।

ओं अद्य अमुक गोत्रा (अस्मत्) मातामही अमुकी नाम्नी देवी गंगारुपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३।

ओं अद्य अमुक गोत्रा अस्मत् प्रमातामही अमुकी नाम्नी देवी यमुनारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा।

ओं अद्य अमुक गोत्रा (अस्मत्) वृद्ध प्रमातामही अमुकी नाम्नी देवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्य स्वधा ३॥

इसके बाद मड़े हुए गुरु, दादा; वृद्ध दादा, पिताका भाई,

अपना भाई, चचेरा भाई, लड़का, श्वसुर, मामा, और फूफा आदि तथा उन लोगोंकी स्त्री अपनी पत्नी, मौसी, बहिन। लड़की आदि को नाम गोत्र उच्चारण कर (बोलकर) प्रत्येकको तीन-तीन अंजलि देवे। इसके बाद नीचे मंत्रसे जलधारा छोड़े।

ओं देवाऽसुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कुष्माण्ठास्तरवः खगाः॥
जलेचरा भू निलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः।
तृप्ति मेतेप्रयान्त्वाशुमद्दत्तेनाऽम्बुनाखिलाः।
ओं नरकेषु समस्तेषु यातनासुच ये स्थिताः।
तेषामाप्यायनार्थै तद्दोयते सलिलं मया॥
ओं ये वान्धवा, अवान्धवाश्चयेऽन्य जन्मनिवान्धवाः।
तेतृप्तु मखिलायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवांछति॥
येमे कुले लुप्त पिण्डाः पुत्रदार विवर्जिताः।
तेषांहि दत्त मक्षय्य मिद मस्तु तिलोदकम्॥
आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं देवर्षि पितृमानवाः।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृ माता महादयः॥
ओँ अतीत कुल कोटीनां सप्तद्वीप निवासिनाम्।
आब्रह्म भुव नाल्लोका दिद मस्तु तिलोदकम्॥

इसके बाद अंगोछे को चार तह कर उसमें तिल यथा जल छोड़कर नीचे लिखे मन्त्रसे जलके बाहर बायें ओर पृथ्वी पर निचोड़े।

ओँ येके चास्मत् कुले जाता अपुत्राय गोत्रिणोमृताः

ते तृप्यन्तु मयादत्तं वस्त्र निष्पीड़नोदकम् ।

इसके बाद पवित्री ही पहिने हुए पूरब मुख हो सव्य होकर नीचे लिखे मन्त्रसे भीष्म पितामहको एक अंजलि देवे ।

ओँ भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।

अद्भि रद्भि रवाप्नो तु पुत्र पौत्रोचितां क्रियाम् ।।

नीचे लिखे प्रत्येक नामसे एक एक अञ्जलि देवे ।

ओँ ब्राह्मणेनमः । ओँ विष्णवे नमः । ओँ रुद्राय नमः । ओँ सूर्यायनमः । ओँ दिग्भ्योनमः । ओँ दिग्देवताभ्यो नमः । ओँ अग्नये नमः । ओँ पृथिव्यैनमः ओँ ओषधिभ्योनमः। ओँ वाचे नमः । ओँ वाचस्पतये नमः । ओँ मित्राय नमः । ओँ महद्भ्यो नमः । ओ अद्भ्यो नमः। ओँ अपां पतये नमः । ओँ वरुणाय नमः ।।

इसके बाद नीचे लिखे मंत्रसे लाल फुल लाल चन्दन और चावल सहित सूर्यको अर्घ दे। तीन बार ।

ओँ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुते जसे जगत् सवित्रे शुचये नमस्ते कर्म दायिने एषोऽर्घः श्री सूर्य नारायणाय नमः ।।

सात बार प्रदक्षिणा करें ।।

इसके बाद पुरुष सूक्तका पाठ करें ।

सर्वतः पाणि पादं तत् सर्वतोऽक्षि शिरोमुखम् सर्वतः श्रुतिमाँल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥३॥

कविं पुराण मनुशासितार मणोरणीयां स मनु स्मरेद्यः। सर्वस्य धातार मचिन्त्यरूप मादित्य वर्ग तमसः परस्तात् ॥४॥

ऊर्ध्व मूल मधः शाख मश्वत्थं प्राहुरव्ययम्। छन्दासि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेद वित् ॥५॥

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञान मपोहनञ्च। वेदैश्च सर्वै रहमेव वेद्यो वेदान्त कृद्वेद विदेव चाहम् ॥६॥

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजीमां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वै व मात्मानं मत्परायणः ॥७॥

इसके बाद चतुर्थ श्लोकी भागवतका पाठ करे, महात्म्य सहित।

ज्ञानं परम गुह्यं मे यद्विज्ञान समन्वितम्।
सरहस्यं तदङ्गच गृहाण गदितं मया ॥
यावानहं यथा भावो यद्रूप गुण कर्मकः।
तथैव तत्व विज्ञानमस्तुते मदनु ग्रहात् ॥
अह मेवा समे वाग्रे नान्यद्यत् सदसत् परम्।
पंचादहं यदेतच्च योवऽशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥

॥ इति महात्म्यम् ॥

ऋतेऽर्थयत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथा भासोयथातमः ॥१॥
यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
प्रविष्टान्य प्रविष्टानि तथा तेषुनतेष्वहम् ॥२॥
एतावदेव जिज्ञास्यं तत्व जिज्ञासुनाऽत्मनः ।
अन्वय व्यतिरेकाभ्यां यत्स्या त्सर्वत्र सर्वदा ॥३॥
एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना ।
भवान्कल्प विकल्पेषुन विमुह्यति कर्हिचित् ॥४॥

॥ एक श्लोकी रामायण ॥

आदौ राम तपो वनादि गमनं हत्वा मृगं काञ्चनम् ।
वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव सम्भाषणम् ॥
वाली निग्रहणं समुद्र तरणं लङ्कापुरी दाहनम् ।
पश्चाद्रावण कुम्भकरण हनन मेतद्धि रामायणम् ॥१॥

॥ गरुड़ स्तुति ॥

श्री विष्णु वाहं प्रणमामि भक्तया सर्वाशनं दुखहरं खगेशम् ।
मनोहरं वायु समान वेगं छन्दोमयं ज्ञानघनं प्रशान्तम् ॥
विष्णु पत्राय शान्ताय बल बुद्धि युतायच ।
पक्षीन्द्रायाति वेगाय गरुड़ाय नमोनमः ॥२॥

इसके बाद हनुमानजी का नीचे लिखे हुये स्तुति करके हनुमान चालीसा और सङ्कट-मोचन का पाठ करे ।

॥ श्री हनुमत्स्तुति ॥

मनोजवं मारुत तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धि मतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्रीराम दूतं शिरसा नमामि ॥

॥ हनुमान चालीसा ॥

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार ।
वर्णों रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल-बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहुं कलेश विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीश तिहुंलोक उजागर। रामदूत अतुलित बल धामा, अंजनि-पुत्र पवन सुत नामा। महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवारि सुमतिके संगी। कञ्चन वरण विराज सुवेशा। कानन कुण्डल कुंचित केशा ॥ हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजै, कांधे मूंज जनेऊ साजे ॥ शङ्कर-सुवन केशरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग वंदन। विद्या वान गुणी अति चातुर, राम काज करीबेको आतुर ॥ प्रभु चरित्र सुनीबे को रसिया। राम लषण सीता मन बसिया ॥ सूक्ष्म रूप धरि-सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लङ्क जरावा ॥ भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्रके काज संवारे ॥ लाय सजीवन लषण जिवाये। श्रीरघुवीर हरषि उर लाये ॥

रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । कहा भरतसम तुम प्रियभाई ॥ सहस वदन तुम्हरो यश गावे । असकहि श्रीपति कंठ लगावैं । सनकादिक ब्रह्मादिमुनीशा । नारद शारद सहित अहीशा ॥ यम कुबेर दिगपाल जहांते, कवि-कोविद नहिं सके कहांते ॥ तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥ तुम्हरो मंत्र विभीषण माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥ युग सहस्र योजन जो भानू । लायो ताहि मधुर फल जानू ॥ प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥ दुर्गम काज जगतके जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ राम दुवारे तुम रखवारे । हो तिन आज्ञा बिन पैठारे ॥ सब सुख लहैं तुम्हारी शरणा । तुक रक्षक काहू को डरना ॥ आपन तेज सम्हारो आपें । तीनों लोक हांकते कांपें ॥ भूत पिशाच निकट नहि आवैं । महाबीर जब नाम सुनावैं ॥ नाशै रोग हरै सब पीरा । जपत निरन्तर हनु-मत वीरा ॥ संकट ते हनुमान छुड़ावै । मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ सबपर राम राय सिरताजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥ और मनोरथ जो कोई लावे । तासु अमित जीवन फल पावे ॥ चारों युग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ साधु सन्तके तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥ अष्ट सिद्धि नव निधिके

दाता । असवर दीन्ह जानकी माता ॥ राम रसायन तुम्हरे पासा । सादर तुम रघुपतिके दासा ॥ तुम्हरे भजन राम को भावे । जन्म जन्मके दुख विसरावे ॥ अन्तकाल रघुपति पुर जावे । जहां जन्म हरि भक्त कहावे ॥ और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई संकट मिटे हरे सब पीरा । जो सुमिरे हनुमत बल वीरा ॥ जै जै जै हनुमान गुसांई । कृपा करो गुरु देवकी नांई ॥ यह शतवार पाठ कर जोई । छूटहि वन्दि महा सुख होई ॥ जो यह पढ़े हनुमान चालीसा । होय सिद्ध साखी गौरीशा॥ तुलसी दास सदा हरि चेरा । कीजै दास हृदय मह डेरा ॥

दोहा—पवन तनय संकट हरण मंगल मूरति रूप ।
राम लषण सीता सहित, हृदय बसहि सुर भूप ॥

॥ अथ श्रीसंकट मोचन हनूमाष्टक ॥

बाल समय रवि लील लियो तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो । ताहि सो त्रास भई जगको यह संकट काहु सो जात न टारो ॥ देवन जाय करी विनती तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो । को नहि जानत है जगमें कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥ १ ॥ बालिके त्रास कपीस बसे गिरि जात महा प्रभु पंथ निहारो चौक महामुनि शाप दियो तब चाहिये कौन उपाय विचारो कै द्विज रूप

लेआये महा प्रभु सो तुम तासुको संकट हारो ॥ कोनहिं जानत है जगमें कपि संकट मो० ॥ २ ॥ अंगदके संग कीस अनेक गये सिय खोज कपीस उचारो। जीवत ना बचिहौ हमसों जु बिना सुधि ले इतको पगु-धारो ॥ हेरि थके तट सिन्धु सबै तब लाय सिया सुधि प्राण उबारो। को नहि जानत है जगमें० ॥ ३ ॥ रावण त्रास दई सियको तब रक्षक ह्वै करि शोक निवारो। ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥ मांगत सिय अशोक सों आगि सुदै प्रभु मुद्रिका शोक निवारो। को नहि जानत० ॥ ४ ॥ बाण लग्यो उर लक्ष्मणके तब प्राण तजे सुत रावण मारो। लै गृह वैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोण सुवीर उपारो ॥ लाय सजीवन श्री हनुमान सुलक्ष्मणके तुम प्राण उबारो। को नहि जानत है० ॥ ५ ॥ रावण युद्ध अजान कियो तब नागकी फांस सबै सिर डारो। श्री रघुनाथ समेत सबै दल देखिकै मोह भयो अति भारो॥ आनि खगेश तबै हनुमान सुबन्धन काटि कलेस निवारो। को० ॥ ६ ॥ बन्धु समेत जबै अहिरावण ले रघुनाथ पताल सिधारो। देवहि पूजि भली विधि सो बलिदेन दोऊजन मन्त्र विचारो ॥ जाय सहाय भये तबही अहिरावण सैन्य समेत संहारो। को नहि० ॥ ७ ॥ काज किये बड़ देवनके

कई बार महा प्रभु देखि विचारो। कौन सो संकट मोर गरीबको जो तुमसों नहिं जात हैं टारो ॥ वेगि हरो हनु-मान महा प्रभु जो कछु संकट होय हमारो। को० ॥८॥

दोहा—लाल देह लाली लसे, अरुधरि लाल लंगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय जटा कपिशूर ॥

इसके बाद दुर्गा कवच, अर्गला, कील, ओ एक माला नवा-रण मन्त्रका जप करे।

कवच ॥

ओँ नमश्चण्डिकायै ।

मार्कण्डेय उवाच।

ओँ यद्गुह्यं परमं लोके सर्व रक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्य चिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १ ॥

ब्रह्मो वाच ॥

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्व भूतोप कारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥
प्रथमं शैल पुत्री च द्वितीयं ब्रह्म चारिणी।
तृतीयं चन्द्र घण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३ ॥
पञ्चमं स्कन्द मातेति षष्ठं कात्याय नीति च।
सप्तमं काल रात्रीति महा गौरीति चाष्टमम् ॥ ४ ॥
नवमं सिद्धि दात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्त्तिताः।
उक्तान्येतानि नमामि ब्रह्म णैव महात्मना ॥ ५ ॥

अग्निनादह्य मानस्तु शत्रु मध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमेचैव भयार्त्ताः शरणं गताः ॥ ६ ॥
न तेषां जायते किञ्चि दशुभंरण संकटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोक दुःख भयं नहि ॥ ७ ॥
यैस्तु भक्त्या स्मृतानूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८ ॥
प्रेत संस्थातु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्रो गज समारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९ ॥
माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखि वाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्म हस्ता हरि प्रिया ॥१०॥
श्वेतरूप धरा देवी ईश्वरी वृष वाहना ।
ब्राह्मी हंस समारूढा सर्वा भरण भूषिता ॥ ११ ॥
इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोग समन्विताः ।
नाना मरण शोभाढ्या नाना रत्नोपशोभिता ॥१२॥
दृश्यन्ते रथ मारूढा देव्यः क्रोध समाकुलाः ।
शंखं चक्रं गदा शक्ति हलंच मुसलायुधम् ॥ १३ ॥
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाश मेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलंच शार्ङ्ग मायुध मुत्तमम् ॥ १४ ॥
दैत्यानां देह नाशाय भक्तानाम भयाय च ।
धारयन्त्या युधानीत्थं देवानांच हिताय वै ॥ १५ ॥

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर पराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनी ॥ १६ ॥
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भय वर्द्धिनी ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्या मग्नि देवता ॥१७॥
दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्ग धारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥१८॥
उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूल धारिणीं ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥१९॥
एवं दश दिशोरक्षेच्चामुण्डा शव वाहना ।
जयामे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ॥ २० ॥
अजिता वाम पार्श्वेतु दक्षिणे चाप राजिता ।
शिखा सुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥
मालाधरी ललाटे च भ्रुवौरक्षेद्य शस्विनी ।
त्रिनेता च भ्रुवोर्मध्ये यम घण्टा च नासिके ॥२२॥
शंखनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वार वासिनी ।
कपलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तुशांकरी ॥ २३ ॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका ।
अधरे चामृत कला जिह्वायांच सरस्वती ॥ २४ ॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठ देशेतु चण्डिका ।
घण्टिकाँ चित्र घण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥

कामाक्षी चिवुकं रक्षे द्वाचं मेसर्व मङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकालीच पृष्ठ वंशे धनुर्धरी ॥ २६ ॥
नीलग्रीवावहिष्कण्ठे नलिकां नल कूवरी ।
स्कन्धयोः खङ्गिनी रक्षेद्वाहू मे वज्रधारिणी ॥२७॥
हस्तयोर्दण्डिनीरक्षे दम्बिका चाङ्गलीषुच ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥ २८ ॥
स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोकः विनाशिनी ।
हृदये ललितादेवी उदरेशूल धारिणी ॥ २६ ॥
नाभौच कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिवाहिनीम् ॥३०॥
कढ्यां भगवती रक्षे ज्जानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जंघे महावला रक्षेत्सर्व काम प्रदायिनी ॥ ३१ ॥
गुल्फयो नीर सिंही च पाद पृष्ठे तु तैजसी ।
पदाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादाधः स्थलवासिनी ॥३२॥
नखान्दंष्ट्रा कराली च केशांश्चैवोर्ध्व केशिनी ।
रोम कूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥
रक्त मज्जाव सामांसा न्यस्थि मेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तंच मुकुटेश्वरी ॥ ३४ ॥
पद्मावती पद्मकोषे कफे चूड़ा मणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नसाजाल मभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ ३५ ॥

शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छाँया क्षत्रेश्वरी तथा ।
अहंकारं मनोबुद्धिं रक्षेन्मे धर्म धारिणी ॥ ३६ ॥
प्राणापानौ तथा व्यान मुदानञ्च समानकम् ।
वज्र हस्ता चमे रक्षेत् प्राणं कल्याण शोभना ॥३७॥
रसे रूपेच गन्धेच शब्दे स्पर्शेच योगिनी ।
सत्वं रसस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥ ३८ ॥
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्मिञ्च लक्ष्मीञ्च धनं विद्याँच चक्रिणी ॥३९॥
गोत्र मिन्द्राणि मे रक्षेत्पशुन्मे रक्ष चण्डिके ॥
पुत्रान्क्षेन्महालक्ष्मी भार्यां रक्षतु भैरवी ॥ ४० ॥
पन्थानं सुपथारक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मी विजया सर्वतः स्थिता ॥४१॥
रक्षाहीनंतु यत्स्थानं वर्जितं कव चेनतु ।
तत्सर्वं रक्षमेदेवि जयन्ती पाप नाशिनी ॥ ४२ ॥
पदमेकं न गच्छेतु यदीच्छेच्छुभ मात्मनः ।
कवचेना वृत्तो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ४३ ॥
तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सर्वकामिकः ।
यं यं चिन्तयतेकामं तंतं प्राप्नोति निश्चितम् ।
परमैश्वर्य मतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥४४॥
निर्भयो जायतेमर्त्यः संग्रामे ष्वप राजितः ।

त्रैलोक्येतुभवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ ४५ ॥
इदं तुदे व्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
यः पठेत्प्रयतोनित्यं त्रिसंध्यं श्रद्धायान्वितः ॥४६ ॥
दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।
जीवेद् वर्षशतं साग्रमप मृत्यु विवर्जितः ॥ ४७ ॥
नश्यन्ति व्याधयः सर्वेलूताविस्फोटकादयः ॥
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥ ४८ ॥
अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र यन्त्राणिभूतले ।
भूचराः खेचराश्चैव कुल जाश्चोदेशिका ॥ ४९ ॥
सहजाः कुलजा माला डाकिनी शाकनी तथा ।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥ ५० ॥
ग्रह भूत पिशाचाश्च यक्ष गन्धर्व राक्षसाः ।
ब्रह्म राक्षस वेतालाः कूष्मांडा भैरवादयः ॥ ५१ ॥
नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदिसं स्थिते ।
मानोन्नति र्भवेद्राज्यन्ते जो वृद्धि करं परम् ॥५२
यशसा वर्द्धतेऽसोपि कीर्त्तिमण्डित भूतले ।
जपेत्सप्त शतीं चण्डीं कृत्वातु कवचंपुरा ॥ ५३
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैल वन काननम् ।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रकी ॥ ५४
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।

प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥ ५५ ॥
लभते परमं रूपं शिवे न सह मोदते ॥ ५६ ॥
इति वाराह पुराणे हरिहर ब्रह्म विरचितं देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ अर्गला ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै॥ जयन्ती मङ्गला काली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥१॥

जयत्वं देवि चामुण्डे जयभूतार्त्ति हारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रिनमोस्तुते ॥ २ ॥
मधु कैटभ विद्रावि विधातृ वरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषोजहि ॥ ३ ॥
महिषासुर निर्णाश भक्तानां सुखदेनमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥
रक्त बीजबधे देवि चण्डमुण्ड विनाशिनी ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनी । रूपं देहि० ॥ ६ ॥ वन्दिताङ्घ्रि युगेदेवि सर्व सौभाग्य दायिनी । रूपं देहि ज० ॥ ७ ॥ अचिन्त्य रूप चरिते सर्व शत्रु विनाशिनी । रूपं देहि ज० ॥ ८ ॥ न तेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिचे दुरितापहे । रूपं देहि जयं० ॥ ९ ॥ स्तुवद्भ्यो भक्ति पूर्वं त्वां चण्डिके व्याधि नाशिनी रूपं देहि जयं० ॥ १० ॥ चण्डिके सततं येत्वा मर्चयन्तीह

भक्तितः । रूपं देहि जयं० ॥११॥ देहि सौभाग्य मारोग्यं देहि मे परमं सुखम् । रूपं देहि जयं ० ॥ १२ ॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि वल मुच्चकैः । रूपं देहि जयं० ॥१३॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् । रूपं देहि जयं० ॥ १४ ॥ सुरासुर शिरोरत्न निघृष्ट चरणेऽम्बिके । रूपं देहि जयं० ॥ १५ ॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु । रूपं देहि जयं० ॥ १६ ॥ प्रचण्ड दैत्य दर्पघ्ने चण्डिके प्रणतायमे । रूपं देहि ज० ॥ १७ ॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि । रूपं देहि जयं० ॥ १८ ॥ कृष्णे न संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके । रूपं देहि जयं ॥१९॥ हिमाचल सुतानाथ संस्तुते परमेश्वरि ॥ रूपं देहि जयं० ॥ २० ॥ इन्द्राणी पतिसद्भाव पूजिते परमेश्वरि । रूपं देहि जयं ॥ २१ ॥ देवि प्रचण्ड दोर्दण्ड दैत्य दर्प विनाशिनी । रूपं देहि जयं० ॥ २२ ॥ देविभक्त जनोद्दाम दत्ता नन्दोदयेऽम्बिके ॥ रूपं देहि जयं ॥ २३ ॥

पत्नीं मनोरमां देहि मनो वृत्तानु सारिणीम् ।
तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥
इदं स्तोत्रं पठि त्वातु महास्त्रोत्रं पठेन्नरः ।
सतु सप्तशती संख्या वरमाप्नोतिसम्पदाम् ॥२५॥

इति मार्कण्डेय पुराणे अर्गला स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशाय: नमः ॥

अथकीलम् ॥

ओँ नमश्चण्डिकायै ।

मार्कण्डेय उवाच् ॥

विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे ।
श्रेयः प्राप्ति निमित्ताय नमः सोमार्द्ध धारिणे ॥ १ ॥
सर्वमेतद्धि जानीयान्मन्त्राणा मपि कीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥ २ ॥
सिध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि ।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्रमात्रेण सिध्यति ॥ ३ ॥
नमन्त्रो नौषधं तत्र नकिञ्चिदपि विद्यते ।
विना जाप्येन सिध्येत सर्वमुच्चाट नादिकम् ॥ ४ ॥
सम ग्राण्यपि सिध्यन्ति लोकशंका मिमां हरः ।
कृत्वानिमन्त्रया मास सर्व मेव मिदं शुभम् ॥ ५ ॥
स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तुतश्च गुप्तञ्च कारसः ।
समाप्नोति सुपुण्येनतां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥
सोपिक्षेम मवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वासमाहितः ॥ ७ ॥
ददाति प्रति गृह्णाति नान्यथैषा प्रसिध्यति ।
इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८ ॥
योनिष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।

ससिद्धः सगणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥९॥
न चैवाप्य टतस्तस्य भयं क्वपीह जायते ।
नाप मृत्यु वशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १० ॥
ज्ञात्वा प्रारम्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।
ततो ज्ञात्वेव सम्पन्न मिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११ ॥
सौभाग्यादिच यत्किञ्चित् दृश्यते ललनाजने ।
सत्सर्वं त्वत्प्रसादेन तेन जाप्यमि दंशुभम् ॥ १२ ॥
शनैस्तु जाप्य मानेस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्य मेवतत् ॥ १३ ॥
ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्या रोग्य सम्पदः ।
शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयतेसानकिं जनै ॥ १४ ॥
इति भगवत्याः कीलकं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

इसके बाद एक माला नर्वाण नीचे लिखेके अनुसार जप करें।

ओँ अस्य श्री नवार्णमंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णि गनुष्टुप छन्दांसि श्री महाकाली महा लक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः ऐं बीजम् ह्रींशक्तिः क्लीं कीलकम् श्री महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

ब्रह्म विष्णुरुद्र ऋषिभ्योनमः शिरसि ।
गायत्र्युष्णि गनुष्ट्प्छन्दोभ्योनमः, मुखे ।

महाकाली महा लक्ष्मी महा सरस्वती देवताभ्यो नमः हृदि ॥ ऐं वी जाय नमः, गुह्ये ॥ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः क्लीं कीलकायनमः, नाभौ ॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इति करौ संशोध्य।

ओँ ऐं अंगुष्ठाभ्यान्नमः। ओँ ह्रीँ तर्जनीभ्यान्नमः ओँ क्लीं मध्यमाभ्यान्नमः। ओँ चामुण्डायै अनामिका भ्यान्नमः। ओँ विच्चू कनिष्ठिकाभ्यान्नमः। ओँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास।

ओँ ऐं हृदयायनमः। ओँ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ओँ क्लीं शिखायै वषट्। ओँ चामुण्डायै कवाचा यहूँ। ओँ विच्चे नेत्रत्राय वौषट्। ओँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्॥

इसके बाद अक्षर न्यास करें।

ओँ ऐं नमः शिखायाम्। ओँ ह्रीं नमः, दक्षिण नेत्रे। ओँ क्लीं नमः, वाम नेत्रे। ओँ चां नमः दक्षिण कर्णे। ओँ मुं नमः, वाम कर्णे। ओँ डांनमः दक्षिण नासायाम्। ओँ ऐं नमः वामनासायाम् ओँ विं नमः। मुखे। ओँ च्चें नमः गुह्ये।

इसके बाद नर्वाण मन्त्रसे आठ बार व्यापक न्यास करे। फीर।

ऐं प्राच्यै नमः। ऐं आग्नेयै नमः। ओँ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ओँ ह्रीं नैऋत्यै नमः। ओँ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ओँ क्लीं वायव्यै नमः। ओँ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ओँ चामुण्डायै ईशान्यै नमः। ओँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायैनमः। ओँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः॥

इसके बाद नीचे लिखेके अनुसार ध्यान करें।

खड्ग चक्र गदेषु चाप परिघा ञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः।
शंखं संदध तीं करै स्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषा वृत्ताम्॥
यामस्तौ त्स्वपिते हरौ कमल जो हन्तुं मधुं कैटभम्।
नीलाश्म द्युति मास्यपाद दशकां सेवे महाकालिकाम्॥१॥
अक्षस्रक् परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्।
दण्डं शक्ति मसिश्च चर्म जलजं घण्टां सुरां भाजनम्॥
शूलं पाशसुदर्शनेचदधतीं हस्तैः प्रवाल प्रभाम्।
सेवे सैरिभ मर्दिनी मिह महा लक्ष्मीं सरोज स्थिताम्॥२॥
घण्टा शूल हलानिशंख मुसले चक्रं धनुःशायकम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं धनान्त बिलसच्छी तांशु तुल्य प्रभामं।
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगता माधार भूतां महा।
पूर्वामत्र सरस्वती मनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम्॥ ३॥

तब १०८ वार, ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ए मन्त्रका जप करे॥

फिर बटुक भैरव स्तोत्रका पाठ करे ।

॥ अथ बटुक भैरव स्तोत्रम् ॥

ओँ मेरु पृष्ठसीनं देवदेवं जगद्गुरुम् ।

सुखा

शंकरं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम् ॥ १ ॥

श्री पार्वत्यु वाच ॥

भगवन्सर्व धर्मज्ञ सर्व शास्त्र गमादिषु ।

आप दुद्धारणं मन्त्रं सर्वसिद्धि प्रदंनृणाम् ॥ २ ॥

सर्वेषाञ्चैव भूतानां हितार्थं वांञ्छितंमया ।

विशेषतस्तु राज्ञां वै शान्ति पुष्टि प्रसाधनम् ॥ ३ ॥

अंगन्यास करन्यास देहन्यास समन्वितम् ।

वक्तु मर्हसि देवेश मम हर्ष विवर्धनम् ॥ ४ ॥

ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि महामन्त्र माप दुद्धार हेतुकम् ।

सर्व दुःख प्रशमनं सर्वशत्रु विनाशनम् ॥ ५ ॥

अपस्मरादि रोगाणां ज्वरा दीनां विशेषतः ।

नाशनं स्मृति मात्रेण मंत्र राज मिमंप्रिये ॥ ६ ॥

ग्रह रोग भयानाँच नाशनं सुखवर्धनम् ।

स्नेहाद् वक्ष्यामि ते मन्त्रं सर्वसार मिमंप्रिये ॥ ७ ॥

सर्व कामार्थदं पुण्यं राज्यभोग प्रदं नृणाम् ।

आपदुद्धारण मिति मन्त्रं वक्ष्याम्य शेषतः ॥८॥

प्रणवं पूर्व मुदधृत्य देवी प्रणव मुद्धरेत् ।
बटुकायेति वै पश्चादाप दुद्धारणायच ॥९॥
कुरु द्वयं ततः पश्चाद् बटुकाय पुनः क्षिपेत् ।
देवी प्रणव मुद्धृत्य मन्त्रोद्धार मिमं प्रिये ॥१०॥
मन्त्रोद्धार मिमं देवि त्रैलोक्ये चाति दुर्लभम् ।
अप्रकाश्य मिमं मन्त्रं सर्वशक्ति समन्वितम् ॥११॥
स्मरणादेव मन्त्रस्य भूत प्रेत पिशाचकाः ।
विद्रवन्त्य ति भीता वै काल रुद्रादिव प्रजाः ॥१२॥
पठेद्वा पाठयेद्वापि पूजये द्वापि पुस्तकम् ।
नाग्नि चौर भयं तस्य ग्रहराजभयं तथा ॥१३॥
नचमारी भयं किंचित्सर्वत्र सुखवान्भवेत् ।
आयु रा रोग्य मैश्वर्यं पुत्र पौत्रादि सम्पदः ॥१४॥
भवन्ति सततं तस्य पुस्त कस्यापि पूजनात् ।
नदारिद्रं न दौर्भाग्यं नापदां भय मेवच ॥१५॥

॥ पार्वत्यु वाच ॥

कएष भैरवो नाम आपदुद्धारणो मतः ।
त्वयाच कथितो देव भैरवः कल्प वित्तमः ॥१६॥
तस्य नाम सहस्राणि आयुतान्यर्बुदानिच ।
सार मूदधृत्य तेषां वै नामाष्टशत कंवद ॥१७॥
यानि संकीर्त्तयन्मर्त्यः सर्व दुःख विवर्जितः ।

सर्वान्कामा नवाप्नोति साधकः सिद्धिमेवच ॥१८॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भैरवस्य महात्मनः ।
आप दुद्धार ण स्येदं नामाष्ट शत मुत्तमम् ॥१९॥
सर्व पाप हरं पुण्यं सर्वापत्ति विनाशनम् ।
सर्व कामार्थ दं देवि साधकानां सुखावहम् ॥२० ॥
सर्व मङ्गल माङ्गाल्यं सर्वोपद्रव नाशनम् ।
आयुष्करं पुष्टिकरं श्री करंच यशस्करम् ॥२१ ॥
नामाष्ट शत कस्यास्य च्छन्दोऽनुष्टप्प्र कीर्त्तितम् ।
बृह दारण्यको नाम ऋषिर्देवोऽथ भैरवः ॥२२॥
अष्टबाहुं त्रिनयन मिति बीजं समाहितम् ।
शक्ति कं कील कंशेष मिष्ट सिद्धौ नियोजयेत् ॥२३॥
सर्व कामार्थ सिद्ध्यर्थ विनियोगः प्रकीर्त्तितः ।
देहान्त न्यासकं चैव पूर्व कुर्याच्च साधकः ॥२४ ॥
ह्रीं बीजं बटुकः शक्तिः प्रणवः कीलकं मतम् ।
आरोग्या युरभीष्ट श्री सिद्ध्यर्थ विनियुज्यते ॥२५॥
भैरवं मूर्ध्नि विनष्य ललटे भीम दर्शनम् ।
नेत्रयोर्भूत हननं सार मेयानुगं भ्रुवो ॥ २६ ॥
कर्णयोर्भूत नाथं च प्रेत वाहं कपोलयोः ।
नासा पुटौष्ठ यो श्चैव भस्माङ्गं सर्व भूषणम् ॥२७॥

अनादि नाथं सौम्येच शक्ति हस्तं गले न्यसेत् ।
स्कन्धयो र्दैत्य शमनं वाह्वोरतुल तेजसम् ॥२८॥
पाण्योः कपालिनं न्यस्य हृदये मुण्ड मालिनम् ।
शान्तं वक्षस्थले न्य स्य स्तनयोः कामचारिणम् ॥२९॥
उदरेच सदा तुष्टं क्षेत्रेशं पार्श्वयोस्तथा ।
क्षेत्र पालं पृष्ठ देशे क्षेत्रज्ञं नाभिदेशके ॥३०॥
पापोध नाशनं कट्यां वटुकं लिङ्ग देशके ।
गुदे रक्षाकरं न्यस्य तथोर्वो रक्त लोचनम् ॥३१॥
जानुनो र्घु र्घुरा रावं जंघयो रक्त पाणिकम् ।
गुल्फयोः पादुका सिद्धं पाद पृष्ठे सुरेश्वरम् ॥३२॥
आपाद मस्तकं चैव आप दुद्धारणं तथा ।
पूर्वे डमरु हस्तं च दक्षिणू दण्ड धारिणम् ॥३३॥
खड्गहस्तं पश्चिमे च घटा वादिन मुत्तरे ।
अग्नेय्या मग्निवर्णं च नैऋत्यांच दिगंवरम् ॥३४॥
वायव्यां सर्व भूतस्थ मैशान्यां चाष्ट सिद्धिदम् ।
ऊर्ध्वं खेचारिणं न्यस्य पाताले रौद्र रूपिणम् ॥३५॥
एवं न्यस्य च देहे स्वे खडङ्गेषु ततो न्यसेत् ।
रुद्रमं गुष्ठयो र्न्यस्य तर्जन्योस्तु शिखि सखम् ॥३६॥
शिवं मध्य मयोन्यस्या नामिकायां त्रिशूलिनम् ।
ब्रह्माणंतु कनिष्ठायां तलयोस्त्रिपुरान्तकम् ॥३७॥

मांसा शिनं कराग्रेतु कर पृष्ठे दिगम्बरम् ।
हृदये भूत नाथाय आदिनाथाय मूर्द्धनि ॥३८॥
आनन्द पद पूर्वाय नाथ याथ शिखा सुच ।
सिद्धस्थावर नाथाय कवचे विन्य सूत्तथा ॥३९॥
सहजा नन्द नाथाय न्यसे न्नेत्र त्रयेषु च ।
परमानन्द नाथाय अस्त्रे चैव प्रयो जयेत् ॥४०॥
एवं न्यास विधिं कृत्वा यथा वत्तदनून्तरम् ।
ध्याये च्चैव महेशानि साधकः सर्व सिद्धये ॥४१॥
ध्यानं तस्य प्रवक्ष्यामि यथा ध्यात्वा पठे न्नरः ।
शुद्धस्फटिक संकाशं सहस्त्रा दित्य वर्चसम् ॥४२॥
नील जीमूतसं काशं नीलाञ्जन समप्रभम् ।
अष्ट बाहूं त्रिनयनं चतुर्बाहूँ द्विबाहूकम् ॥४३॥
दंष्टा कराल वदनं नूपुरा राव संकुलम् ।
भुजङ्ग मखलं देव मग्नि वर्ण शिरो रुहम् ॥४४॥
दिगम्बरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ।
खट्वांग मसि पाशौच शूलं दक्षिण भागतः ॥४५॥
डमरूं च कपालं च वरदं भुजगं तथा ।
अग्नि वर्ण समो पेतं सारमेय समन्वितम् ॥४६॥
ध्यात्वा जपेत्सु संतुष्टः सर्वान्कामा नवाप्नुयात् ॥४७॥

ध्यान ।

वन्दे वाल स्फटिक सदृशं कुन्तलोद्भासि वक्रं ।
दिव्या कल्पै र्नव मणिमयैः किं किणीनूपुराढ्यैः ॥
दीप्ता कारं विशद वदनं सुप्रसन्नं महेशम् ।
हस्ताब्जाभ्यां वटुक मनिशं शूल खड्गौ दधानम् ॥४८॥
उद्या द्भास्कर सन्निभं त्रिनयनंरक्तांग प्त्यराग स्त्रजम्
स्मेरस्यं वरदं कपाल मभयं शूलं दधानं करैः
नीलग्रीव मुदार भूषण युतं शीतांशु खंडो ज्वलम्
बन्धू कारुण वाससं मय हरं देवं सदाभाव येत् ॥४९॥
ध्यायेन्त्रैलोक्य कान्तं शशि शकलधरम् मुण्डमालंमहेशम्
दिग्वस्त्रं पिङ्ग केशं डमरु मथं सृणिं खड्गशूले दधानम्
नागं घण्टां कपालं करसरसिरु है र्विभ्रूतं भीमदंष्टम्
सर्पा कल्पं त्रिनेत्रं मणिमय विलसत्किंकिणी नूपुराढ्यम्॥५०॥
कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि--
स्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञो पवीती ॥
ऋतु समय सपर्या विघ्नविच्छेद हेतु--
र्जयति वटुकनाथः सिद्धदः साधका नाम् ॥५१॥
ध्यात्वा जपेत्सुसंहृष्टः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥
आयुरारोग्य मैश्वर्यं सिद्ध्यर्थं विनियोजयेत् ॥५२॥
अस्य श्री बटुक भैर नामाष्टक शतका पदुद्धारण स्तोत्र

मंत्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः । श्री बटुक भैरवो देवता । अनुष्टुप छन्दः । ह्रीं बीजम् बटुकायेति शक्तिः । प्रणवः कीलकम् । अभीष्ट सिद्ध्यर्थे पाठे जपे विनियोगः ॥ ह्रां वां अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ह्रीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ह्रूं वूं मध्यमाभ्यां वषट् ह्रैं वैं अनामि काभ्याँ हुम् । ह्रौं वौं कनिष्ठि काभ्यां वौषट् । ह्रः वः कर तलकर पृष्ठाभ्यां फट् इतिकरन्यास अथ षडङ्ग न्यासः । ह्रां वां हृदयाय नमः । ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा । ह्रूं वूं शिखायै वषट् । ह्रैं वैं कवचाय-हुम् । ह्रौं वौं नेत्र त्राय वौषट् ह्रः वः अस्त्राय फट् ।

अति तीक्ष्ण महाकाय कल्पात दहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां छदातु मर्हसि ॥ १ ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशि मुकुट धरं चोन्नतागं त्रिनेत्रम् ।
शूलं खड्गं च वज्रं परशु मुसलके दक्षिणांगे वहन्तम् ॥
नागं पाशांच घण्टां नलिन करयुतं साङ्कुशं वाम भागे ।
नाना लङ्कार युक्तं स्फटिक मणिनिभं नौमितत्वं शिवाख्यम् ।२॥

नमस्कार मंत्र । ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय ॥

ओँ भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्चक्षेत्रदः क्षत्रियो विराट ॥ १ ॥
श्मशानवासी मांसाशी खर्पराशी स्मरांतकृत् ।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः ॥२॥

कंकालः कालशमनः कलाकाष्ठा तनुः कविः ।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गल लोचनः ॥ ३ ॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कंकाली धूम्र लोचनः ।
अभीरुर्भैरवोनाथो भूतपो योगिनी पतिः ॥ ४ ॥
धनदो धनहारीच धनवान् प्रति भानवान् ।
नाग हारो नागकेशो व्योमकेशः कपाल भृत् ॥ ५ ॥
कालः कपाल मालीच कमनीयः कलानिधिः ।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्र स्त्रिशिखो च त्रिलोकपः ॥६॥
त्रिनेत्र तनयो डिम्भः शान्तः शान्त जनः प्रियः ।
बटुको बहुवेषश्च खट्वाङ्ग वरधारकः ॥ ७ ॥
भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः ।
धूर्तोदिगम्बरः शौरि र्हरिणः पाण्डु लोचनः ॥ ८ ॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करः प्रिय बान्धवः ।
अष्ट मूर्तिनिधीशश्च ज्ञान चक्षुस्तपोमयः ॥९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्प युक्तः शिखीसखी ।
भूधरो भूधराधीशो भूपति र्भूधरात्मजः ॥ १० ॥
कङ्काल धारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः ।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा ॥११॥
शुद्धो नीलाञ्जनप्रख्यो दैत्यहामुण्ड भूषितः ।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालोबाल पराक्रमः ॥१२॥

सर्वापत्तारणोदुर्गो दुष्टभूत निषेवितः ।
कामी कलानिधिःकान्तः कामिनी वशकृद्वशी ॥१३॥
सर्वसिद्धि प्रदोवैद्यः प्रभुर्विष्णु रितीवहि ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः ॥१४॥
मयाते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामिकम् ।
यइदं पठते स्तोत्रं नामाष्टशत मुत्तमम् ॥१५॥
नतस्य दुरितं किंचिन्नच भूतभयं तथा ।
नच मारी भयं तस्य ग्रहराज्य भयं तथा ॥१६॥
न शत्रुभ्यो भयं किंचित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचित् ।
पातकानां भयं नैव यः पठत्स्तोत्र मुत्तमम् ॥१७॥
मारी भये राज भये तथा चौराग्निजे भये ।
औत्पातिक भयेचैव तथा दुस्वप्नुजे भये ॥१८॥
वन्धनेच तथा घोरे पठत्स्तोत्र मनुत्तमम् ।
सर्वं प्रशम मायाति भयं भैरव कीर्त्तनात् ॥१९॥
एकादश सहस्त्रं तु पुरश्चरण मुच्यते ।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि सम्वत्सरमतं द्रितः ॥२०॥
स सिद्धि माप्नुया दिष्टीं दुर्लभामपि मानवैः ।
षण्मासाद् भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम् ॥२१॥
राजशत्रुविनाशाय जपेत्मासाष्टकं यदि ।
रात्रौवार त्रयं भृत्यो राजानं वशमाययेत ॥२२॥

धनार्थश्च सुतार्थश्च दारार्थं यस्तु मानवः ।
पठेन्मासत्रयंदेवि बारमेकं तथानिशि ॥२३॥
धनं पुत्रांस्तथादारान् प्राप्नुयान्नात्रसंशयः ।
रोगीरोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥२४॥
भीतोभयात्प्रमुच्येत देविसद्यो न संशयः ।
निगडैश्चापि योबद्धः कारागृह निपातितः ॥२५॥
शृङ्खलाबन्धनं प्राप्तः पठेच्चेदं दिवानिशि ।
यान्यान् समीहते कामांस्तांस्तान्प्राप्नोतिनिश्चितम् ॥२
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं न देयं यस्यकस्यचित् ।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवेदम्भवर्जिने ॥२७॥
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकाम फलप्रदम् ।
इति श्रुत्वा ततोदेवीनामाष्टशतमुत्तमम् ॥२८॥
संतोषं परमं प्राप्य भैरवस्य प्रसादतः ।
भैरवस्य प्रसन्नाभूत्सर्वलोक महेश्वरी ॥२९॥
भैरवस्तु प्रहृष्टोभूत्सर्वज्ञः परमेश्वरः ।
ज जापपरया भक्त्यासदा सर्वेश्वरेश्वरी ॥३०॥

इतिश्री रुद्रयामले तन्त्रे आप दुद्धारणं नाम भैरव स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ मन्त्रः ॥

ओँ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु
कुरु बटुकाय ह्रीं ओँ नमः शिवाय ॥

इसके बाद श्री सूक्तका पाठ करें।

अथ श्री सूक्तम्॥

ओँ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम्।
चन्द्रांहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यंविन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ २॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम्॥ ३॥

काँसोस्मितां हिरण्य प्राकारामाद्रां ज्वलन्तींतृप्तांतर्प-
यन्तीम्। पद्मेस्थिताँ पद्मवर्णां तामि हो पह्वये श्रियम्॥४
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियंलोके देवजुष्टामुदा-
राम। तां पद्मनेमीं शरण महं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्म्मेनश्यतां
त्वां वृणोमि॥ ५॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वन-
स्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु
मायान्तरायाश्च वाह्याऽलक्ष्मीः॥ ६॥ उपैतु मां देवसखः
कीर्त्तिश्च मणिनासह। प्रादुर्भूतोसि राष्टेऽस्मिन् कीर्त्ति-
वृद्धिं ददातुमे॥ ७॥ क्षुत्पिपासा मलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं
नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिंच सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥६॥

मनसः काममाकूतिं व्राचः सत्य मशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्यमयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेनप्रजाभूतामयि सम्भव कर्दम् ।
श्रियं वासयमे कुलेमातरं पद्म मालिनीम् ॥११॥
आपः स्रजन्तु स्निग्धानिचिक्लीत वसमेगृहे ।
नीच देवीं मातरं श्रियं वासयमे कुले ॥ १२ ॥
आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलाँ पद्म मालिनीम् ।
चाद्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥
आद्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हे ममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोमऽआवह ॥१४॥
तां मऽआवह जातवेदोलक्ष्मीं मनप गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्॥१५॥
यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्य मन्त्रहम् ।
सूक्तं पञ्च दशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

ऋक्शाखीय श्री सूक्तम् सम्पूर्णम् ।

इसके बाद देवताओंका पूजन करे ।

देव पूजन विधि ।

पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठ कर बाम भागमें घण्टा धूप और दाहिनी तरफ पूजाका सामान रखे, फिर दीपक जलाकर चावलपर रखे। हाथ धोकर नीचे लिखे मन्त्रसे प्रार्थना करे।

भोदीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।

यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्वं सुस्थिरोभव ॥

इसके बाद चावल लेकर गणेशजीका आवाहन करे।

ओँ आगच्छ भगवन्देवस्थाने चात्र स्थिरोभव।

यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौभव ॥

ये बोल कर चावल छोड़ दे। प्रतिष्ठा की हुई मूर्त्ति हो तो पुष्प छोड़े।

ओँ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागछ इह तिष्ठ।

तब जल लेकर।

एतानिपाद्यार्घाचमनीय स्नानीयपुनरा च मनीयानि।

ओँ गणपतये नमः समर्पयामि ॥

चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य। ये सब देकर पूजन करें। फिर पुष्पाञ्जलि देकर नीचे लिखेसे प्रार्थना करें।

गजाननम्भूत गणादि सेवितं

कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम्।

उमा सुतं शोक विनाशकारकम्

नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ॥

अनया पूजया गणपतिः प्रीयन्ताम् नभम ॥

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्रसे नवग्रहका पूजन करें।

ओँ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतम्म-र्त्यञ्च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।
ओँ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ।

चावल छोड़ कर, जलादि हाथमें लेकर—

ओँ एतानि पाद्या र्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनी यानि ओँ सूर्याय नमः।

फिर चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप व नैवेद्यसे पूजन करें।

ओँ इमंदेवा असपत्न ꣳ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते-ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इम ममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशएषवोऽमी राजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा॥ ओँ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागछ इह तिष्ठ एतानि पाद्यादीनि ओँ सोमाय नमः।

चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपसे पूजन करे।

ओँ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।

अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति।

ओँ भूर्भुवःस्वः भौम इहा गछ इहतिष्ठ।

एतानि पाद्यादिनि ओँ भौमाय नमः।

चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपसे पूजन करे।

ओँ उद्बुध्यस्याग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टा पूर्तेस ꣳ सृजेथा मयंच। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वदेवा यजमानश्च सीदत।

ओँ भूर्भुवः स्वः बुध इहा गछ इहतिष्ठ।

एतानि पाद्यादिनि ओँ बुधाय नमः॥

चन्दन आदिसे पूजन करे।

ओँ बृहस्पतेअति यदर्यो अहिद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्। ओँ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहा गछ इह तिष्ठ। एतानि पाद्यादीनि ओँ बृहस्पते नमः।

चन्दन आदिसे पूजन करे।

ओँ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणापिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापति। ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपानᳲशुक्र मन्ध स इन्द्र स्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥ ओँ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहा गछ इह तिष्ठ। एतानि पाद्या दीनि ओँ शुक्रायनमः।

चन्दन आदिसे पूजन करें।

ओँ शन्नो देवी रभीष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयो रभि स्रवन्तुनः। ओँ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहा गछ इह तिष्ठ। एतानि पाद्यादीनि ओँ शनैश्चराय नमः।

चन्दन आदिसे पूजन करें।

ओँ कयानश्चित्र आभुव दूतो सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ओँ भूर्भुवः स्वः राहो इहाग छ इह-तिष्ठ। एतानि पाद्यादीनि ओँ राहवे नमः

चन्दन आदिसे पूजन करे।

ओँ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेषसे। समुषद्भि-रजायथाः। ओँ भूर्भुवः स्वः केतो इहा गछ इह तिष्ठ। एतानि पाद्या र्घाचमनीय स्नानीय पुनरा च मनीयानि ओँ केतवे नमः।

चन्दन। अक्षत। पुष्प। धूप। दीपसे पूजन करे।
इसके बाद नीचे लिखे मन्त्रसे प्रार्थना करे।

ओँ ब्रह्मा मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्ति कराभवन्तु॥
अनया पूजया सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम् न मम॥

ए बोलकर अक्षत छोड़े॥

इसके बाद शाल ग्राम हो तो शंखमें जल लेकर पुरुष सूक्त मंत्रसे स्नान कराकर। चन्दन। तुलसी पुष्प। धूप दीपसे पूजन करे। फिर स्तुति नीचे लिखे मन्त्रसे करे।

शान्ता कारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वा धारं गगन सदृशं मेघ वर्णं शुभाङ्गम्॥
लक्ष्मी कान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्या न गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्व लोकैक नाथम्॥ १॥
यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोप निषदैर्गायन्ति यं सामगाः॥
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यां तं नविदुः सुरा सुरगणाः देवाय तस्मैनमः॥२॥
ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्ट दोहम्।
तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यम्॥
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धि पोतम्।

वन्दे महापुरुषते चरणार विन्दम् ॥ ३ ॥
त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सित राजलक्ष्मीम् ।
धर्मिष्ठ आर्य वचसा यदगा दरण्यम् ॥
माया मृगं दयि तयेप्सित मन्त्र धावन्‌ ।
वन्दे महापुरुषते चरणारविन्दम् ॥ ४ ॥
मूकं करोति वाचालं पङ्गं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ॥ ५ ॥
कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनायच ।
नन्द गोप कुमाराय गोविन्दाय नमोनमः ॥ ६ ॥
नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हितायच ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ ७ ॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्चसखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं ममदेव देव॥८॥
पाऽपोहम् पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः ।
त्राहि मां पुण्डरी काक्ष सर्व पाप हरोहरिः ॥ ९ ॥
आवाहं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजा विधिं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥ १० ॥

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्रसे पुष्पाञ्जलि देवें ।

ओँ यज्ञेन यज्ञ मय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा-न्यासन्‌ । तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वसाध्याः सन्ति

देवाः ॥ ओँ राजाधि राजाय प्रसह्य साहिने । नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे ॥ समे कामान् काम कामाय् महयम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुवेराय वैश्रवणाय महा राजाधिराजाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि विष्णवे नमः ॥

इसके बाद शिवजीका नीचे लिखे मन्त्रसे पूजन करे प्रतिष्ठा की हुई हो तो आवाहन न करे। पहले ध्यान करके आवाहन आदि करे ॥

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं ।
रत्नाकल्पो ज्वलाङ्गं परशुमृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात्स्तुति मम रगणै र्व्याघ्रकृतिंवसानाम् ।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराच मनियानि ओँ शिवायः नमः ।

पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य, आदिसे पूजन करें। फिर नीचे लिखे मंत्रसे स्तुति करें। हो सके तो अभिशेष (जल धारा) सोलह मन्त्रसे करें।

शिवस्तुति (पुष्पाञ्जलि)

वन्दे देव मुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम ॥
वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्द प्रियम् ।

वन्दे भक्त जनाश्रयञ्चवरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥१॥

शान्तं पद्मा सनस्थं शशधर मुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।
शूलं वज्रं च खड्गं परशु मभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ॥
नागं पाशं च घण्टां डमरूक सहितं सांकुशं वामभागे ।
नानालङ्कार युक्तं स्फटिक मणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥२॥

कर चरण कृतम्वा कायजं कर्म जम्वा ।
श्रवण नयन जम्वा मानसम्वाऽपराधम् ॥
विहित मविहितम्वा सर्वमेतत्क्षमस्व ।
जयजय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ३ ॥

श्मशाने ष्वा क्रीड़ा स्मर हर पिशाचाः सहचरा
श्चिता भस्मालेपः स्रगपि नृकरोही परिकरः ॥
अमङ्गल्यं शीलं तवभवतु नामैव मखिलम् ।
तथापिस्मतृणां वरद परमं मङ्गल मसि ॥ ४ ॥

असित गिरि समं स्यात्कज्जलं सिन्धु पात्रे ।
सुर तरु वर शाखा लेखनी पत्र मुर्वी ॥
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम् ।
तदपि तव गुणाना मीश पारं नयाति ॥ ५ ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥६॥

पाऽपोहं पाप कर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः ।
त्राहिमां पारवती नाथ सर्व पाप हरोहरः ॥ ७ ॥
कालहर कण्टकहर दुःखहर दारिद्यहर पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ओँ शिवायः नमः

इसके बाद नीचे लिखे मन्त्रसे गाल बजाकर शंकर का जल लगावें।

निरावलम्बस्य समावलम्बं विपाटिता शेष विपत्कदम्बम्
मदीयपापा चल पात शम्बं प्रवर्त्ततां वाचि सदैव वम् वम्॥१॥

तब जल लेकर।

अनेन पूजनेन श्री साम्ब सदा शिवः प्रीयन्ताम् ॥

इसके बाद इष्ट देवताका पूजन नीचे लिखे अनुसार करें। एक पुष्प हाथमें लेकर कूर्म मुद्रा करके स्वासाको बन्दकर। यन्त्र मेवा मूर्तिमे आवाहन आदि करे।

ओँ आं ह्रीं क्रौं हं सः अमुक देवतायाः) प्राण इह प्राणाः। ओँ आं ह्रीं क्रौं हं सः (अमुक देवतायाः) जीव इह स्थितः।

ओं आं ह्रीं क्रौं हं सः (अमुक देवतायाः) सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र घ्राण जिह्वा पाणि पाद पायूस्थानि इहा गत्य सुखां चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

प्रतिष्ठा की हुई मूर्तिमें प्राण प्रतिष्ठा न करे केवल ध्यान करके पुष्प छोड़े ॥ इसके बाद।

एतानि पद्या र्घाच मनीय स्नानीय पुनराचमनि-यानि (अमुक) देवतायैनमः

फिर चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप नैवेद्य आदिसे पूजन करे। इसके बाद फिर ज्योतिका पूजन करें। ज्योतिका ध्यान करते हुए पुष्प छोड़े फिर जलके स्थानमें घृत देवे फिर चन्दन। अक्षत। पुष्प धूप, दीप, नैवेद्य, आदिसे पूजन करके नीचे लिखे मन्त्रसे प्रार्थना करे।

शुभं भवतु कल्याण मारोग्यं पुष्टि वर्द्धनम्।
आत्म तत्व प्रबोधाय दीप ज्योति र्नमोस्तुते॥

इसके बाद ब्रह्माका पूजन नीचे लिखे के अनुसार करें।

ओँ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागक्ष इहतिष्ठ एतानि पाद्या र्घाचि मनीय स्नानीय पुनराच मनियानि ओँ ब्रह्मणे नमः।

फिर चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदिसे पूजन करे।

पञ्चलोक पालन पूजन

बायें हाथमें चावल ले दाहिने हाथसे प्रत्येक मन्त्रसे चावल छोड़े।

ओँ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ एतानि पाद्यादिनि ओँ गणपते नमः।

चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीप, एसबोंसे पूजन करें।

फिर ओँ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ पाद्य, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदसे

ओँ दुर्गा देव्यै नमः।

ए बोल कर पूजन करें। फिर।

ओँ भूर्भुवः स्वः वायो इहागछ इह तिष्ठ पाद्य,

चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदिसे पूजन करें। ओँ वायये नमः। फिर—

ओँ भूर्भुवः स्वः आकाश ईहा गच्छ इह तिष्ठ।

पाद्य, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदिसे ओं आकाशाय नमः ए बोलकर पूजन करे। फिर—

ओँ भूर्भुवः स्वः अश्विना इहा गच्छतं इह तिष्ठत्।

पाद्य, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदिसे ओं अश्विभ्यां नमः ए बोलकर पूजन करें अथवा एक ही बार।

ओँ भूर्भुवः स्वः गणपत्यादि पंच लोक पालाः इहा गच्छत इह तिष्ठत।

पाद्य, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदिसे ओं गणपत्यादि पंचलोकापालेभ्योनमः। ए बोलकर पूजन करे।

अनया पूजया। पंचलोक पालाः प्रीयन्ताम् नमम।

ए बोलकर अक्षत छोड़े॥

(१) इन्द्रादिदशदिक् पालेभ्योनमः

ए बोलकर।

दशदिक पालका पूजन करे।

इन्द्र, अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, कुवेर, ईशान, ब्रह्मा, अनन्त, ए दशोका पूजन अलग २ करें। अथवा एक ही बार अक्षत लेकर।

ओँ भूर्भुवः स्वः इन्द्रादिदशदिक्पालाः, इहागच्छत इह तिष्ठत ।

ए बोलकर आवाहन करे। फिर पाद्य, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नवेद्य, धूप, दीपसे पूजन करे इसके बाद अक्षत लेकर।

अनया पूजया इन्द्रादिदशदिक् पाल देवताः प्रीयन्ताम् ॥

षोडश मातृका पूजन।

गौरी, पद्मा शची। मेधा, सावित्री विजया, जया, देव सेना, स्वधा, स्वाहा, मातृ लोकमातृ, हृष्टि, पुष्टिः, तुष्टि, आत्मकुल देवता, इन १६ देवताका अलग २ पूजन करें अथवा एक ही बार अक्षत लेकर।

ओँ भूर्भुवः स्वः गौर्यादि षोडश मातृकाः, इहा गच्छत इह तिष्ठत ।

पाद्य, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीपसे ।

ओं गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः ।

ए बोल कर पूजन करें तब नीचे लिखे मन्त्रसे प्रार्थना करें।

ओं जयन्ती मङ्गला काली भद्र काली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥

फिर चावल लेकर—

अनया पूजया गौर्यादि षोडश मातरः प्रीयन्ताम् नमम ॥

॥ चतुःषष्टि योगिनी पूजा ॥

ओं भूर्भुवः स्वः चतुःषष्टि योगिनी मातृकाः इहा-गच्छत इह तिष्टत ।

पाद्य, चन्दन आदिसे पूजन करें।

ओं चतुःषष्ठि योगिनी मातृकाभ्यो नमः ।

एक बोल कर फिर चावल लेकर।

अनया पूजया चतुःषष्ठि योगिन्यः प्रीयन्ताम् ।

॥ शालग्राम पूजन ॥

शङ्खमें जल लेकर—

ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् सभूमिँ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद् दशांगुलम् ॥

इत्यादि १६ लो मन्त्रसे अस्पन्न करें, न हो सके तो एक मन्त्रसे भी स्नपन करे। फिर चन्दन, तिल, तुलसी, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीपसे पूजन करे। फिर प्रार्थना नीचे लिखे हुए मन्त्रसे करे। शान्ताकारं। इत्यादि फिर पुष्पाञ्जलि नीचे लिखे मन्त्र बोल कर दे।

ओं यज्ञेन यज्ञ भयजन्त। इत्यादि।

॥ दुर्गा पूजन ॥

पुष्प लेकर नीचे लिखे मन्त्रसे ध्यान करे।

ओं विष्णुद्दाम समप्रभां मृग पतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरा सेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासि खेटविशिखांश्चा पंगुणंतर्जनीं बिभ्राण मनलात्मिका शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रांभजे।

फिर अक्षत लेकर—

ओं भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ।

पाद्य, चन्दन, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीपसे पूजन करे। फिर प्रार्थना करे।

नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्ते जगतांधात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ॥१॥
दुर्गेस्मृता हरसिभीति मशेषजन्तोः।
स्वस्थैःस्मृतामति मतीव शुभांददासि ॥
दारिद्र्य दुःखभय हारिणी कात्वदन्या।
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता ॥२॥
सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवेसवार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बकेगौरि नारायणि नमोस्तुतें ॥३॥

इसके बाद विसर्जन नीचे लिखे मन्त्रसे करे।

इमां पूजां मयादेवि यथाशक्त्योपपादिताम्।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्थान मनुत्तमम् ॥

चावल छोड़े।

॥ अथ श्री महालक्ष्मी पूजन ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे पहिले ध्यान करे।

यासापद्मासनस्था विपुल कटितटी पद्मोपत्रायताक्षी।
गम्भीरा वर्त्तनाभिस्तनभर नमिताशुभ्रवस्त्रोत्तरीया ॥
यालक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः।
सानित्यं पद्महस्ता मम वसतुगृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥

चावल लेकर—

ओँ भूर्भुवः स्वः लक्ष्मि इहागच्छ इहतिष्ठ ।

पाद्य, चन्दन, सिन्दूर, अक्षत, पुष्प, धूप दीप, नैवेद्य आदिसे पूजन करके नीचे लिखे मन्त्रसे प्रार्थना करे ।

ओं सुरासुरेन्द्रादि किरीट मौक्तिकै—
युक्तं सदायत्तव पादपङ्कजम् ।
परावरं पातु वरं सु मङ्गलम्
नमामिभक्त्या तव काम सिद्धये ।।
भवानित्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी ।।
सुपूजिता प्रसन्नास्यान्महालक्ष्म्यै नमोस्तुते ।।
ओं लक्ष्मी पूजितासि प्रसीद क्षमस्व ।

जल छोड़े अथवा चावल छोड़े ।

इसके बाद लाल चन्दन, लाल पुष्प, अक्षत और जल अर्घ दे देकर नीचे लिखे मन्त्रसे तीन बार सूर्यको अर्ध दे ।

ओं नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे ।
जगत्सवित्रे कर्मदायिने एषोर्घः ओं सूर्याय नमः ।।

और सात बार प्रदक्षिणा करे ।

इसके बाद रुचिके अनुसार देव दर्शन करें। फिर देवताको अर्पण करके सात्विक भोजन करे। भगवानका अर्पण किया हुआ भोजनमें सब दोषोंका निर्मूल हो जाता है और बलवीर्य यश ये सबोंको बढ़ाता है ।

इसके बाद जीवकार्थ अपने कामोंमें लग जाय, जहाँतक हो सके सत्य द्वारा ही धनका संचय करें ।

इसके बाद सायंकाल हो जानेपर वाह्य आदि क्रिया करके हो सके तो दिनका पहिना हुआ कपड़ा बदल कर तारा उगनेसे पहिले वा उगनेपर भी सायं सन्ध्या करें। फिर प्रणयाम, जप, स्वाध्याय पाठ समयानुसार करें।

फिर रात्रीमें भोजन करके कुछ समय ठहर कर शयन करनेके समय देव-देवाङ्गना, ऋषि, ब्रह्मर्षि, देवर्षि, महात्माका स्मरण करते हुए निद्रा देवीका आवाहन करके अपाने इष्टदेवका ध्यान करते हुए उसी देवमें तल्लीन हो जाय।

प्रातः समय जब निद्रा भङ्ग हो तब वा करवट बदलते समय अथवा किसी तरह निद्रा भङ्ग हो जानेपर मालूम हो जो मैं इष्टदेव रूपही हूं।

स्वस्ति वाचनम्।

श्री मन्म हागणाधिपतये नमः। लक्ष्मी नारायणाभ्या नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्याँ नमः। शची पुरन्दरा भ्यां नमः। माता पितृ चरण कमलेभ्यो नमः। इष्ट देवताभ्यो नमः। कुल देवताभ्यो मनः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थान देवताभ्यो नमः। एतत्कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवभ्या नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। अविघ्नमस्तु। ॐ स्वस्तिन इन्द्रो बृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्ट नेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः। पयः स्व तीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्। विष्णो

राड्टमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्ण वर्मासि विष्णवे स्त्वा । अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पति र्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि । ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्नि मातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः । अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नोदेवा अवसा गमन्निह । भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः । शतमिन्नुते-शरदो सन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम् पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषता युर्गन्तोः । अदितिदर्यौर दितिरन्तरिक्ष मदितिम्मांता स पिता स पुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्यम् । यतोयतः समीह से ततो नो अभयंकुरू । शन्नः कुरू प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः । ॐ विश्वानि देव सवितदु रितानि परा सुव । यह भद्रं तन्न आसुव । ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञ मव तेन यज्ञपतिं

तेन मामव। मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ एषवै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यन्त्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति। ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम। आहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्। ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः। धूम्र केतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।

॥ नित्य होम विधि ॥

तिलसे आधे चावल, चावलसे आधे जव, जौ, आधे चिन्नी और घृत तथा मेवा—ये सबोंको मिला कर साकल्य बनावे। फिर संकल्प करें ओं अद्य, अमुके, मासे इत्यादि। अन्तमें नित्य होम करिष्ये। ये बोल कर संकल्प करे। वेदीपर पंच भूसंस्कार करे। कुशाओंसे वेदी साफ कर उन्हें ईशान कोनेमें फेंक दें। गौका गोबर से लेपन करे। स्रुवाके मूलसे पूर्वको ओर उत्तरोत्तर प्रादेश मात्रको तीन लकीरें खींचें। अनामिका और

अंगुठेसे उन लकीरोंमेंसे थोड़ा मट्टी निकाले। वेदीपर जल छिड़क दें।

अग्निकोनसे अग्नि लाकर नैऋत्य कोनमें नीचे लिखे मन्त्रसे थोड़ा अग्नि डाल दे।

ॐ क्रव्याद मग्निमिति मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुच्छन्दोऽग्निर्देवता अग्निसंस्कारे विनियोगः। ॐ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः। इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥

इसके बाद नित्य होम करे। जिनको जिस देवताके ऊपर विश्वास हो उन्हींका मन्त्रसे होम करे। कमसे कम एक माला करना आवश्यक है।

इसके बाद चावल लेकर नीचे लिखे मन्त्रसे सब देवताओंका विसर्जन करे।

यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकाम प्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे अग्नि स्थापन करें।

अयन्ते योनिरिति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता अग्नि स्थापने विनियोगः। ओं अयन्ते योनिर्ऋत्विजो यतो जातो अरोचथाः। तन्जानन्नग्न आरोहाथा जो वर्द्धयारयिम्।

वेदीके पूर्व भागमें उत्तरकी ओर अग्रभाग कर कुशा रखे।

ओँ अग्नि मीले पुरोहितं यज्ञस्यदेव मृत्विजम् । हो तारंरत्नधातमम् ।

वेदीके दक्षिण भागमें पूर्वकी ओर अग्रभाग कर कुशा रखे।

ओँ इषेत्वर्जेत्वा वायवस्थदेवोव: सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्याइन्द्राय भागम्प्रजावती-रनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघश‌ँसोध्रुवा अस्मिन् गोपतौस्यात वह्वी र्यज मानस्य पशून् पाहि ।

वेदीके पश्चिम भागमें उत्तरकी ओर अग्रभाग कर कुशा रखे।

ओँ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषि ।

वेदीके उत्तरकी ओर अग्रभाग कर कुशा रखे।

ओँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभि स्त्रवन्तुन: ।।

अग्नि प्रज्वलित कर नीचे मन्त्रसे अग्निदेवका ध्यान करे ।।

ओँ चत्वारिश्रृङ्गात्रयो अस्यपादा द्वेशीर्षे सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधावद्धो वृषमोरोरवीति महोदेवो मर्त्यार आवि-वेश । ओँ मुखंय: सर्वदेवानां हव्यभुक कव्यभुक तथा । पितृणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने ।

इसके बाद प्रार्थना करे ।

ओँ अग्ने शाण्डिल्य गोत्र मेषध्वज ? ममसम्मुखो भव । इसके बाद ओँ पावकाग्नये नम: ।

इस मन्त्रसे घृत, चन्दन, अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्यसे अग्निका पूजन करे। फिर कनिष्ठाको अलग रखते हुए सीधे हाथसे अग्निमें आहुति नीचे लिखे मन्त्रसे देवें।

ओँ भूः स्वाहा। इदमग्नये नमम। ओँ भुवः स्वाहा इदं वायवे नमम। ओँ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम। ओँ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम। ओँ धन्वन्तरये स्वाहा इदं धन्वन्तरये नमम। ओँ विश्वेभ्योदेवेभ्यः स्वाहा इदं विष्वेभ्योदेवेभ्यो नमम। ओँ प्रजापते स्वाहा इदं प्रजापतये नमम। ओँ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदं मग्नये स्विष्टकृते नमम। ओँ देव कृतस्यैनसाऽवयजनमसि स्वाहा इदं मग्नये नमम। ओँ मनुष्य कृतस्यै नसोऽवय-जनमसि स्वाहा इद मग्नये नमम। ओँ पितृकृत-स्यैनसोऽवयनमसि स्वाहा इदं मग्नये नमम। ओँ आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदं मग्नये नमम। ओँ एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदं मग्नये नमम। ओँ यच्चाहमेनोविद्वांश्चकार यश्चाविद्वांस्तस्य सर्वस्यै नसोऽव-यजनमसि स्वाहा इदं मग्नये नमम॥

पान सुपारी फल द्रव्य और घृत स्रुवामें लेकर खड़ा होकर नीचे लिखे मंत्रसे पूर्णाहुति देवे।

पूर्णाहुति मन्त्र।

ओँ मूर्द्धानं दिवोऽरतिंपृथिव्या वैश्वानरमजातमग्निंकवि-

ॐसम्राजमतिथीं जनना मासन्नापात्रंजनयन्तदेवाः स्वाहा ॥

प्रार्थना

ओँ सप्तते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्तधात्वायजन्ति सप्तयोनीरा पृणस्व घृतेन स्वाहा । अनेन होमेन श्री परमेश्वरः प्रीयन्ताम् नमम । ओँ तत्सत् ब्रह्मार्पण मस्तु ।

इसके बाद स्रु वामें भस्म लगाकर नीचे लिखे मंत्र लगावे ।

ओँ त्र्यायुषं जमदग्नेः । ललाटमें । ओँ कश्यपस्य त्र्यायुषम् । कण्ठमें । ओँ यद्देवेषु त्र्यायुषम्-भुजाओंमें । ओँ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—हृदयमें ।

इसके बाद प्रणयाम करें । कमसे कम बारह बार अवश्य करे । अपाने इष्ट देवताका ध्यान करते हुए उसी मन्त्रसे प्रणयाम करे ।

फिर (सोऽहम्) में तल्लीन हो जांय ।

इसके बाद वेदींको कुशाओंको अग्निमें डाल दे ।

अथ रात्रि सूक्तम् ॥

ब्रह्मोवाच ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थित संहारकारिणीम् स्तोमिनिद्रांभगवतीं विष्णोरतुल तेजसः ॥ १ ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारस्वरात्मिका, स्वधा त्वमक्षरेनित्ये त्रिधामात्रात्मिकास्थिता ॥ २ ॥

अर्धमात्रास्थिता नित्यायानुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेवासात्वं सावित्री त्वं देविजननी परा ॥ ३ ॥

त्वयैतद्धार्यतेविश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।
त्वयैतत्पाल्यतेदेवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥ ४ ॥
विसृष्टौ सृष्टिरुपात्वं स्थितिरुपा च पालने ।
तथासंहृतिरुपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५ ॥
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ।
महामोहा च भगवती महादेवी महासुरी ॥ ६ ॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्यगुणत्रय विभाविनी ।
कालरात्रिर्महारात्रि मोहरात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥
त्वं श्री स्त्वमीश्वरी त्वंह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।
लज्जा पुष्टिस्तथातुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ॥ ८ ॥
खड्गिनी शूलिनीघोरा गदिनी चक्रिणी तथा ।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा ॥ ९ ॥
सौम्या सौम्यतराशेष सौम्यभ्यस्त्वति सुन्दरी ।
परा पराणां परमात्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥
यच्चकिञ्चित्क्वचिदवस्तु सद सद्वाखिलात्मिके ।
तस्य सर्वस्यया शक्तिःसात्वंकिस्तूयसेतदा ॥ ११ ॥
ययात्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्तियो जगत् ।
सोऽपि निद्रावशंनीतः कस्त्वांस्तोतुमिहेश्वरः ॥ १२ ॥
विष्णुः शरीर ग्रहण महानीशान एवच ।
कारितास्तेयतोऽतस्त्वांकः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥१३॥

सात्वमित्थं प्रभावैः स्वै रुदारै र्देवि संस्तुता ।
मोह यैतो दुराधार्षा वसुरौ मधु कैटभौ ॥ १४ ॥
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयता मच्युतो लघु ।
बोधश्चक्रियता मस्यहन्तुमेतौ महासुरौ ॥ १५ ॥

इति रात्रिसूक्तम्

अथ देवी सूक्तम् ॥

नमोदेव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्मताम् ॥ १ ॥
रौद्रायै नमोनित्यायै गौर्य्यैधात्र्यै नमोनमः ।
ज्योत्स्नायैचेन्दु रूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ २ ॥
कल्याण्यै प्रणता वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमोनमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै सर्वाण्यैते नमोनमः ॥ ३ ॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ ४ ॥
अति सौम्याति रौद्रायै नतास्तस्यै नमोनमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमोनमः ॥ ५ ॥
यादेवी सर्वभूतेषु विष्णु मायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ६ ॥
यादेवी सर्व भूतेषु चेत्यनेत्यमि धीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ७ ॥

यादेवी सर्वभ्तेषु बुद्धिरुपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ८ ॥
यादेवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ९ ॥
यादेवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ १० ॥
यादेवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै समस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ ११ ॥
यादेवो सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ १२ ॥
यादेवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥ १३ ॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१४॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१७॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥१९॥
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२०॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२१॥
या देवी सर्वभूतेषू स्मृमिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषू दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२३॥
या देवी सर्वभूतेषू तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२४॥
या देवी सर्वभूतेषू मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नलस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषू भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२६॥
इन्द्रियाणा मधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषूया ।
भूतेषू सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमोनमः ॥२७॥

चितिरूपेण याकृत्स्न मेतद्व्याप्य स्थिताजगत् ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ॥२८॥
स्तुता सुरैः धूर्वमभीष्ट संश्रयात्
तथा सुरेन्द्रेण दिनेषुसेविता ।
करोतु सानः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभि हन्तु चापदः ॥२९॥
यासांप्रदं चोद्धत दैत्यतापितै-
रस्माभि रीशाच सुरैर्नमस्यते ।
या च स्मृता तत्क्षणमेवहन्तिनः
सर्वापदों भक्ति विनम्र मूर्त्तिभिः ॥३०॥

॥ इति देवीसूक्तम् ॥

अथ दुर्गा चालीसा ।

नमो नमो दुर्गे सुख करनी नमो नमो अम्बे दुख हरनी ॥१॥ निरंकार ज्योति तुम्हारो तिहूं लोक फली उजियारी ॥२॥ शशि लिलार मुख विशाला, नेत्र लाल भृकुटि विकराला ॥३॥ रूप मातुको अधिक सुहावै दरश करत जन अति सुख पावे ॥४॥ तुम संसार शक्ति लै कीना पालन हेतु अन्न धन दीना ॥५॥ अन्नपूरना हुई जगपाला तुमहीं आदि सुन्दरी बाला ॥६॥ प्रलयकार सब नाशन हारी तुम गौरी शिवशङ्कर प्यारी ॥७॥ शिवयोगी तुम्हरे गुणगावैं ब्रह्मा विष्णु तुम्हैं नित ध्यावैं ॥८॥ रूप सरस्वती

का तुम धारा दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥९॥ धरो रूप नरसिंहको अम्बा परगट भई फाड़के खंबा ॥१०॥ रक्षा कर प्रह्लाद बचायो हिरनाकुशको स्वर्ग पठायो ॥११॥ लक्ष्मी रूप धरो जगमाहीं श्रीनारायण अंग समाहीं ॥१२॥ क्षीर सिन्धुमें करत विलासा दयासिन्धु दीजे मन आसा ॥१३॥ हिंग लाजमें तुम्हीं भवानी महिमा अमित न जात बखानी ॥ १४ ॥ मातंगी धूमावती माता। भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ॥ १५ ॥ श्री भैरवतारा जग तारन। छिन्न भाल व दुःख निवारन ॥ १६ ॥ केहरि वाहन सोह भवानी। लंगुर वीर चलत अगवानी ॥ १७ ॥ करमें खप्पड़ खङ्ग विराजै। जाको देख काल डर भाजै ॥ १८ ॥ सोहैं और अस्त्र तिरशूला। जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥ १९ ॥ नाम कोटिमें तुम्हीं विराजत। तिहूं लोकमें डङ्का बाजत ॥ २० ॥ शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे। रक्त बीज शंखन संहारे ॥ २१ ॥ महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अघभार मही अकुलानी ॥ २२ ॥ रूप कराल कालको धारा। सेन सहित तुम तेहि संहारा ॥ २३ ॥ परी गाढ़ सन्तनपर जब जब। भई सहाय मातु तुम तब तब ॥ २४ ॥ आभापुर अरुवासव लोका। तव महिमा सब कहे अशोका ॥ २५ ॥ ज्वालामें है जोति तुम्हारी। तुम्हैं

सदा पूजत नर नारी ॥ २६ ॥ प्रेम भक्तिसे जो जस गावे । दुख दरिद्र निकट नहिं आवे ॥ २७ ॥ ध्यावै तुम्हैं जो नर मन लाई । जन्म मरन ते छुटि जाई ॥ २८ ॥ जोगी सुर मुनि कहत पुकारी । जो न होइ शिव शक्ति तुम्हारी ॥ २९ ॥ शंकर आचरज तप कीनो । काम क्रोध जीति सब लीनो ॥ ३० ॥ निशिदिन ध्यान धरत शंकर को । काहुकाल नहिं सुमिरों तुमको ॥ ३१ ॥ शक्ति रूपको मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछितायो ॥ ३२ ॥ शरनागति हुइ कीर्ति बखानी । जै जै जै जगदम्ब भवानी ॥ ३३ ॥ भई प्रसन्न आदि जगदम्बा । दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा ॥ ३४ ॥ मोको मात कष्ट अति घेरो । तुम बिन कौन हरे दुख मेरो ॥ ३५ ॥ आशा तृष्णा निपट सतावे । रिपु मूरख मोहि अति डरपावे ॥ ३६ ॥ शत्रु नाश कीजै महरानी । सुमिरों एक चित तुम्हें भवानी ॥ ३७ ॥ करों कृपा हे मातु दयाला । ऋद्धिसिद्धि दै करहु निहाला ॥ ३८ ॥ जब लगि जियों दयाफल पाऊँ । तुम्हरे जस मैं सदा सुनाऊं ॥ ३९ ॥ दुर्गा चालीसा जो गावैं । सब सुख भोग परमपद पावैं ॥ ४० ॥ देवीदास शरण निज जानी । करहु कृपा जगदम्ब भवानी ।

इति दुर्गा चालीसा समाप्त ॥

अथ विन्ध्येश्वरी चालीसा ॥

दोहा—नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब ।
सन्त जनोंके काजको । करती नाहिं विलम्ब ॥

चौपाई-जय जय विन्ध्याचल रानी । आदि शक्ति जग विदित भवानी सिंह वाहिनी जय जग माता । जै जै जै त्रिभुवन सुखदाता ॥ कष्ट निवारनि जै जग देवी । जै जै सन्त असुर सुर सेवी ॥ महिमा अमित अपार तुम्हारी । शेष सहस मुख वर्णत हारी ॥ दीननको दुख हरत भवानी । नहि देख्यो तूम सम कोउ दानी । सबकर मनसा पुरवत माता । महिमा अमित जग विख्याता ॥ जो जन ध्यान तुम्हारो लावै । सो तुरतहिं वांछित फल पावै ॥ तुही वैष्णवी तुही रुद्राणी । तुही शारदा अरु ब्रह्माणी ॥ रमा राधिका श्यामा काली । तुही मातु सन्तन प्रतिपाली ॥ उमा माधवी चण्डी ज्वाला । वेगि मोहिपर होहु दयाला । तुहीं हिंगलाज महरानी । तुहीं शीतला अरु विग्यानी ॥ दुर्गादुर्ग विनाशिनी माता । तुहीं लक्ष्मी जग सुखदाता ॥ तुही जाह्नवी अरु उत्रानी । हेमावती अम्ब निर्वानी ॥ अष्ट भुजा वाराहिनी देवा । करत विष्णु शिव जाकर सेवा ॥ चौसट्ठी देवी कल्यानी । गौरी मंगला सब गुण खानी ॥ पाटन मुंवा दन्त कुमारी । भद्रकालि सुनि विनय हमारी ॥

वज्र धारिणी शोक नाशिनी। आयु रक्षिनी विन्ध्य वासिनी॥ जया और विजया वैताली। मातु संकटा अरु विकाली॥ नाम अनन्त तुम्हारी भवानी। वरनै किमि मानुष अज्ञानी॥ जापर कृपा मातु तव होई। तो वह करै चहै मन जोई॥ कृपा करहु मोपर महरानी। सिद्ध करिय अब यह मम-बानी। जो नर धरै मातु कर ध्याना। ताकर सदा होय कल्याना॥ विपति ताहि सपनेहु नहिं आवै। जो देवीपर जाप करावै। जो नर कहँ ऋण होय अपारा। सो नर पाठ करै शतवारा॥ निश्चय ऋण मोचन होई जाई। जो नर पाठ करे मनलाई॥ अस्तुति जोनर पढ़ पढ़ावै। या जगमें सो बहु सुख पावै॥ जाको व्याधि सतावै भाई। जापकरत सब दूर पराई॥ जो नर अति वन्दी महँ होई। बार हजार पाठ कर सोई निश्चय वन्दी ते छुटि जाई। सत्य वचन मन मानहुँ भाई॥ जापर जोकछु संकट होई। निश्चय देवहि सुमिरै सोई॥ जाकहँ पुत्र होय नहिं भाई। सोनर यो विधि करै उपाई॥ पांच वर्ष सो पाठ करावै। नौरातर में विप्र जिमावै॥ निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी। पुत्र देहि ताकर गुण खानी॥ ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै। विधि समेत पूजन करवावै॥ नित प्रति पाठ करै मनलाई। प्रेम सहित नहिं आन उपाई॥ यह श्री विन्ध्याचल चालीसा।

रंक पढ़त होवै अवनीशा ।। यह जन अचरज मानहु भाई । कृपा दृष्टि जापर हुई जाई ।। जै जै जै जगमातु भवानी । कृपा करहु मोहिपर जन जानी ।।

इति श्री विन्ध्येश्वरी चालीसा समाप्त ।।

अथ विन्ध्येश्वरी स्तोत्र प्रारम्भः ।।

निशुम्भ शुम्भ तर्जनी प्रचण्ड मुण्ड खण्डनी । वनेरणे प्रकाशिनी भजामि विन्ध्य वासिनीम् ।। १ ।। त्रिशूल मुण्ड धारिणी धरा विघात हारिणीं । गृहे गृहे निवासिनी भजामि विन्ध्य वासिनीम् ।। २ ।। दरिद्र दुःख हारिणी सतां विभूति कारिणी । वियोग शोक हारिणी भजामि विन्ध्यवासिनीम् ।। ३ ।। लसत्सु लोल लोचनं प्रकाशदं वर प्रदम् । कपाल शूल धारिणी भजामि विन्ध्यवासिनीम् ।। ४ ।। करे मुदा गदा धरी शिवा शिवः प्रदायिनी । वरां वरा ननाशुभाँ भजामि विन्ध्य वासिनीम् ।। ५ ।। ऋषीन्द्र जामिनीप्रदं त्रिधास्यरूप धारिणी । जले थले निवासिनी भजामिविन्ध्य-वासिनीम् ।। ६ ।। विशिष्ट शिष्ट कारिणी विशाल रूप धारिणी । महोदरे विलासिनी भजामिविन्ध्य वासिनीम् ।।७।। पुरंदरादि सेविता पुरादि वंश खण्डिता । विशुद्ध बुद्धि-कारिणी भजामि विन्ध्यवासिनीम् ।

।। इति ।।

मन्त्र संग्रह ॥

श्री गणेशजीका वेदोक्त मंत्र तथा तन्त्रोक्त मंत्र ॥

ओं गणानांत्वा गणपतिँ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रिय पतिँ हवामहे निधीनांत्वा निधिपतिँ हवामहे वसोमम आह मजानि गर्भधमात्वम जासि गर्भधम् ॥ तन्त्रोक्त मंत्र-ओँ गं गणपतये नमः ॥

नवग्रहोंका वेदोक्त मन्त्र

सूर्यका—ओँ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो यातिभुव नानि पश्यन् ॥ तन्त्रोक्तमंत्र—ओँ घृणि सूर्याय नमः ॥

चन्द्रमाका—ओँ इमन्देवाऽअसपत्नँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते ज्ञान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इम ममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्र मस्यै विशऽएषवोमीराजा सोमो स्मा कं ब्राह्मणानाँ राजा ॥ तंत्रोक्तमंत्र ओंसों सोमायनमः

मंगलका—ओँ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ॥ आपाँ रेताँ सिजिन्वति ॥ तंत्रोक्तमंत्र ओँ अं अंगारकायनमः ॥

बुधका—ओँ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा पूर्तेसँ सृजेथा मयंच । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्त ॥ तंत्रोक्तमंत्र ओँ बुं बुधाय नमः ॥

बृहस्पतिका-ओँ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्वि-भात्तिक्रतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऋतु प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ तंत्रोक्तमंत्र ओँ बृं बृहस्पतये नमः॥

शुक्रका—ओँ अन्नात्परि स्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापति। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्र मन्ध स इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥

तंत्रोक्त मन्त्र--ओँ शुं शुक्राय नमः॥

शनिका मन्त्र—ओँ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभि स्रवन्तुनः॥ तंत्रोक्तमंत्र ओँ शंशनैश्चराय नमः। राहुका मंत्र—ओँ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखाकयाशचिष्ठया वृता॥ तंत्रोक्तमंत्र—ओँ रां राहवेनमः॥ केतुका मंत्र----ओँ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेषसे समुषद्भि रजायथाः॥ तंत्रोक्तमंत्र ओँ कें केतवे नमः।

गायत्री मंत्र॥

ओँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भार्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ओँ॥

विष्णु मन्त्र॥

ओँ नमो भगवते वासुदेवाय॥ बारह अक्षरका मंत्र।

॥ विष्णु मन्त्र॥

आठ अक्षरका—ओँ नमो नारायणाय।

॥ राम मन्त्र ॥

श्रीराम जय राम जय जय राम ॥

सीताराम ॥ राम राम ॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

॥ श्री महामृत्युञ्जय मन्त्र जप करने का विधि ॥

पहले शिवजी का पूजन करले तब संकल्प करे।

ओँ अद्यत्यादि मम शरीरे नाना पीड़ा नीराश द्वारा सद्यः आरोग्य प्राप्त्यर्थं। यजमानके लिये करे तो अमुक यजमानस्य शरीरे नाना पीड़ा नीराश द्वारा सद्यः आरोग्य प्राप्त्यर्थं अमुक सख्यकं श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्रस्य जप महं करिष्यामि।

अपने लिये करे तो करिष्यामि के जगह करिष्ये कहें। तब न्यास करे।

॥ अथ ऋृष्यादि न्यासः ॥

ओं अस्य श्री महा मृत्युञ्जय मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः श्री मृत्युञ्जय रुद्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः हौं वीजं जूं शक्तिः सः कीलकम मृत्युञ्जय प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ओं वसिष्ठर्षये नमः शिरसि, ओं अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे, ओं महा मृत्युञ्जय रूद्र देवतायै नमः हृदये। ओं हौं वीजाय नमः गुह्ये, ओं जूं शक्तये नमः पादयोः, ओं स कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु ॥

अथ कर न्यासः ।। ओं त्र्यम्बकं अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ओं यजामहे तर्जनीभ्यान्नमः । ओं सुगन्धि पुष्टि वर्द्धनं मध्यमाभ्यान्नमः । ओं उर्व्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यांनमः ओं मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिका भ्यान्नमः ओं मामृतात् करतल कर पृष्ठाभ्यान्नमः ।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करे । तब नीचे लिखे हुए ध्यान करे ।

चन्द्रोद्भासित मूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं महत् । हस्ताब्जेन दधत्सुदिव्यम मलं हास्यास्यपङ्के रुहम् ।। सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतलैः पाशाक्ष सूत्राङ्कुशाम् भोजं विभ्रत मक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तं स्मरे ।।१।। हस्ताभ्यां कलशद्वयामृत रसैराप्लावयन्तं शिरोद्वभ्यां तौदधतं मृगाक्षव लयेद्वाभ्यां वहन्तं परम् ।। अङ्कन्यस्त करद्वयामृत घटं कैलाशकान्तं शिवम् स्वछां भोजगतं नवेन्दु मुकुटं देवंत्रि नेत्रं भजे ।।२।।

ओं लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि

ओं हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि

ओं यं वाय्यत्मकं धूपं समर्पयामि

ओं रं तेजो रूपं दीपं समर्पयामि

ओं वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि

ओं सं सर्वात्मकं मन्त्र पुष्पं समर्पयामि

एवं मानसो पचारैः सम्पूजयेत् ॥

इसके बाद जप करे। जपके संख्या पूरा हो जाने पर फिर ऋष्यादि न्यास कर न्यास और हृदयादि न्यास करे। तब जल लेकर—

ओँ गुह्याति गुह्य गोप्तात्वं गृहाणास्मदृकृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्व त्प्रा सादान्महेश्वर ॥

ओँ मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहिमां शरणागतम्। जन्म मृत्यु जरा रो गैः पीड़ितं कर्मबन्धनैः॥ अनेन महा मृत्युञ्जय मन्त्र जपाख्येन महा मृत्युञ्जयः प्रीयताम् ॥

यह बालकर शिव लिङ्गके ऊपर दाहिने भाग जल छोड़े।

॥ अथ महा मृत्युञ्जय कवचम् ॥

॥ श्री भैरव उवाच ॥

शृणु ष्व परमेशानि कवचं मन्मुखो दितम्।
महा मृत्युञ्जयस्यास्य नदेयं परमाद्भूतम् ॥१॥
यं धृत्वाच पठित्वाच यं श्रुत्वा कवचोत्तमम्।
त्रैलोक्याधि पतिर्भूत्वा सुखतोऽस्मि महेश्वरि ॥२॥
तदेववर्णयिष्या मितव प्रीत्या वरानने।
तथापि परमं तत्वं नदात्तव्यं दुरात्मने ॥३॥

ओँ अस्य श्री महा मृत्युञ्जय कवचस्य श्री भैरव ऋषि र्गायत्री छन्दः श्री महा मृत्युञ्जय रुद्रो देवता

ओँ वीजं जूं शक्तिः सः कीलकं हौमिति त त्वं श्री चतुर्वर्ग साधनार्थे पाठे विनियोगः ॥

चन्द्र मण्डल मध्यस्थे रुद्र आले विचित्रिते ।
तत्रस्थं चिन्तये त्साध्यं मृप्यु प्राप्नोति जीवति ॥१॥
ओँ जूंसः हौं शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम ।
श्री शिवो वैललाटश्च ओँ हौं भ्रुवो सदा शिवः ॥२॥
नीलकण्ठो वतानेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छती ॥
त्रिलोचनोऽवताद्गण्डो नासान्मे त्रिपुरान्तकः ॥३॥
मुख पीयूषघट भृदोष्ठौ मे कृत काम्बरः ।
हनुं मे हाटके शानौ मुखं वटुक भैरवः ॥४॥
कन्धरो काल मथनो गलं गण प्रियोऽवतु ॥
स्कन्धौ स्कन्द पिता पातु हस्तौमे गिरिशोऽवतु ॥५॥
नखान्मे गिरिजानाथः पाया दङ्गलिसं युतान् ।
स्तनौ तारापतिः पातु वक्षः पशुपति मंम ॥६॥
कुक्षिं कुवेर वरदः पार्श्वौ मे मारशासनः ।
सर्वः पातु तथानाभिं शूली पृष्ठं ममाऽवतु ॥७॥
शिश्नं मे शंकरः पातु गुह्यं गुह्यक बल्लभः ।
कटिं कालान्तकः पाया दुरू मेऽन्धक घातकः ॥८॥
जाग रूकोऽवताज्जा नू जंघेमे काल भैरवः ।
गुल्फौ पायाज्जटा धारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥९॥

पादादि मूर्ध पर्यन्तं सद्यो जातो ममाऽवतु ।
रक्षा होनं नाम हीनं वपुः पातु मृतेश्वरः ॥१०॥
पूर्वे वल विकरणो दक्षिणे काल शासनः ।
पश्चिमे पार्वतीनाथ उत्तरे मां मनोन्मनः ॥११॥
ऐ शान्यामीश्वरः पाया दाग्ने य्यानग्नि लोचनः
नैऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वाय व्यां वायु वाहनः ॥१२॥
उर्ध्वेबल प्रमथनः पाताले परमेश्वरः ।
दश दिक्षु सदा पातु महा मृत्युञ्जयश्चमाम् ॥१३॥
रणे राज कुले द्युते विप मे प्राण संशये ।
पायादों जूं महारुद्रो देव देवो दशादारः ॥१४॥
प्रभाते पातुमां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ॥
सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां नित्य चेतनः ॥१५॥
अर्ध रात्रे महादेवो निशान्ते मां महोदयः ।
सवदा सर्वतः पातु ओँ जूं सः हौं मृत्युञ्जयः ॥१६॥
इतीदं कवचं नित्यं त्रिपुलोकेषु दुर्लभम् ।
सर्व मन्त्र मयं गुह्यं सर्व तन्त्रेषु गोपितम् ॥१७॥
पुण्यं पुण्य प्रदंदिव्यं देव देवाधि दैवतम् ।
यइदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्ततः ॥१८॥
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्ट सिद्धयः ।
र णे धृत्वा चरे द्युद्धं हत्वा शत्रुं जयं लभेत् ॥१९॥

जयं कृत्वा गृहं देवि सु प्राप्स्यति सुखं पुनः ।
महामये महारोगे महामारी भये तथा ॥२०॥
दुर्भिक्षे शत्रु संहारे पठेत् कवच मादरात् ।
सर्व तत् प्रशमं याति मृत्युञ्जय प्रसादतः ॥२१॥
धनं पुत्रं सुखं लक्ष्मी मा रोग्यं सर्व सम्पदः ।
प्राप्नोति शाधकः सद्यो देवि सत्यं न संशयः ॥२२॥
इतीदं कवचं पुण्यं महा मृत्यञ्जयस्तु ।
गोप्यं सिद्धि प्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयो निवत् ॥२३॥

॥ इति महा मृत्युञ्जय कवचं सम्पूर्णम् ॥

शिव मन्त्र–पांच अक्षरका नमः शिवाय ॥ छ अक्षरका ओँ नमः शिवाय ॥

महामृत्युञ्जयका मंत्र–ओं हौं ओँ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्द्धनं उर्व्वारुक मिवबन्धना न्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ओँ ॥

मृत्युञ्जयका मन्त्र ओँ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्ठि वर्द्धनं उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ लघु मृत्युञ्जयका मंत्र ओँ हौं जूंसः ॥

नर्वाण मंत्र–ऐं हीं क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ।

केवल प्रणवका जप करनेसे ऐहि लौकिक तथा पारलौकिक दोनों सुख प्राप्त होता है ।

भैरवका मंत्र—ओँ ह्रीं बटुकाय आप दुद्धारणाय कुरु कुरुबटुकाय ह्रीँ ओँ नमः शिवाय॥

देवी मंत्र॥

ओँ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ओँ ग्लौं हुँ क्लीँ जूँसः ज्वालय ज्वालल ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ ह्रीं क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वलहं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

श्रीकालीजीकी एकाक्षर मंत्र क्लीँ॥

श्रीलक्ष्मीजीकी एकाक्षर मन्त्र ह्रीं।

सरस्वतीजीकी एकाक्षर मंत्र ऐँ।"

हनुमानजीका मन्त्र—ओँ हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा॥ बारह अक्षरका॥ ओँ नमो भगवते पञ्चवदनाय पूर्वक वि मुखाय सकल शत्रु संहरणाय स्वाहा बत्तीस अक्षरका॥ ओँ श्री हनुमते नमः॥ आठ अक्षरका ओँ महावीराय नमः॥

अथ बगला मुखी मंत्र—जपनेका विधि श्री बगला मुखी देव्यै नमः॥ ओँ अस्य श्री बगला मुखी मंत्रस्य भगवान्नारद ऋषिः। बगला मुखी देवता। मम सन्निहितानां दुष्टानां विरोधिनां वाङ् मुख पद जिह्वा बुद्धीनां स्तम्भ नार्थे श्री बगलामुखी वर प्रसादात्सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः। ओँ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यांनमः ओँ बगला मुखी तर्जनी

भ्यां स्वाहा। ओँ सर्व दुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्। ओँ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् ओं जिह्वां कीलय कीलय कनिष्ठकाभ्यां वौषट्। ओँ बुद्धिं नाशय ओँ ह्रां स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां फट्। इति कर न्यासः। इसी प्रकार हृदयादि न्यासकरे ओँ ह्रीं हृदयाय नमः। इत्यादि। इसके वादध्यान नीचे लिखे मन्त्रसे करें।

ओँ सौ वर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतां शुको ल्लासिनीं हेमाभाङ्ग रुचिं शशांक मुकुटां स्रक्चम्पक स्रग-युताम्।

हस्तै र्मु द्गर पाश वद्ध रसनां सं विभ्रतीं भूषणै र्व्याप्ताङ्गीं वगला मुखीं त्रिजगतां संस्ताम्भिनीं चिन्तये।

॥ अथ मन्त्र ॥

ओँ ह्लीं वगला मुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ओँ स्वाहा।

श्री महावीरजी का मन्त्र जपने का विधि।

ओँ अस्य श्री हनुमन्मंत्रस्य श्री रामचन्द्र ऋषिः अनुष्टुप्छन्द्रः। श्री महावीरो हनुमान् देवता मारुतात्मज इति वीजम्। अंजनी सूनुरिति शक्तिः। ओँ हैं ह्रीं ह्रौं इति कवचन्। ओँ स्वाहा इति कीलकम्। धर्मार्थ मोक्ष साधनार्थे जपे विनियोगः।

॥ अथ करन्यासः ॥

ओँ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ओँ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ओँ ह्रु मध्यमाभ्यां वषट । ओँ ह्रैं अना मिका-भ्यां हुम् । ओँ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ओँ ह्रः कर-तल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करे । -

ओँ ह्रां हृदयाय नमः । इत्यादि ।

॥ अथ ध्यानम् ॥

ओँ ध्याये द्बाल दिवाकर द्युति निभे देवारि दर्पापहं देवेन्द्र प्रमुख प्रशस्त यशसं दे दीप्यमानं रुचा । सुग्रीवादि समस्त वानर युतं सुव्यक्त तत्व प्रियं संरक्ताक्षण लोचनं पवनजं पीताम्बरालं कृतम् ।

उद्यन्मार्तंड कोटि प्रकट रुचियुतं चारु वीरा सनस्थम् ।
मौंजी यज्ञो पवीताऽरुण रुचिर शिखा शोभितं कुण्डलाङ्कम् ।
भक्ताना मिष्टदं तं प्रणत मुनि जनं वेदनाद प्रमोदम् ।
ध्याये देवं विधेयं प्लग कुलपतिं गोष्य दी भूत वार्द्धिम् ।

॥ मन्त्र ॥

ओँ हरि मर्कट मर्कटाय स्वाहा ।

॥ प्रार्थना मन्त्र ॥

मनोजवं मारुत तुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानर यूथ मुख्यं श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये ॥

* आरती संग्रह *

श्री गणपतिजीकी आरती ॥

गणपति सेवा मंगल मेवा सेवासे सब विघ्न टरे । तीन लोक तें तीस कोटि देवता द्वार खड़े सब अर्ज करैं ॥टेक॥ ऋद्धिसिद्धि दक्षिण वाम विराजैं अरु आनन्द सो चमर करैं । धूप दीप और लिये आरती भक्त खड़ा जयकार करै ॥ गणपति० ॥ गुड़के मोदक भोग लगत हैं मूषक वाहन चढ्या सरैं । सौम्य रूप सये गणपतिको विघ्न भाज ज्यों दूर परैं ॥ गण० ॥ भादों मास और शुक्ल चतुर्थी दिन दौं पारा पूर परैं । लिये जन्म गणपति प्रभुजी दुर्गामन आनन्द भरैं ॥ गणप० ॥ अद्भुत बाजा बाज्यो इन्द्रका देव वधू जहँ गान करैं । श्री शङ्करके आनन्द उपज्यो नाम सुन्यो सब विघ्न टरे ॥ गण० ॥ आय विधाता बैठे आसन इन्द्र अप्सरा नृत्य करैं ॥ देख देव ब्रह्माजी जाको विघ्नविनायक नाम धरैं ॥गण०॥ एक दन्त गज वदन विनायक त्रिनैनरूप अनूप धरैं ॥ पगथं भासा उदर पुष्ट है देख चन्द्रमा हास्य करैं ॥ गण० ॥ देशराय श्रीचन्द्र देवको कलाहीन तत्काल करैं । चौदहौं लोकमें फिर गणपति तीन लोकमें राज्य करैं ॥ गण० ॥ उठ प्रभात जब करै ध्यान कोइ जाके कारज सबै सरैं । पूजा काल गावे आरती

जाके शिर यश छत्र फिरैं ॥ गण० ॥ गणपतिकी पूजा पैली करनी काम सबी निर्विघ्न सहैं । राम प्रसाद गणपति जीकी हाथ जोड़कर स्तुति करै ॥ गणपति सेवा मंगलमेवा सेवासे सब विघ्न हरैं ॥ तीन लोक तैंतीस कोटि देवता द्वार खड़े सब अर्ज करैं ॥

श्री विष्णुजीकी आरती ॥

ओँ जय जगदीश हरे । प्रभु जय जगदीश हरे, भक्त जननके सङ्कट क्षणमें दूर करे ॥ ओँ जय० ॥ जो ध्यावे फल पावे दुःख विनसे मनका । सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तनका ॥ ओँ जय० ॥ मातपिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी । तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी ॥ओँ जय०॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी । पर-ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ओँ जय०॥ तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता । मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता ॥ ओँ जय० ॥ तुमहो एक अगोचर सबके प्राणपती । किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती ॥ ओँ जय० ॥ दीनबन्धु दुःख हर्त्ता स्वामी तुम रक्षक मेरे । अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ॥ ओँ जय० ॥ विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा । श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तनकी सेवा ॥ ओँ जय जगदीश हरे प्रभु जय जगदीश हरे ॥

श्री गणेशायनमः ॥

देवीजीकी आरती ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय मङ्गल मूर्ति मैया जय आनन्द करणी । तुमको निशिदिन ध्यावे हरिब्रह्मा शिवरी ॥ टेक ॥ माङ्ग सिन्दूर विराजत टीको मृग मद्को । उज्ज्वलसे दोउ नैना चन्द्र वदन नीको ॥ जय अम्बे० ॥ कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे । रक्त पुष्प वनमाला कण्ठन पर साजे ॥ जय० ॥ केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी । सुरनर मुनि जन सेवत तिनके दुःखहारी ॥ जय० ॥ कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती । कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत समज्योती ॥ जय० ॥ शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती । धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ जय० ॥ चौशठ योगिन गावत नृत्य करत भैरूँ । बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ जय अम्बे० ॥ भुजा चार अतिशोभित खड्गखप्पर धारी । मनवांछित फल पावत सेवत नरनारी ॥ जय० ॥ कञ्चन थाल विराजत अगर कपूरकी वाती । श्रीमालकेतु में राजत कौटीरतनकी ज्योती ॥ जय० ॥

दोहा—या अम्बेकी आरती जो कोई नर गावे ।
भणत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे ।

जय अम्बे गौरी मैया जय मंगल मूर्ति मैया जय आनन्द करणी। तुमको निशि दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय० ॥

श्री सत्यनारायणजी की आरती ॥

जय लक्ष्मी रमणा श्री लक्ष्मी रमणा। सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा ॥ टेक ॥ रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे। नारद करत निरांजन घंटा ध्वनि बाजे ॥ जय० ॥ प्रगट भये कलि कारण द्विजको दरश दियो। बूढ़ो ब्राह्मण वनके कञ्चन महल कियो ॥ जय० ॥ दुर्बल भील कठारो जिनपर कृपाकारी। चन्द्रचूड़ एक राजा जिनको विपती हरि ॥ जय० ॥ वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी। सोफल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी ॥ जय० ॥ भाव भक्तिके कारण क्षण २ में रूप धरो। श्रद्धा धारण कीनी तिनको काम बनो ॥ जय० ॥ ग्वाल बाल संगराजा वनमें भक्ति करी। मनवांछित फल दीन्यो दयालु हरी ॥ जय० ॥ चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल मेवा। धूपदीप तुलसीसे राजी सत देवा ॥ जय० ॥ श्री सत्यनारायणजीकी जो आरती गावे। भणत राम प्रसाद मनवांछित फल पावे ॥ जय लक्ष्मी रमणा श्री लक्ष्मी रमणा ॥

श्री शिवजीकी आरती

जयशिव ओंकारा हर जयशिव ओंकारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥ टेक ॥ एकानन चतुरानन पंचानन राजे। हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ जय शिव० ॥ दोय भुज चार चतुर्भुज दश भुजते सोहे। तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ जय० ॥ अक्षमाला वनमाला रूण्डमाला धारो। चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभ कारी ॥ जय० ॥ श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अङ्ग। सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥ जय० ॥ करमध्ये कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता। जग कर्त्ता जग भर्त्ता जग संहार कर्त्ता ॥ जय० ॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणव अक्षर दो मध्ये ये तीनो एका ॥ जय० ॥ त्रिगुण स्वामोजीकी आरती जो कोइ नर गावे। भणत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फलपावे। जयशिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा हो मन रट शिव ओंकारा। हो शिव गले रूण्ड माला हो शिव आढ़त मृगछाला। हो शिव पीते भंगप्याला ओ शिव रहते मतवाला। हो शिव पारवती प्यारा हो शिव ऊपर जल धारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥ हर हर महादेव ॥

॥ श्रीरामचन्द्रजी की आरती ॥

जय जानकी नाथा श्री रघुनाथा। दोउ कर जोरे विनवौं प्रभु मेरी सुनवाता ॥ टेक ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राणपिता माता। तुम हो सुजन संगति भक्ति-मुक्तिदाता ॥ जय० ॥ चौरासी प्रभु फंद छुड़ाओ मेरो यम त्रासा। निशिदिन प्रभु मोपै राखो अपने संग साथा ॥ जय० ॥ सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन संग चारो भैया। जगमंग ज्योति विराजत शोभा अति लहिया ॥ जय० ॥ हनुमत नाद बजावत नेवर हिमकाता। सुवरण थाल आरती करत कौशल्या माता ॥ जय० ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजत शोभा अति भारी। मनीराम दरशनकी आशा पलपल बलिहारी ॥ जय जानकी नाथा श्री रघुनाथा। दोउ कर जोरे विनवौं प्रभु मेरी सुनवाता ॥

मेरे मन वसिगये राघवराम ॥

क्रीट मुकुट मकरा कृत कुण्डल कठिन धनुष लिये सारंग वान ॥ जाय जनकपुर धनुष उठाये सब भूपनको तोरयो मान। विश्वामित्रके यज्ञ सफल किये गौतम नारि पठायो सुरधाम ॥ सरजूके तीर अयोध्या नगरी जहां विहरें श्री लक्ष्मण राम ॥ तुम जनि विसर जाय मेरे मनते तुम विन बिगर जाय सब काम आशानन्द कहैं करजोरे चौंसठ घड़ि भजो आठोयाम ॥

मेरे मन वसि गये राघव राम ॥

॥ श्री रामायणजी की आरती ॥

आरती श्री रामायणजी की। कीरति कलित ललित सिय पी को ॥ टेक ॥ गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक विज्ञान विशारद ॥ आरती० ॥ सुक सनकादि शेष अरु शारद। बरनि पवन सुत कीरति नीकी ॥ आरती० ॥ गावत वेद पुराण अष्टादश। छओ शास्त्र सब ग्रन्थन कोरस ॥ आरती० ॥ मुनि जन धन संतनको सरबस। सार अंश संमत सबही की ॥ आरती० ॥ गावत संतत शम्भु भवानी। अरु घर संभव मुनि विज्ञानी ॥ आरती० ॥ व्यास आदि कवि बर्ज बखानी। काक भुसुंडी गरुड़के ही की ॥ आरती० ॥ कलि मल हरनि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति-युवती की। दलन रोग भव मूरि अमीकी। तात मात सब विधि तुलसी की ॥ आरती श्री रामायण जी की ॥

कमल नेत्र स्तोतर

श्री कमलनेत्र कटि पीताम्बर अधर मुरली गिरधरम्। मुकुट कुण्डल करूल कुटिया सांवरे राधे वरम्। कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपियनके मन हरम्। पीत वस्त्र गरुड़ बाहन चरण सुख नित सागरम्। करत केल कलोल निशिदिन कुंज भवन उजागरम्। अचर अमर अडोल

निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरम् । दीनानाथ दयालू गिरधर कंस हरणाकंश हरम् । गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवम् । वंशोधर वसुदेव छैटया बली छल्यो हरि वावनम् । जल डूबते गज राख लीनो लंका छेद्यो रावणम् । सप्त द्वीप नव खण्ड चौदा भवन कीने रामजी एक पलम् । द्रोपदोजोकी लाज राखो कहां लो उपमाकरम् । दीना नाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरम् । कविदत्त दास विलास निशिदिन नाम जपत नित नागरम् । प्रथम गुरूजीके चरण बन्दों यस्य ज्ञान प्रकाशितम् । आदि विष्णु जुगादि ब्रह्मा सेवते शिव शङ्करम् । श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव यदुपति केशवम् । श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवम् । श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्री वावनम् । मच्छ कच्छ वराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनम् । मथुरामें केशवराव विराजे गोकुल बालमुकुन्द जी । श्री वृन्दा बनमें मदनमोहन गोपीनाथ गोविन्दजी । धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्री मति अवतरे । धन्य यमुनाका नीर निर्मल ग्वाल बाल सखावरे । नवनीत नागर करत निरतत शिव विरञ्चि मन मोहितम् । कालिन्द्री तट करत क्रीड़ा बाल अद्‌भुत सुन्दरम् । ग्वाल बाल सब सखा विराजै संग राधे भामिनी । बंशी वट तट निकट यमुना

मुरलीकी टेर सुहावनो। भज राघवे रघुवंश उत्तम परम राजकुमारजी। सीताके पति भगतनके गति जगत प्राण आधार जी। जनक राजा पणक राखो धनुष बाण चढ़ावहीं। सती सीता नाम जाके श्रीरामचन्द्र प्रणावहीं। जन्म मथुरा खेल गोकुल नन्दके हरि नन्दनम्। बाल लीला पतित पावन वासुदेव वासुदेवकम्। श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके जो भजे हरिचरणको। भक्ति अपनी देहु मायव भवसागरके तरणको। जगन्नाथ जगदीश स्वामी श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम्। द्वारिकाजीके नाथ श्रीपति केशवम् प्रणामम्यहम्। श्रीकृष्ण अष्टपदी पढ़त निशिदिन विष्णु लोक सगच्छतम् तुरू रामानन्द अवतार स्वामो कविदत्त दास समाप्तम्।

श्री महालक्ष्यष्टकम्।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठ सुरपूजिते। शङ्ख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मि नमोस्तुते। नमस्ते गरूड़ारूढ़े कोला सुर भयंकरि। सर्व पापहरे देवि महा लक्ष्मि०। सर्व सर्व-वरदे सर्व दुष्ट भयङ्करि। सर्व दुःख हरे देवि महालक्ष्मि०। सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भक्ति मुक्ति प्रदायिनी। मन्त्र मूर्ते सदा देवि महा लक्ष्मि०। आद्यन्तरहिते देवि आद्य शक्ति महेश्वरि। योग जे योग संभूते महालक्ष्मि०। स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे। महापाप हरे देवि महा

लक्ष्मि० । पद्मासन स्थिते देवि पर ब्रह्म स्वरूपिणि । पर मेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि० । श्वेताम्बर धरे देवि नाना लङ्कार भूषिते । जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि० । महा लक्ष्म्यष्टक स्तोत्र यः पठेद्भक्तिमान्नरः । सर्व सिद्धि मवाप्नोति राज्य माप्नोति सर्वदा । एक कालं पठेन्नित्यं महापाप विनाशनम् । द्विकालं यः पठेन्नित्यं धन धान्य समन्वितः । त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम् । महालक्ष्मी र्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा । इति ईन्द्र कृतः श्री महालक्ष्म्यष्टकस्तवः सम्पूर्णः ।

यज्ञोपवीत-धारण-मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीतमितिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः ॥

जनेऊको धो प्रत्येक बार मन्त्र बोलकर एक-एक धारण करे।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

जीर्ण-यज्ञोपवीत-त्याग-मन्त्र ।

जीर्ण जनेऊको कण्ठी कर सिर परसे पीठकी ओर निकाले।

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम् ॥

श्रीहनुमत्स्तुति ।

मनोजवंमारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः । आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

अन्नपूर्णा-स्तुति ।

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण-वल्लभे ।
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥

काली-स्तुति ।

काली काली महाकाली कालिके परमेश्वरी ।
सर्वानन्द करे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥

शीतला स्तुति ।

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमोनमः ॥

पीपल-स्तुति ।

अश्वत्थ हुतभुग्वास गोविन्दस्य सदाप्रिय ।
अशेषं हरसे पापं वृक्षराज नमोस्तुते ॥

तुलसी-स्तुति ।

देवैस्त्वां निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः ।
नमो नमस्ते तुलसि पापं हर हरिप्रिये ॥

श्री गणेशाय नमः ।।

पाठकोंसे निवेदन

पाठकजी नित्यकर्म योग पद्धति नामका किताब जो मैं अनेक किताबोंसे संग्रह करके लिखा हूं। सो प्रातःस्मरणसे लेकर देवपूजा तक द्विजातियोंका अधिकार हैं। परञ्च आगे जो मैं लिखता हूँ वह सब वर्णोंका अधिकार हैं। प्रिय पाठक महोदयजी हरेक मनुष्योंके लिये यह परम आवश्यक है, जो इस विषयको प्रतिदिन पढ़कर तथा विषयोंको समझकर नित्य क्रियामें हो इन विषयोंको रखेंगे वे निश्चय ही इस भव रूपी समुद्रको इसी नौकाके द्वारा अल्प ही समयमें पार हो जायँगे। यह जीवन मुक्तका (कुञ्जी) चाभी है। इसलिये जिन महानुभावोंको समझमें न आवें वे कृपा करके कोई विद्वानसे समझ लें। क्योंकि बारम्बार मनुष्य योनी नहीं मिलती है। अतः मनुष्य योनी पाकर संसारके अन्दर जीवन्मुक्त होते हुये अन्तमें परम पदको प्राप्त करना परम आवश्यक हैं।

सत्यपर विचार

इस असार संसारमें सत्य ही सर्व प्रधान है। बिना सत्य के कोइ कार्य सफल नहीं हो सक्ता है। जैसे—वृक्षमें जल विना उनका साखा तथा फल-फूल नहीं हो सकता है इसी तरह जगतमें जितने यज्ञ तप. स्वाध्याय पाठ, पूजा मंत्र तन्त्र इत्यादि यह सब सत्य बिना नहीं हो सकता है। सत्य ही आधार है, सत्य ही परम ब्रह्म ईश्वर है। जिनको ब्रह्मासे लेकर संसारी जीवोंमें ब्रह्मर्षि, राजर्षि, देवर्षि तथा चारों वेद छवों शास्त्र

अठारहों पुराण ईश्वर मानते हैं। वे सत्य ही हैं। इसलिये सत्य ही पर अपना जीवन बिताना चाहिये। अतः चौबिस घण्टे के अन्दरमें सत्य ही का व्यवहार रखना चाहिये। सत्यका अभ्यास करते २ सत्य स्वरूप ही हो जायगा। ये सत्य गुरुका वचन है।

सत्यका मतलब यह है कि वेद पुराण स्मृतियां सत्य गुरुओंका वचन जिनको इन सबोंने कहा है उन्हींका नाम सत्य है सत्य कार्य करते-करते दिन ओ रात्रीमें जो कार्य करें सो सत्य ही करें और असत्यको त्याग करते चलें। सत्यका अभ्यास करते करते आत्मा निर्मल स्वच्छ महान् आत्मा अल्प समय में हो जाता है। जिस मनुष्यका आत्मा सत्य स्वरूप हो जायगा शास्त्रानुकुल उनको ऋद्धियां तथा सिद्धियां वैभव कीर्ति यश ए सबोंको प्राप्त करके अन्तमें मोक्षको प्राप्त कर लेते हैं। उन मनुष्योंके पास दरिद्रा तथा कोई आपत्तियां नहीं आ सकती हैं ए सिद्धान्त है।

इनका दृष्टान्त यह है जहां सूर्यका प्रकाश है, वहां अन्धकार होइ नहीं सकता है, ए सिद्धान्त हैं। जिस जीवका सत्य का अभ्यास सिद्ध हो जाय, वह जीवन मुक्त हो है क्योंकि जीवन मुक्तका सत्यका अभ्यास करना असत्यका त्याग करना यही वेदोंका सिद्धान्त हैं। उसी मनुष्यको जीवन मुक्त कहते हैं। इसलिये पाठकोंसे साञ्जलि प्रार्थना करता हूं, जो इस अल्प समयमें सत्यका अभ्यास करे।

मनुष्य जन्मका उद्देश्य

मनुष्य जो जन्म लेता है, उनमें पांच कर्मेन्द्रिय कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, वाक और पांच ज्ञानेन्द्रिय गुदा मार्ग, लिङ्ग, हाथ,

पाद-पांव, वाणी और मन, बुद्धि, चित्त, स्मृति, अहंकार, पांच प्राण वायु। प्राण अपान, व्यान, उदान, समान। पांच तत्व—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश। चौरासी लाख योनियोंमें सर्वश्रेष्ट मनुष्य योनी है, इसी योनिमें २५ तत्वोंका ज्ञान रहता है। यथा योग तत्वोंसे काम ले सकता है। जिस तत्वोंसे काम जो शास्त्रानुकुल बताये गये हैं, उसी मोताबिक हरेक तत्वोंसे काम ले सकते हैं। तत्त्वोंसे काम लेकर संसार यात्रा सफल हो सकती है। मनुष्य योनिका उद्देश्य है शास्त्रा-नुकुल कार्य करना क्योंकि यह कर्मक्षेत्र है जैसा कर्म किया जायगा। वैसा हो मनुष्य फलाधिकारी होगा। मनुष्य यह लोकमें सुख भोगकर अन्तमें मोक्ष प्राप्त कर सकता है। हरेक मनुष्योंकी कर्त्तव्य यह है कि हम जो संसारमें आये हैं क्या करना चाहिये। इसलिये अपने लक्ष्यके प्राप्तिके लिये प्रतिदिन समयको नियमानुसार प्रोग्राम ऐसा बनावें, जिससे थोड़ा ही समयमें इसी जन्ममें लक्ष्यकी प्राप्ति हो जाय। यदि मनुष्य योनिमें लक्ष्य (मुक्त) नहीं प्राप्त किया तो फिर ८४ लाख योनिमें भ्रमण करना पड़ेगा, पुनः उनके लिये संसार यात्रा विफल हो जायगा। इसलिये सदाचारको धारणकर नित्य संध्या तर्पण, स्वाध्याय, यज्ञ होम, जप प्रणायाम योग आदि नित्य रोज निय-मानुसार करते-करते निश्चय ही लक्ष्यकी प्राप्ति होगी (दृष्टान्त) कोई मनुष्य कलकत्तेसे बम्बईकी यात्रा करेगा तो निश्चय ही बम्बई पहुंच जायगा। उसमें कारणवस कुछ देरी हो जाय अथवा शीघ्र ही पहुंच जाय परञ्च पहुंच जायगा जरूर। यदि कोई यात्रा न करेगा तो पहुंचेगा नहीं। अतः पाठकगणसे मेरी प्रार्थना

है, जैसे—मैं लिख चुका हूं इसी मोताबिक अपना प्रोग्राम बनाकर संसार यात्रा प्रारम्भ करें तो निश्चय ही मनुष्य जन्मका उद्देश्य सफल होगा। यह सिद्धान्त है। जैसे मैं उपरोक्त लिख चुका हूं। तीन महिना अभ्यास लगातार करनेसे स्वयं आत्माकी जागर्त्ति हो जायगी। तीन महिनेके बादसे आत्मा आनन्दके लहरसे प्रफुल्लित होने लगेगा। इसी प्रकार एक बर्ष लगातार अभ्यास करनेसे आत्मा परमानन्दको प्राप्त कर लेगा। जो कार्य करे बाह्य क्रियाको छोड़कर अभ्यन्तर क्रिया करे। जैसे—सतगुरुके आज्ञानुसार अथवा शास्त्रानुसार कार्य करे। जिससे आत्मा प्रफुल्लित हो। आत्मा प्रफुल्लित होनेसे सप्तद्वीप, नवखण्ड, चौदहों भुवनोंमें जो वस्तु दुर्लभ हैं, सो अनायास प्राप्तकर ले सकता है, ये सिद्धान्त हैं। अतः बारम्बार पाठकगणसे प्रार्थना करता हूं जो उपरोक्त नियमानुसार कार्य करें।

सदाचार पर विचार

मनुष्योंके लिये सदाचार ही ऐसी वस्तु है जो अपने लक्ष्यको अति शीघ्र प्राप्त कर सकता है। जो सदाचार रूप रथ बनाकर उसपर सवार होकर संसार यात्रा करेंगे। वह अल्प समयमें ही लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। सदाचारका अर्थ अपने आचारको दिन-रात जो कार्य करे सो शुद्ध, निर्मल, सूक्ष्म मन द्वारा बिचार करें। बाह्य अथवा आभ्यन्तर जो कार्य करे सो शास्त्रानुकूल अथवा गुरुओंके द्वारा जो कहा गया हो, उसी मोताबिक अपना आचारको रक्खे। याने साफ वस्त्र, शुद्ध आहार, शुद्ध ब्यवहार, शुद्ध रहन-सहन, सत्य वार्त्तालाप, पवित्र शरीरको रखना, पवित्र भोजन, सत

शास्त्रोंका अध्ययन, सज्जन मनुष्योंसे वार्त्तालाप करे। इसी प्रकार अभ्यास करते हुए अपने चरित्रपर पूर्ण ख्याल रक्खे, जिससे शीघ्र सच्चरित्रवान् बन जाय। सच्चरित्रवान्का अर्थ है जो कार्य करेंगे स्वाध्याय पूजा, पाठ, यज्ञ, तप, होम आदि सो अति शीघ्र सदाचार रूपी रथ द्वारा लक्ष्यको प्राप्त कर लेंगे। ये सिद्धान्त है। जिस मनुष्यने अपने आचारको ठीक नहीं किया वह मनुष्य कभी भो लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। अतः पाठकोंसे निवेदन करता हूं जो दुराचार दुर्व्यवहार अभक्ष्य भोजन असच्चरित्र असज्जसंग ये सबोंको अति शीघ्र त्याग कर सदाचार रूपी रथपर सवार हो जाय और इसका अभ्यास करते-करते आत्मा शुद्ध निर्मल स्वच्छ हो जायगा। फिर उनको अष्टसिद्धियां नवऋद्धियां स्वयं ही प्राप्त हो जायगी। और संसारके सब भोगोंको भोगकर अन्तमें मोक्षको प्राप्त कर लेंगे।

(पुरुषार्थ)

पुरुषार्थ रूप रथपर सवार होकर संसार यात्रा करेगा जो मनुष्य, सो निश्चय ही लक्ष्य प्राप्त करेगा। पुरुषार्थ ही ऐसा वस्तु है जो यथार्थ रूपसे पुरुषार्थमें आरूढ़ होकर समय व्यतीत करेगा वह ध्रुव सब सिद्धियांको प्राप्त कर सप्तद्वीप नवखण्ड चौदहो भुवनोंमें सब रत्नोंको प्राप्त कर लेगा। पुरुषार्थ किस चीजका नाम है। जो आलस्यको त्यागकर अत्यन्त साहसको धारण कर अपने लक्ष्यको प्राप्तिके लिये कटिवद्ध होकर कार्य करते चलें। यदि कोई रास्तेमें वाधा पहुंचाये तो उनको विचार द्वारा हटाकर आगे बढ़ते चलें तो निश्चय ही लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। ये सिद्धान्त है।

उदाहरण—मार्कण्डेय मुनिको १६ वर्षकी आयु थी। परञ्च पुरुषार्थ द्वारा चिरञ्जीवी हो गये और विश्वामित्रजी क्षत्रिय जातिमें जन्म लिया था, परन्तु पुरुषार्थ द्वारा इसी शरीरसे ब्रह्मर्षि हो गये और भगिरथजी पुरुषार्थ द्वारा गंगाको भूमण्डलमें लाकर अपने पितरोंका उद्धार किया। ध्रुवजी ५ वर्षकी आयु ही में ध्रुव-लोकको प्राप्त कर लिया पुरुषार्थ द्वारा, अतः पाठकगणसे निवेदन करता हूं, जो पुरुषार्थ अमूल्य वस्तु है एस पुरुषार्थ रूप रथपर अवश्य सवार होकर संसार यात्रा करें। जिससे संसारिक भोगोंको भोगकर अन्तमें मोक्षपदको प्राप्त कर लेंगे। यही कारण वसात् कोई त्रुटी होनेपर लक्ष्य प्राप्त न हो सके तो पुरुषार्थको न त्याग करें पुनः विचार द्वारा त्रुटोको निकालकर लक्ष्यके लिये पुरुषार्थ पर आरूढ़ रहें। इस प्रकार बारम्बार अभ्यास करनेसे अवश्य लक्ष्य प्राप्ति हो जायगी।

आलस्य

मनुष्योंके लिये आलस्य ही महाशत्रु है। जिस मनुष्यने आलस्यके वशीभूत हुए, वह कोई कार्य लाभ नहीं कर सकता है और उनके पास दरिद्रता असहिस्णुता, अविचारता, कृपणता आदि आपत्तियां आ जाती हैं तथा मानसिक रोग, शारीरिक रोग, भौतिक रोग इत्यादि बिमारियोंसे पीड़ित होकर अल्प ही समयमें दुःखाग्निमें जलकर यमलोकको पधारते हैं।

अतः पाठकगणसे निवेदन करता हूं, यदि लौकिक सुख और मोक्ष प्राप्त करनेकी इच्छा हो तो प्रथमतः आलस्य रूपी महाशत्रुसे अलग रहें। आलस्यको निर्मूल करनेसे ऐश्वर्यवान्, विद्वान, कीर्ति-

मान्, सुरवान्, पराक्रमी, यशस्वी, तेजस्वी इत्यादि अतिशीघ्र हो जाते हैं और उनके पास सब सिद्धियाँ स्वयं आ जाती हैं। ये सिद्धान्त हैं।

निर्भयता

हरेक मनुष्योंके लिये निर्भयताको धारण करना परमावश्यक हैं। क्योंकि जबतक निर्भय नहीं होंगे, तबतक संसार यात्रा उनके लिये विफल हो जायगा।

निर्भयता किस रीतिसे होगी (इसका विचार) शास्त्रानुकूल तथा राष्ट्रानुकूल तथा वंशानुकूल तथा श्रेष्ठ मनुष्योंके आज्ञानुकूल चलनेसे आत्मा निर्भय हो जाती हैं। छल, कपट, दुराचार, असत्य बोलना, अविश्वास, पाखण्डता, असज्जन मनुष्योंका संग इत्यादि सबोंसे पृथक् रहनेसे निर्भयता होती हैं।

जप, तप, स्वाध्याय, होम, योग समाधि, सच बोलना, दान देना, तीर्थोंका सेवन, देवतोंका दर्शन, गुरुजनोंका आज्ञानुसार चलना, ये सबोंसे आत्मा निर्भय होती हैं। इसलिये पाठकगणसे निवेदन करता हूं जो सर्व प्रथम आत्माको निर्भय बनावे। तब ही लक्ष्यका सिद्ध होगा।

जीवोंपर दया

इस असार संसारमें मनुष्य योनी पाकर जीवोंपर दया करना परमावश्यक है। हरेक जीवोंपर समान भाव रखना अर्थात् भ्रातृ भाव अपने समान भावसे देखना क्योंकि हरेक जीवोंमें विराट रूप भगवानका अंश है। अतः हरेक जीवोंको संतुष्ट रखनेका कोशीस रक्खे। जैसे—अन्नसे, जलसे, धनसे, शरीरसे,

वचनसे, मनसे, जैसे-तैसे जीवोंपर दया रखना परमावश्यक है। पाठकगण! जो जीवोंपर दया नहीं रखते हैं, वह मनुष्य योनी पानेपर भी राक्षसके समान हैं। उनका शीघ्र ही अधः पतन हो होता है। यदी दूसरे जीवोंको संतुष्ट करेंगे तो उनका आत्मा संतुष्ट होकर आशीश देंगे। उनके आर्शीवादसे अपना आत्मा स्वयं प्रफुल्लित होकर लक्ष्य प्राप्तिके लिये निमित्त हो जायगा। इसलिये पाठकगणसे प्रार्थना करता हूं, यदि आपने लक्ष्य प्राप्तिके इच्छुक हों तो हरेक जीवोंको संतुष्ट करे। ऐसा कोई कार्य न करें जिससे दूसरे जीवात्माको कष्ट न हो।

पितृभक्ति

चौरासी लाख योनियोंमें भटकते हुए भगवानकी दयासे मनुष्य योनि पाते हैं। इस योनिमें आकर पितृभक्ति करना अत्यावश्यक है, क्योंकि बिना पितृभक्तिसे इस संसारमें तथा परलोकमें सत सुख प्राप्त नहीं होता है। पितृभक्ति क्या करना चाहिये इनका नियम (१) हरेक मनुष्य पुत्रोंकी इच्छा करते हैं क्योंकि पुत्र हो जानेसे पितरोंका ऋणसे विमुक्त हो जाते हैं। यह शास्त्रोंका सिद्धान्त है। यदि कोई त्रुटि रह जाती है तो उनकी पूर्ति पुत्रोंका करना आवश्यक है तथा कारण वस पितरोंका अधः पतन हो गया हो तो उनसे उद्धार करना तथा पिता का आज्ञानुसार चलना पिताका देहान्त होनेके बाद गया आदि तिर्थोंमें श्राद्ध करना फिर बार्षिक श्राद्ध करना जिससे वंशका वृद्धि हों उसी मोताविक कार्य करना इस नियमसे जो पुत्र कार्य करेंगे उनको अष्ट सिद्धियां नव निद्धियां तथा चौदहों

भुवनोंका सब सुखोंको प्राप्त करके अन्तमें लक्ष्यके द्वारा परम गतिको प्राप्ति कर लेगी यह सिद्धान्त है।

ऋषियोंने पुत्रोंका इच्छा इसलिये किया यदि पिता अपना आत्म सुधारनेके लिये कार्य करते करते लक्ष्य प्राप्त न हो सका और भोग योनियोंमें चला गया तो पुत्रके द्वारा भोग योनियोंसे उद्धार होता है क्योंकि मनुष्य योनि ही कर्म योनि हैं। पाठक गण आज कल ये संस्था चली हैं पिताकी आज्ञाको न पालन करना तथा श्राद्ध आदिमें शास्त्रानुकुल कर्म न करके कुछ कर देना इससे कभी भी भाग्यवस कर्म रूपी मनुष्य योनि पाकर लक्ष्य प्राप्त न हो सकता। अतः पाठकगणसे निवेदन करता हूं ऐसी अमूल्य योनि पाकर पितृभक्ति करना परमावश्यक है। यथा कोई आदमी लक्ष्य प्राप्तिके लिये घोर तपस्या किया परञ्च कोई त्रुटी हो जानेसे लक्ष्य प्राप्त न हो सका उसीके अन्दर ही में उनकी मृत्यु हो गई, फिर उनको योनियोंमें भ्रमण करना पड़ेगा इसलिये पुत्रका काम है जो उन त्र्युटीकी पूर्ति करे जिससे पिताको अनेक योनिमें भ्रमण न करना पड़े क्योंकि पुत्रको ही अधिकार है आत्मा रूप ही पुत्र होते हैं। इस नियमानुसार तथा शास्त्रा-नुसार कार्य करनेसे पितरोंका आत्मा प्रफुल्लित होता है और पुत्रोंको आशीष देता है। इस आशिर्बादसे पुत्र भी इस संसार में सब पदार्थोंको भोगकर अन्तमें मोक्षपदको प्राप्त हो जाते हैं ये शास्त्र सिद्धान्त हैं हो सकता है उस महात्मा योनियोंमें भ्रमण करने से अज्ञानता वस कोई कुकर्म हो जाय तो पन्द्रह आना जो सत्कर्म है उनसे कम हो जायगा क्योंकि और योनियोंमें पूर्ण ज्ञान नहीं होता है जैसे कि किसी महात्माने पन्द्रह आना कार्य सफल

कर लिया हो एक आना त्र्युटी रह गयी हों उसी त्र्युटीके कारण अनेक योनियोंमें जाना परेगा उसी महात्माका सन्तान अपने पुरुषार्थ द्वारा कर्म करके उन महात्माकी त्र्युटीकी पूर्ति कर सकती है और उन महात्माकी त्रुटी पूर्ति हो जानेसे वह महात्मा लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे लक्ष्य प्राप्त कर लेनेके बाद उन महात्माका आत्मा सन्तानोंको आशिर्बाद देंगे उसी आशिर्बाद द्वारा सन्तानका कल्याण होगा। पाठक गण यदि हम शास्त्रानुसार तथा वंशानुसार गुरुओंका कथनानुसार अपने पितरों का भक्ती करेंगे तो हमारे सन्तान भी हमारे लिये भी शास्त्रानुकुल श्राद्ध तर्पण आदि करके मुझे शांति प्राप्ति करायेगी। पाठकगण ! आज कल नयी संस्था चली है जो पितरों का उद्धारके लिये पुत्र क्या करते हैं तो वार्षिक श्राद्ध आदिमें जैसे तैसे ब्राह्मणके निमन्त्रण देकर कुछ भोजन कराकर कुछ दक्षिणा दे दिया और ब्राह्मणसे कहते हैं, महाराज पितरोंको जल देना सो जल्दीसे काम हो जाना चाहिये। ब्राह्मण भो यजमानके कथनानुसार मन्त्रको जैसे तैसे बोलकर कामको पूरा कर देते हैं। क्या इस नियमसे पितरोंका कभी उद्धार हो सकता है, क्या इसीको पितृ-भक्ति कहते, क्या पुत्रोंका यही कर्त्तव्य है ? ये सब शास्त्र विपरीत है इनसे पितरोंका अधःपतन होता है और क्या अपना सत्कर्म किया हुआ भी पुत्रके कारण नष्ट हो जाता है। अतः पाठकगणसे साञ्जलि निवेदन करता हूं जो सन्तानोंका कर्तव्य है जिससे पितरोंका भोग योनिमें से मोक्षको प्राप्त हो जाय ऐसे कार्य करने के लिये सदा तत्पर रहें क्योंकि मनुष्य योनी ही कर्मयोनी है और सब योनियां भोग योनी है। पाठक-

गण, पुत्रोंका इच्छा मनुष्य इसीलिये करते हैं जो सन्तान वंशका तथा हमारा सत्कर्म द्वारा उद्धार करेगा। जो पुत्र पिता और माता का शरीरसे वचनसे और कर्मसे शास्त्रानुकूल भक्ति करके संसार यात्राको पार कर जाता है उनको अपना लक्ष्य भी प्राप्त हो जाता है और पुत्र भी पिताके कार्यको देखकर सुधर जाते हैं और क्या उनके वंशमें जो सन्तान पैदा होती है वह भी सुधर जाता है इसलिये मनुष्य योनि पाकर पितृ और मातृ भक्ति करना परमावश्यक है।

॥ गुरु भक्ति ॥

गुरु भक्ति करना शास्त्रोंमें तथा वेदोंमें और पुराणोंमें आता है यथार्थतः बिना गुरुभक्तिसे परमगति प्राप्ति नहीं होती हैं। परञ्च गुरु किसको मानना चाहिये—गुरु कहते हैं (श्रेष्ठ) बड़ाको, बड़ेके कहनेके मोताविक काम करनेसे प्रायः उच्च पदको प्राप्त कर सकते हैं। इत्यादि अनेकों प्रकारसे गुरु शब्दका व्याख्या अनेको विद्वानने कर चुका है। इसलिये मैं अल्पज्ञ हूं उस मोताबिक लेख लिखने में असमर्थ हूं परञ्च अपने बुद्धिके अनुसार गुरु किसको कहना चाहिये ए पाठकगणके आगे रखता हूं। पाठकगण, अज्ञान रूपी अन्धकारको हटाकर ज्ञान रूपी ज्योतिकी प्रकाश करादे उन्हींका नाम है गुरु। पहला गुरु माता हैं क्योंकि माताने ही सब पदार्थोंका ज्ञान देती हैं। उसके बाद पिता गुरु हैं पिताके द्वारा ही सत् शास्त्रोंका ज्ञान तथा आचार विचार रहन सहन इत्यादि सबोंका ज्ञान होता है। इनके बाद जिनके शास्त्रानुकूल उपदेशसे अज्ञानरूपी हृदयका अन्धकार नाश हो जाता है और

उन्हींके उपदेशानुसार पुरुषार्थ द्वारा लक्ष्य प्राप्त हो जाता है उसीका नाम गुरु है।

पाठकगण, एक गुरु शब्दसे अनेक अर्थ आता है, जैसे कोई पशु-पक्षीसे लेकर मनुष्योंमें दूसरे धर्मको मानने वाला तथा स्वधर्मावलम्बी जो हो उनके उपदेशसे तथा देखनेसे मेरे भविष्यके लिये कल्याणप्रद हो तो वह भी हमारे लिये पूज्यनीय हैं वह भी गुरु है अतः जिसके द्वारा हमारा कल्याण हो यथाशक्ति के अनुसार उनका सेवा करना आज्ञा मोताबिक रहना हमारे लिये परम धर्म है इससे ऐहिलौकिक और पारलौकिक दोनों सुखको भोगकर परम पदको प्राप्त हो जाता है फिर उनका संसारमें आवा-गमन नहीं होता है यह शास्त्र सिद्धान्त है।

जो शास्त्रका अध्ययन किया हो और शास्त्रानुकूल चलता हो और ब्राह्मण हो ऊन्हींसे मन्त्र ग्रहण करना चाहिये।

देवभक्ति

देवभक्तिसे क्या लाभ होता है और न करनेसे क्या हानि होती है।

इस असार संसारमें मनुष्य योनि पाकर सर्व प्रथम देव-ताओंमें प्रेम रखना चाहिये। संसारके अन्दर जितने पदार्थ हैं, उनसे मनको हटाकर जिस देवतामें अपना स्नेह हों उनका स्मरण ध्यान चिन्तन पाठ पूजा जप आदि करनेसे वह देवता प्रसन्न हो जाते हैं देवता प्रसन्न होनेसे आशिष देते हैं और उन आशीर्वादसे उस जीवको अष्टसिद्धियां नवनिद्धियां प्राप्ति हो जाती हैं तथा ऐहिलौकिक तथा पारिलौकिक सब सुखों को प्राप्त कर उन्हीं देवताके द्वारा सुगम रास्तासे अल्प समयमें

परमपद को प्राप्त कर लेते हैं। देवता कैसे प्रसन्न होंगे इनका क्या नियम है। पाठक गण! हमारे पूर्वज ऋषि प्रणित स्मृतियों में तथा वेदोंमें और पुराणोंमें बताये हैं जो तंत्र मंत्र यंत्र आदि से देवता प्रसन्न होते हैं और सिद्धि हो जाते हैं परञ्च जब तक शास्त्रानुकुल नियमसे देवताओंको भक्ति न करेंगे तब तक वह प्रसन्न नहीं हो सकते हैं।

जो मनुष्य देवताओंमें प्रेम न रख कर एहि संसारिक पदार्थों में प्रेम रखते हैं उनको न संसार ही का सुख होता है न परलोक का क्योंकि अन्त समयमें धनसे लेकर अपना शरीर भी काम नहीं आता है। तब वह जीव अत्यन्त दुःखी होकर बारम्बार सिरको पीटते हुये हाहाकार करके प्राण त्याग कर देते हैं और अनेक भोग योनियोंमें बारम्बार भ्रमण करना पड़ता है फिर उस जीवोंका उद्धार होना अति कठिन हो जाता है। इसलिये यदि मनुष्य योनिमें आया हो तो सबसे पहले देवताओंका आश्रय में जाओ उनके आश्रयमें जानेसे ऐहि लौकिक पारलौकिक दोनों सुखोंको प्राप्त कर अन्तमें लक्ष्यका प्राप्ति हो जायगा। ए शास्त्र सिद्धान्त है। जैसे देवर्षि नारद वशिष्ठ चारो कुमार सनक सनन्दन सनत सनत कुमार भृगु विश्वामित्र राजर्षि परशुराम अत्रि अंगिरा आदि भक्तोंमें ध्रुव प्रह्लाद उद्धव विदुर आदि ज्ञानियोंमें जनक सुकदेव कपिल देव आदि और जीन जिन महापुरुषोंका महान् आत्मा हुआ है और हैं वे सबोंने भी देवताओंका आश्रय द्वारा ही उच्च पदको प्राप्ति किया अतः मैं साञ्जलि निवेदन कर कहता हूं अमूल्य मनुष्य योनि पाकर देव देवियोंकी भक्ति अवश्य करें।

सत्सङ्ग

प्र०—सत्संग से क्या लाभ होता है और दुर्जन संग से क्या हानि होती है।

उ०—इस असार संसारमें सत्संग ही सार है। क्योंकि हरेक जीवों की इच्छा रहती है जो हमारा सुखमय समय व्यतीत होते हुए अन्त में परमसुखको प्राप्त कर लूं परंच इनका उपाय क्या है तो सत्संग। विना सत्संगसे जीवोंको सुख प्राप्त होना अति दुस्तर है। जिस जीवको सुख प्राप्त हुआ है सत्संग द्वारा ही। सत्संग ही ऐसा पदार्थ है जो बड़े पापीसे पापी बड़े अज्ञानीसे अज्ञानीको भी क्षणमात्र महान् पुरुषोंका संग होनेसे ऐहिलौकिक सुखको प्राप्त कर अन्तमें परम पदको प्राप्त कर लिया। यथार्थमें विचारदृष्टिसे देखा जाय जो सत्संगसे बढ़कर कोई पदार्थ ही नहीं है। स्वर्गका सुख अथवा मोक्षका सुख भी सत्संगके बराबर नहीं है। ये चारो वेद, छवो शास्त्र, अठारहो पुराण ऋषिप्रणित धर्मशास्त्र आदियोंमें सत्संगकी महिमा वर्णन किया है। सत्संग शब्द का क्या अर्थ है सज्जन पुरुषोंका सत्संग अर्थात् सत ही जिनका व्यवहार है उन महान् पुरुषोंके साथ रहना, बैठना, वार्त्तालाप करना, उनकी आज्ञाको पालन करना, उन महान् पुरुषोंके कथनानुसार कर्म करना इत्यादि। ऐसा कार्य करनेमें सत्रूप ही कम हो जाता है तब उनके पास ऋद्धि सिद्धि तथा चौदहो भुवनोंका सब पदार्थ स्वयं आ जाता है।

खोटे भी अच्छेका सत्संग करते हैं तो उनका खोटापना चला जाता है और अच्छे बन जाते हैं। और (सत) अच्छा

कर्म उनका संग करना अर्थात् अच्छा कर्म करना शास्त्रानुकूल महान् आत्मा है। जिनका उनके कथनानुसार कर्म करना। सत्संग ही मोक्षके चार दरवाजेंमें एक दरवाजा है। पाठकगण! यदि संसाररूपी समुद्रसे पार होनेकी इच्छा हों तो उपर लेखानुसार (सत्संग) का आधार लेनेसे अल्प ही समयमें दुस्तर संसार समुद्रसे पार हो जायंगे। जैसे किसी गौ की खुर कीचरपर परने से चिन्ह हो जाता है उन पर पानी पड़नेसे अटक जाता है उनको पार होना सुलभ होता है वैसे ही ए दुस्तर संसार रूपी समुद्रको पार होनेमें अति सुलभ हो जाता है। दुर्जन पुरुषोंका संग भूलसे भी नहीं करना चाहिए क्योंकि उनका संग करनेसे ऐहि-लौकिक पारलौकिक दोनों बिगड़ जाता है और उन जीवको चौरासी लाख योनियोंमें बारम्बार भटकना पड़ता है। फिर उनके लिए संसार-यात्रासे उद्धार होना अति कठिन हो जायगा। इसलिए दुर्जनके साथ रहन-सहन वार्त्ता आदि न करें।

विचार

इस संसारमें प्राणियोंके अन्दर मनुष्य ही में विचार है। इसलिये मानव जातियोंके लिये सर्व प्रथम विचार द्वारा हो कार्य करना आवश्यक है विचार द्वारा जो कार्य किया जाता है वही सफल होता है। यदि कारण वस कोई कार्य करनेमें स्वयं बिचार करनेमें संशय हो जाय तो महान् पुरुषोंके द्वारा अथवा शास्त्रानुकुल विचारसे कार्य सम्पादन करें। किन्तु बिना विचारसे कार्य न करें, बिना विचारसे कार्य जो किया जाता है वह बिफल हो जाता है और इस लोकमें तथा परलोकमें दुःख दायक होता

है और जो शास्त्रानुकुल तथा श्रेष्ठ जनोंके विचारानुकुल अथवा अपने स्वस्थ चित्तसे विचार कर जो काम किया जायगा वह इस लोकमें तथा परलोकमें दोनों स्थानोंमें सुख दायक होता है और उनका लक्ष्य सिद्ध हो जाता है। विचार ही ऐसा पदार्थ हैं जो अति कठीनसे कठिन कार्य अति सुगम हो जाता है। विचार द्वारा ही बुद्धिकी प्रकाश होती है विचार द्वारा ही सत्य और असत्यका निर्णय होता है विचार द्वारा ही आत्म ज्ञान होता है। विचार द्वारा ही असम्भव कार्य भी हो जाता है और क्या इस असार संसारमें जो जो महान् पुरुष हो चुके हैं अथवा जो जीवन मुक्त पदको प्राप्त कर चुका है तथा चिरजीवी पदको लाभकर लिया है और परम पदको प्राप्त कर लिया है सो सब विचार द्वारा ही। पाठक गण विचार ही मोक्षका दूसरा फाटक है। अतः मैं विवेदन करता हूं जो अलभ्य मनुष्य योनि पाकर जो काम करे सो अच्छा विचार द्वारा ही। जैसे—दूध जल मिलाहुआ हंसके सामने रखनेसे हंस दूधको ग्रहण कर लेते हैं और जलको छोड़ देते हैं ऐसे ही मानव जातियोंको चाहिये खराब विचारको त्याग दें, और अच्छा विचारको ग्रहण करें।

सम दम

बड़े भाग्यसे मनुष्य योनि होता है जो देवता भी सदा इच्छा करते रहते जो भारतवर्षके अन्दर मनुष्य योनि पावें। ऐसी मनुष्य योनि पाकर इन्द्रियोंका दमन करना आवश्यक हैं, क्योंकि जब तक इन्द्रियोंका दमन न करेंगे तब तक कोई कार्य सफल नहीं हो सकता है इन्द्रियोंका दमनका अर्थ है। इस शरीरके अन्दर ग्यारह इन्द्रियाँ है पांच कर्मेन्द्रिय पाँच ज्ञाने-

न्द्रिय और ग्यारहमा हैं मन । मन ही कर्मेन्द्रिय ज्ञानेन्द्रिया ये दोनों इन्द्रियोंका राजा है जब तक मन आधीन नहीं होगा तब सक कोई कार्य सफलीभूत नहीं होगा। इन्द्रियोंका शत्रु कौन है तो काम क्रोध, मोह मद लोभ और मात्सर्य इन शत्रुओंको पराजय करने वाला मन है इसलिये मनको अपने कण्ट्रोलमें लाना परमावश्यक है। जो मनको अपने कण्ट्रोलमें नहीं लाते उनको सब इन्द्रियां विगड़ जाती है और बिना राजाका राज्य देखकर छवों शत्रुओंने उन जीवको अपने आधिन कर लेते हैं तब उन जोवका इस संसार चक्रसे उद्धार होना अति कठिन हो जाता है मन ही के द्वारा मनुष्य परम पदको पाता है अथवा मन ही के द्वारा नरकगामी होते हैं। इसलिये मनको दमन करते हुए समान दृष्टि भावसे संसारके अन्दर समय व्यतीत करें। यदि मन बहुत चञ्चल होता है परञ्च उनको आत्माके आधीन रखे कभी भी मनको स्वतन्त्र न होने दे। जैसे घोड़के सवार घोड़ा बहुत वेगसे चला जा रहा है परञ्च झटसे घोड़ेका वेगको सियाना सबार बागडोर द्वारा रोककर काबू कर लेता है वैसे ही मनका वेग आत्माके आधीन होने से रुक जाता है। मनके आंधी न होनेसे दसों इन्द्रियाँ स्वयं आधिन हो जाती है और शास्त्रानुकुल तथा नियमानुकुल अपने अपने विषयोंमें विचरते रहते हैं पाठक गण इस नियमानुसार जो मनुष्य कार्य करेंगे उनको कोई आपत्तियाँ न आयगी और वह संसारोक भोगोंको भोगते हुये भी बन्धनमें न पड़ेंगे और अन्तमें मोक्ष पदको प्राप्त कर लेंगे। ए शास्त्र सिद्धान्त है और मोक्षका तीसरा फाटक हैं !

सन्तोष

मानव जातियोंके लिये सब धनोंमें से प्रधान धन है संतोष। जिन मनुष्यके अन्दर सन्तोष है वही बलवान, बुद्धिवान, धनवान ज्ञानवान है। जैसे बनमें रहनेवाले हाथी संतोषको अवलम्बन करके सुखा हुआ घास पात आदि खाकर रहते हैं परञ्च बड़ा बलवान होते हैं सर्प हवाकी अहार लेकर रहते हैं तो वह भी बलवात होते हैं और ऋषियोंने कंद मूल खाकर वनमें समय को व्यतीत करते हैं तो वे कैसे प्रतापी होते हैं। पाठक गण इसलिये संतोष सब धनोंमें से प्रधान धन हैं।

अतः हरेक मनुष्योंका कर्त्तव्य हैं जो कार्य करे सांसारिक कार्य व्यापार जप तप पूजा पाठ अध्ययन आदि उनमें उद्योग परिश्रम कार्य क्लेश वाक क्लेश मानसिक क्लेश आर्थिक क्लेश आदि करनेपर अथवा होनेपर भी सन्तोषको त्याग न करें। क्योंकि सन्तोष ही द्वारा आपत्तियां विपत्तियां और हरेक तरहकी झंझट आदि दूर हो जाती है और सन्तोषी महान पुरुषोंकी आत्मा परम सुखी रहता है। जिन मनुष्योंके अन्दर सन्तोष नहीं हैं उनको ऐहि संसारिक कार्यमें व्यापार जप तप पूजा पाठ आदि में अति परिश्रम करनेपर भी उनकी आत्मा दुःख ही रहता है और सुख प्राप्त होना उनके लिये असम्भव होगा क्योंकि असन्तोषके कारण उनकी आत्मा अशान्त रहते हैं तब सुख कैसे प्राप्त हो जब तक आत्मा शान्त न होगा तबतक सुख होना ही असम्भव है। पाठकगण इसलिये मानव जातियोंके लिये सन्तोषको धारण करना परमावश्यक है और मोक्षका चारिमा फाटक है॥

पाठकगण मोक्ष पाने की चार उपाय हैं। सत्संग १ विचार २—इन्द्रियोंका निग्रह ३—समदम ४—सन्तोष। इन चारोंमेंसे एकको भी दृढ़ता पूर्वक जो धारण कर लेते हैं उनको स्वयं ही चारो आपसे आप ग्रहण हो जाता है फिर उनके मोक्ष पदको प्राप्त होना अति सुलभ हो जाता है।

प्रालब्ध कर्म

प्रारब्ध कर्म द्वारा ही जीवोंका जन्म मरण होता है संसारके अन्दर चौरासी लाख योनियोंमें तथा चौदहो भुवनके अन्दर जिस योनियोंमें जाते हैं सो प्रारब्ध कर्मके द्वारा ही और सुख दुःखका भोग जो करना परता है सो प्रारब्ध कर्मके द्वारा ही जब तक कर्म रहेगा तब तक आवागमनसे छुटकारा पाना कठिन है। पाठकगण इसलिये मानव जातियोंके लिये ये शोचनीय हैं जो चौरासी लाख यनियोंमें अलभ्य मनुष्य शरीर पाकर आवागमनका चक्कर में से उद्धार नहीं हुआ तो फिर दूसरी योनियोंसे उद्धार होना असम्भव हैं क्योंकि और योनियां भोग योनियां हैं। परब्ध कर्म द्वारा ही आवागमनसे विमुक्त होते हैं। ऐसा कौन कर्म है जो कर्म करनेसे प्रारब्ध कर्मका भोग न करना परे तथा आवागमनसे छुटकारा पावे। पाठकगण वह है निष्काम कर्म क्योंकि मनुष्य योनि होता है। शास्त्रानुकूल कर्म करनेके लिये इसलिये जो कर्म करे सो निष्काम कर्म करे जिन देवताओंका तथा पितरोंका और अन्य देव देवियां आदिका कर्म करे सो उन्हींको अर्पण कर दें ऐसे करनेसे कर्म करनेवालेका पास कर्म नहीं रहता है तब वह कर्मके बन्धनमें नहीं फँसता है फिर उनके लिये मोक्ष पदको प्राप्त करना अति सुगम हो जाता है। प्रारब्ध कर्म किसको कहते हैं तो पहिले

जन्मका किया हुआ कर्म प्रारब्ध कर्म कहलाता है उसी कर्मके द्वारा अनेक योनियोंमें भटकते हुए ईश्वरकी दया दृष्टिसे मनुष्य योनिमें आता है क्योंकि मनुष्य योनि पाकर आवागमनसे विमुक्त हो जायँगे ऐसे अलभ्य मनुष्ययोनिका प्रादुर्भावके से होता है सो बतलाता हूँ जब नर और नारी का संयोग होता है तब रज और वीर्य दोनों एकत्रित होनेसे पोन्डाकार जीव होते हैं पुनः क्रमशः उनका वृद्धि होने लगती हैं छ महीनोमें सब अंग बन जाता है सातवें महीनामें जीवका ज्ञान हो जाता है तब जीव मलमूत्र मय्या खून आदियोंसे वेष्टित होकर अनेकों दुःख भोगते हैं और अनेक जन्मोंका किया हुआ कर्म स्मरण होता है। तब वह जीव ईश्वरसे प्रार्थना करता है हे भगवान् ईश दुःखसे उद्धार करो फीर मैं ऐसा कर्म न करूंगा सोगन्द (सपत) करता हूँ इसी प्रकार अति दुःखी होकर बहुत करुणासे भगवानसे विनय करता है तब दीन दयालु प्रभुने उन जीवको उस गर्भ रूपी दुःखसे विमुक्त कर देते हैं परञ्च वह जीव गर्भसे निकलनेपर प्रतिज्ञा भूल जाती है और संसार चक्रमें फँस जाते हैं इसलिये पाठकगणसे प्रार्थना करता हूँ ऐसा अमूल्य मनुष्य योनि पाकर जन्म मरणसे विमुक्त नहीं हुआ तो फिर बारम्बार शिर धुन २ कर पछताना पड़ेगा अतः शास्त्रानुकूल निष्कर्म कर्मके द्वारा प्रारब्ध कर्मको निर्मूल कर परम पदको प्राप्त करें क्योंकि कर्मानुसारही जन्म मरणका चक्रमें परता है इसलिये ऐसा कर्म करे जिससे प्रारब्ध कर्म बने नहीं।

योग

इस संसारमें अमूल्य मनुष्य योनि पाकर जन्म मरणके चक्करसे विमुक्त होनेका मुख्य उपाय है योग। योग ही द्वारा

परम पदको प्राप्त होता है। दो चीजको एक बना देना उसीका नाम है योग। इस शरीरके अन्दर जीवात्मा और परमात्मा ए दोनोंका वास है जोवात्माको परमात्मासे मिलानेका विधि। चतुर्दल कमलसे जोवात्मा को उठावें। ईड़ा पिंगला और सूखूम्ना ऐ तीन नाड़ियां हैं इनमेंसे ईड़ा नाड़ीके द्वारा उठाकर षड़दल कमलदल में जाकर विश्राम दे वह स्थान है नाभी। फिर अष्टदल कमलमें विश्राम दे वह स्थान है हृदय फिर द्वादश कमलमें विश्राम दे वह है कंठ पुनः द्विदल कमलमें विश्राम दे वह स्थान है दोनों भ्रूवोंके बीच तब जाकर सहश्रदल कमलमें (ब्रह्माण्डमे) स्थित जो परमात्मा ऊनमें जीवात्माको मिला दे जबतक समाधि रखे तबतक सूखुम्ना नाड़ोसे काम ले फिर जीवात्माको परमात्मासे अलग करे तो पिंगला नाड़ी द्वारा द्विदल कमल द्वादश कमल अष्टदल कमल षट्दल कमलमें ठहराये हुए चतुर्दल कमलमें स्थित कर दे ये युक्तियां पूर्ण ज्ञानवानोंके लिए है अज्ञानियोंके लिए नहीं क्योंकि श्वांसाको एकाएक उठानेसे प्राण निकल जाता है। अतः ए ज्ञान जिनको पूर्ण है ऐसे विद्वानसे शिक्षा लेकर कार्य करें।

पाठकगण! जीवात्माका वास है नाभीसे नीचे और पेशाब मार्गसे ऊपर वहां पर चार दलका कमल है वहीं पर। और सूतासे भी सूक्षम है तथा सर्पाकारके समान अढ़ाई बार लपेटा हुआ रहता है। और परमात्माका वासस्थान है। ब्रह्माण्डमें (शिर में वहां हजार दलका कमल है ऊसी में।

फिर मानव-जातियों को रोज अभ्यास करना चाहिये जो जीवात्माको उठाकर परमात्मासे मिलावे। दोनों एक हो जानेसे

वह आत्मा अजर अमर हो जाते हैं फिर उस जीवात्माको संसार के चक्रमें नहीं आना पड़ता है और अन्त समयमें अभ्यासके द्वारा परम पदको पा जाता है। क्योंकि जिस वस्तुका अभ्यास बन जाता है वह नहीं छूटता है। इसीलिए रोज अभ्यास करें। थोड़ा थोड़ा अभ्यास पहले करें फिर उस अभ्यासको बढ़ाते जायं। ऐसा करनेसे पूर्ण अभ्यास हो जायगा। पूर्ण अभ्यास होने से स्वयं ही अन्त समयमें अभ्यासके कारण जीवात्मा परमात्मा में मिल जायेगा। तब उस जीवका आवागमन होगा नहीं और परम कल्याणप्रद जो मोक्ष उनको प्राप्त कर लेंगे। यदि आप कहेंगे जो योग-कर्म करनेसे सांसारिक कार्य न कर सकेंगे सो भूल है क्योंकि योगारूढ़ होने पर हरएक कार्य कर सकते हैं क्योंकि योग कर्म तो है आभ्यान्तरिक अर्थात् भीतर का बाह्य-कर्म अर्थात् बाहरी कर्म करनेमें कोई योग द्वारा बाधा नहीं होगा योगी महात्माओंको जब संकल्प विकल्प मनमें पैदा होती है तब वे महात्मा लोगोंने योग द्वारा परमात्मामें लीन हो जाते हैं फिर उन लोगोंको संकल्प विकल्प द्वारा भ्रष्ट कर्मोंका फला-फल नहीं होता है क्योंकि परमात्मामें लीन होनेसे कर्म रहता ही नहीं तब फलाफल हो क्यों ?

योग द्वारा जब जीवात्माको परमात्मामें तल्लीन कर देते है तब बाह्य ज्ञान रहता है नहीं। उस अवस्थाको समाधि कहते हैं। परञ्च योगी अर्थात् योग कर्म करनेवाले जितना समयका समाधि लगाता है उतना ही समय तक समाधि रहता है इसका कारण है मनका संकल्प। जब योगीको किसी विघ्नके कारण योग कर्म भ्रष्ट होने लगता है उसी क्षण परमात्मामें लीन होकर समाधिस्थ हो जाते हैं।

समाधि द्वारा ही आत्मा शान्त होता है। आत्मा शान्त होनेसे परम शान्त जो मोक्ष है उस पदको प्राप्त हो जाते हैं। पाठकगण! समाधि केवल जीवात्मा को परमात्मासे मिला दे उसीका नाम नहीं है। समाधि हरएक पदार्थमें लगा सकते हैं। जैसे कोई भगवानका नाम जपते हैं और मनको हर एक पदार्थ से हटाकर नाममें लगा दिया उसीका नाम हैं समाधि। यथार्थतः समाधिका अर्थ है एकाग्र चित्त करना। वह कि संसारिक विषय हो अथवा परमार्थिक हो परञ्च मानव जातियोंके लिये संसारिक विषयसे मनको हटाकर परमार्थिक कार्यमें एकाग्र चित्तका अभ्यासकरे ऐसे अभ्यास करनेसे समाधि द्वारा परमपदको प्राप्त कर लेंगे।

ध्यानके द्वारा परमपदको प्राप्त होता है परञ्च पद्मासन लगाकर दोनों आंखोंको मीच (बन्दकर बैठ जाना उसका नाम ध्यान नहीं है। ध्यानका अर्थ है चिन्तन स्मरण। जिस देवताका अथवा देवियोंको ध्यान करे उन देव देवियोंकी मूर्ति साक्षात्कार हो जायँ यथार्थतः सच्चा ध्यान होनेसे उन देव देवियोंसे साक्षात् वार्तालाप होता है और ऐहि सांसारिक पदार्थोंको भोगकर उन्हीं देव देवियोंके द्वारा परमपद जो मोक्ष उनको प्राप्त कर लेता है। पाठकगण! एसे अमूल्य मनुष्य योनि पाकर हरएक मानवोंके लिए परम आवश्यक है ध्यान करना। पाठकगण! योग समाधि और ध्यान ये तीनों एक ही पदार्थ हैं इनमें जिनको जिसमें रुचि हो उसी पदको अवलम्बन कर ले। उसी द्वारा परमपदको प्राप्त कर लेंगे ये शास्त्र सिद्धान्त हैं।

देवोंका साक्षात्कार

देवतायें तथा देवियोंका साक्षात्कार तीन प्रकारसे होता है। एक तो जिन इष्टदेव और देवियोंकी ध्यान करते हुए मग्न हो जाते हैं उन देवियोंकी शक्ति ध्यान करनेवालेमें प्रवेश हो जाती हैं फिर उन शक्तिके द्वारा सांसारिक सब कार्योंका सम्पन्न कर अन्तमें उन देव देवियोंका साक्षात्कार हो जाते हैं फिर उन्हीं देव देवियोंके द्वारा परमपदको प्राप्त कर लेते हैं। यद्यपि संसारिक कार्य लेना होता है तो उन देव देवियोंकी प्रेरणासे उन कार्यको सम्पन्न कराते हैं परञ्च उनका फलाफल उन जीवको नहीं होता है। क्योंकि देवताओंकी प्रेरणासे कार्य होता है इसलिये उन जीवको फलाफल नहीं होता है। दूसरा प्रकार है तद्रूप अर्थात् जिन देव देवियोंकी स्वरूपका ध्यान प्रति क्षण करेंगे उन्हीं देव देवियोंका रूप हो जायँगे। तब इन देव देवियोंकी शक्ति भी उनमें आ जायगी फिर उन देव देवियोंका साक्षात्कार क्या तद्रूप ही हो जायगा तब उन जीवोंके लिए सांसारिक कार्य विना प्रयास ही हो जावेगा और अन्तमें अति सुगम रस्तासे परमपदको लाभ कर लेंगे। तीसरा प्रकार है प्रगट। पाठकगण! जिन देवियोंकी जिस प्रकारकी भावना करते हैं उसी भावना मोताबिक वह देव देवियां प्रगट होती हैं फिर उन जीवोंका मनोभावना पूरा कर देते हैं और अन्त समयमें उन्हीं देव देवियोंके द्वारा आवागमनसे छुटकारा पा जाते हैं। परञ्च देव योनिमें भी पूर्ण ईश्वरी अंश सबोंमें नहीं रहती हैं। जिनमें जितनौ अंश है उसी मोताबिक वह कार्य सफल होता है किन्तु थोड़ा अंश जिनमें है वह थोड़ा ही समयमें प्रसन्न

होते हैं और जिनमें पूर्ण अंश हैं उन देव देवियोंको प्रसन्न करनेमें समय लगता है। इसलिए अवेश प्रवेश और प्रकट सच्चे हृदयसे किया जाय तो निश्चय ही अवेश प्रवेश और प्रगट ईश्वरी अंशका हो जाता है ए शास्त्र सिद्धान्त हैं।

आहार कैसा होना चाहिये

सर्व प्रथम मानव जातियोंके लिये आहारमें ध्यान रखना परमावश्यक है क्योंकि आहार ही द्वारा बल वीर्य आरोग्यता और मृत्यु इत्यादि होता है। यद्यपि शास्त्रोंमें सात्विक राजस और तामस आहार लिखा है परञ्च सात्विक आहार करनेसे बुद्धिकी बृद्धि होती है। तथा बल वीर्य बढ़ता है और पूरा समय होनेपर मृत्यु होती है। बुद्धिकी बृद्धि होनेसे अच्छा विचार होता है अच्छा विचार होनेसे ज्ञान होता है ज्ञान होने से संसारिक सब कार्य करते हुये भी अन्तमें ज्ञान द्वारा ही संसारी बन्धनसे विमुक्त हो जाते हैं अर्थात् आवागमनका चक्करसे छुटकारा पा जाता है। सात्विक आहारहै हलका पदार्थ जो भोजन करनेसे शीघ्र परिपक्व हो जाय और मनमें विकार को प्राप्त न करें और थोड़ा आहार करे जिससे शरीरके अन्दर इन्द्रियाँ विकृत न हों। पामित अहार करनेसे अनेक गुण लाभ होता है। आलस्य तथा हिंसा आदि नहीं होती हैं। पाठक-गण! आप कहेगें जो हिंसा शब्दसे तो तामसी आहार अर्थात् राक्षसी आहारका ज्ञान होता है सो यहाँ हिंसा शब्द हतोहतः का तात्पर्य नहीं है। वेदका वाक्य है जो (सकलं ब्रह्म मयं जगत्) संसारोंके अन्दर सब पदार्थ ब्रह्म रूप जीव हैं। तब तो जो पदार्थ भोजन करेंगे सो तो जीव ही हुआ तब

जीवको भोजन कैसे करे परञ्च जीव तो हैं लेकिन एक चेतन पदार्थ है एक जढ़ पदार्थ है चेतन पदार्थमें साक्षात् जीव मालूम होता है और जढ़ पदार्थ में साक्षात् जीव मालूम नहीं होता है इस लिये जढ़ पदार्थको निर्जीव कहते हैं अतः जढ़ पदार्थको भोजन करनेसे हिंसा नहीं समझी जाती है। पाठक गण ! यथार्थतः विचार द्वारा देखा जाय तो जढ़ पदार्थमें भी जीव है अतः मैं ऊपर लिख चुका हूं जो थोड़ा आहार करनेसे हिंसा कम होगी। कलियुगमें अन्न ही में प्राण है इसलिये अन्न खाना प्राण रक्षाके लिये आवश्यक ही है परञ्च सात्विक आहार करे और थोड़ा आहार करे जिससे शरीरमें सब इन्द्रियां ठीक रहें क्योंकि इन्द्रियां ही द्वारा सब काम करेंगे। यदि आहार ठीक रूपसे किया जायगा तो जो कार्य करगे सो तन मन वचन से किया जायगा। वह योगाभ्यास हो या तप हो या जप हो या पूजा पाठ हो अथवा सांसारिक कार्य हो सो सुचारु रूपसे होगा। यदि सात्विक भोजन न करेंगे और जादा निमक वाला साग (तरकारी) जादा गरम वाले पदार्थ जादा करुवा आदि खानेसे तथा ज्यादा भोजन करनेसे शरीर में क्लेश मनमें क्लेश बोलनेमें क्लेश पैदा होगी तब योगाभ्यास आदिका बात ही क्या संसारिक कार्य कोई नहीं कर सकते हैं अतः मानव जातियोंके लिए पूर्ण ख्याल रखना चाहिये जो सात्विक पदार्थ तथा थोड़ा भोजनका अभ्यास लगावें ऐसा अभ्यास करनेसे एहि सांसारिक सब कार्योको साधन करते हुए अन्तमें मोक्षपदको प्राप्त कर लेंगे ए शास्त्र सिद्धान्त हैं।

स्वास्थ्यका रक्षा

इस संसारके अन्दर अमुल्य मनुष्य योनि पाकर अपने

स्वास्थ्यका रक्षा करना अत्यावश्यक हैं क्योंकि जब तक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तब तक कोई कार्य नहीं कर सकते हैं। स्वास्थ्य रक्षाका नियम सुबहमें सबेरे उठकर पेखाना आदिसे होकर जहां पर खुला हवा चलती हो गन्दी हवा नहीं हो वहां जाकर थोड़ा समय हवामें घुमे उसके बाद थोड़ा व्यायाम करे व्यायाम करने से शरीरके अन्दर सब नाड़ियां ठीक रूपसे चलती हैं और तन्दुरुस्त रहता है फिर थोड़े समयके बाद स्नान आदि करें फिर सात्विक आहार करें जो आहार करने से शरीरमें बीमारी पैदा होती है ऐसी आहार न करें। पाठक महोदय! वास्तविक विचार दृष्टिसे देखा जाय तो बिना स्वास्थ्यके अच्छा होनेसे कोइ कार्य नहीं कर सकते हैं स्वास्थ्यमें किसी प्रकारकी गरबरी होजानेसे कोई काममें मन ही न लगेगा बिना मनसे कार्य होगा नहीं बिना मनसे जो काम किया जाता है सो बिफल हो जाता है अतः स्वास्थ्यका रक्षा करना मुख्य धर्म है स्वास्थ्य अच्छा होनेसे सांसारिक कार्य हो अथवा परमार्थिक कार्य हो दोनों कार्योंको सम्पन्न कर कसते हैं इसलिये पाठक गण से निवेदन करता हूं जो सर्व प्रथम जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहे उन कामोंमें तत्पर होते हुए आलस्यको त्याग कर परम पद प्राप्त करनेके लिये कटिबद्ध हो जाय।

पाठक महोदय! यथार्थतः विचार दृष्टिसे देखा जाय तो स्वास्थ्य रक्षाके लिये तीन उपाय हैं पहला उपाय तो यह है कि जो पदार्थ हम भोजन करें उस पदार्थको भगवानको अर्पण कर तथा फिर उन पदार्थको भगवान्‌का प्रसाद समझकर भोजन करें तब उन मानवोंके लिये अस्वास्थ्य कारक पदार्थ भी

स्वास्थ्य कारक हो जाते हैं और वह मानव संसारके अन्दर अनेक झंझटको टारते हुये तथा सहन करते हुये अन्तमें उन भगवानका प्रसाद भक्षणके कारण मोक्षको प्राप्तकर जाता है। क्योंकि भगवानका अर्पण किया हुआ अन्न अमृत तुल्य हो जाता और उन मनुष्योंके अन्दर कोई बिमारी पैदा नहीं होती है तथा बल वीर्य बढ़ जाते हैं और बुद्धि अच्छी हो जाती है अच्छी बुद्धि होनेसे विचारका अंकुर हृदयमें जम जाता है विचार होनेसे ज्ञान होता है ज्ञान होनेसे संसारका आवागमनसे छुटकारा पा जाता है।

दूसरा उपाय यह है स्वांसाको रोकना। स्वांसा कैसे रोका जायगा इनका नियम स्वांसाके अधार पर ही जीवन है स्वाभाविक स्वासा चलने के जितना नियम है उतना चलने से स्वास्थ्य में किसी प्रकार को बीमारी पैदा नहीं होती है। इसका यह कारण है हरेक मनुष्योंके ब्रह्माण्डमें अर्थात् शिरमें सहस्र दल कमलमें स्थित परमात्मा हैं उनसे अमृत टपकता रहता है अतः जीवात्मा की स्वासाके द्वारा रोज अमृत पान करावें जब जीवात्मा अमृत पान कर लेते हैं तब उन जीवात्मा का शरीरमें किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं होती है और कोई आपत्तियां आने पर भी उन मनुष्योंको हानि नहीं होती है तथा संसारिक सब कार्यों को करते हुये अन्तमें मोक्ष पदको प्राप्त कर लेते हैं। पाठकगण शुद्ध हवा, शुद्ध जल, पवित्र मन, पवित्र आहार, पवित्र वस्त्र शुद्ध वार्त्तालाप, पवित्र मानवों का संग, विश्राम, पवित्र आसन, पवित्र सय्या या सोनेका स्थान आदि करनेसे भी स्वास्थ्य अच्छा रहता है। यदि प्राणायाम करे तो २४ बार करे तथा प्राणायाम पूरा हो जानेसे कमसे कम १५ पन्द्रह मिनट ठहर कर भोजन आदि करे क्योंकि

नाड़ीका संचलन हो जाता है इसलिये थोड़ा काल विश्राम करने से सब नाड़ियां स्थिर हो जाती है तब जो काम करेंगे सो सुचारु रूपसे होगा और स्वास्थ अच्छा रहेगा।

तीसरा उपाय है योग। योग कर्म करने वालोंका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है क्योंकि योग कर्म हैं जीवात्माको परमात्मा में मिला देना अर्थात् योग कर्म करने वाले महान् पुरुषोंने (सोऽहम्) इन महा मन्त्रका नाड़ी द्वारा स्वासाको खीचते हुये ब्रह्माण्डमें ब्रह्म रूप जो परमात्मा उनसे एकत्व कर देते हैं जीवात्मा को। अर्थात् उन महान् पुरुषोंको ब्रह्म रूप मैं हूं ए भान हो जाता है फिर उनके लिये स्वास्थ्यका अच्छा रहना अति सुगम हो जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिसे भी देखा जाय तो जब स्वासाको नाड़ी द्वारा ऊपर को खींचता है तब सो इस शब्दसे उपर स्वासा चढ़ता है और 'हम' इस शब्दसे नीचे स्वासा गिरता है इसी प्रकार बारम्बार स्वासाको उपर ले जाना तथा नीचे गिराना और विश्राम करना इससे सब नाडियोंका बिकार स्वासा द्वारा निकल जाता है और अच्छी हवा आजाती है। इससे सब नाड़ियां शुद्ध हो जाती है अतएव स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

॥ देव दर्शन ॥

चौरासी लाख योनियोंमें अमूल्य मनुष्य योनि पाकर देवताओंका दर्शन करना परमावश्यक है। क्योंकि देव देवियों की दर्शन करने से मन प्रसन्न हो जाता है। मन प्रसन्न हो जानेसे आत्मा शुद्ध हो जाता है और दशों इन्द्रियों द्वारा विकार पैदा नहीं होती है तथा शुद्ध आत्माके अन्दर देवताओं का वास हो जाता है। जब देव देवियों का अन्तः करणमें वास हो जाता है

तब उन देवोंका आभास (रूप) आंखोंके सामने आने लगता है फिर क्रमश: रूप सामने आते आते उन देव देवियोंका साक्षात्कार हो जाता है। पुन: उन्हीं देव देवियोंके द्वारा संसारके बन्धनसे छुटकारा पा जाता है।

पाठक महोदय ! यथार्थत: विचार पुरस्सर देखा जाय तो रोज नियमानुसार देवताओंका दर्शन करनेसे तथा स्मरण करनेसे मानवोंके हृदय में अज्ञानता रूप जो अन्धकार है उनका नाश हो जाता है और ज्ञान रूपी ज्योतिकी प्रकाश हो जाती है तब मानवों के लिये संसार रूपी बन्धनसे विमुक्त होना अति सुगम हो जाता है इसलिये मनुष्योंके लिये देवताओं का दर्शन तथा स्मरण करना परमावश्यक है।

परञ्च सम्प्रति समय में बहुत भाइयोंका कहना है जो मन्दिर आदिमें दर्शन करने से धर्म न होकर उलटा पाप होता है क्योंकि दर्शन करने वाले प्रेमियोंने देव दर्शन न करके कुदृष्टिसे दूसरे की दर्शन करते हैं। पाठक महोदय ! बात तो यह सच है परन्तु मानव जातियोंके लिये इस विषय में परम विचारणीय है कि यदि मनुष्य योनि पाकर इन्द्रियोंके वशीभूत हुआ तो फिर कौन ऐसी योनि है जिस योनिमें इन्द्रियों को अपने बसमें रखे सो ऐसी चौरासी लाख योनिके अन्दर मनुष्य योनि ही है जो इन्द्रियां को अपने आधीन रखे किन्तु स्वतन्त्र न होने दे अतएव मन्दिर आदिमें मनुष्योंके लिये दर्शन करना आवश्य है। जो मानव देव दर्शनके बहाने से कुदृष्टिसे दूसरी ओर देखते हैं वे मनुष्य नहीं बल्कि राक्षस हैं।

पाठकगण ! देव दर्शनका यह मतलब नहीं है कि मन्दिरमें

जाकर देवताओं का दर्शन करे किन्तु देव शब्दका तात्पर्य यहां पर यह है कि जिनकी आत्मा महान हो अथवा दिव्य दृष्टि हो जैसे ब्रह्मर्षि देवर्षि राजर्षि तथा गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदी तथा सिद्ध मुनियोंका तथा पुण्य तीर्थोंका काशी, अयोध्या, मथुरा, द्वारिका, जगन्नाथपुरी इत्यादि सबोंका दर्शन करे जो समीप में देव मन्दिर हो अथवा जो नदी हो तथा जो तीर्थ आदि हो उनका। इसलिये ये देव दर्शन देवताओंका स्मरण नित्य करना चाहिये।

॥ गृहस्थ धर्म ॥

अमूल्य मनुष्य योनि पाकर गृहस्थ धर्मका क्या रहस्य है, सो समझना आवश्यक है। पाठकगण! गृहस्थ धर्मका मतलब यह है कि हमारे पूर्वज दिव्य दृष्टि ऋषि महात्माओंने आयुका चार भाग किया और चार अवस्था बनायी और चार आश्रम बनाये, जिनमें पहला बाल अवस्था ब्रह्मचर्याश्रममें रह कर ब्रह्मचर्यको पालन करे। दूसरा अवस्था युवा जिसमें विवाह वेद-रीतिसे करके गृहस्थाश्रममें रह कर संतानोत्पत्ति करें। तीसरा अवस्था ५० वर्षसे ऊपर होनेसे स्त्री सहित भोग पदार्थको त्याग करके वानप्रस्थाश्रममें धर्मोपार्जन करें। चौथा अवस्था ७५ वर्ष से ऊपर होनेसे संन्यासाश्रममें सब कर्मोंका त्याग करके परब्रह्म परमेश्वरमें तल्लीन हो जाये।

पाठक प्रेमियो! यदि बाल अवस्थामें अर्थात् अबतक विवाह न किया हो उस अवस्थामें ही हरेक विषयका ज्ञान होना चाहिये, जो मानव अच्छी गुरुके द्वारा शिक्षा पा जाती है तथा रहन-सहन और सज्जन पुरुषोंका संग होनेसे अच्छी बुद्धि होती है और

अच्छा विचार मनमें आ जाता है तब उस मनुष्यके लिये और जो आश्रम हैं तथा उन आश्रमोंका जो धर्म है सो उन धर्मोंको शास्त्र रीतिसे पालन करते हुए अन्तमें मोक्ष पदको प्राप्त कर लेता है। अतः सर्व प्रथम मानव जातियोंका कर्त्तव्य है जो बाल अवस्थामें शिक्षा आदि अच्छी ढङ्गसे दिया जाय।

पाठकजी ! कुमार अवस्था जो है सो मनुष्यके लिये साधन अवस्था है उस अवस्थामें जो साधना कर लेता है उनके लिये कोई अवस्था तथा कोई आश्रम बाधा कारक नहीं होता है। जैसे ध्रुव प्रह्लाद आदि महान् पुरुषने कुमार अवस्थामें साधना किया तो अचल पदको प्राप्त कर लिया। जो मानव उस अवस्थामें साधन न करके तथा अच्छा गुरु द्वारा अच्छी शिक्षा न पायी तथा सज्जन महात्माका संग न किया और दुर्जनका संग तथा दुर्व्यवहार तथा अभक्ष्य भक्षण आदि करते हैं उन जनोंके लिये हरेक अवस्था तथा हरेक आश्रम परम दुःखदायी हो जाता है और अन्तमें अधःपतन हो जाता है। फिर उन मानव जीवको इस संसार चक्रसे ऊद्धार होना अति कठिन हो जाता है। अतएव ऐसे अमूल्य मनुष्य योनि पाकर संसार रूपी समुद्रसे पार हो जाय। इसका पूर्ण ख्याल रखे। ख्याल रखनेका यही उपाय है जो कुमार अवस्था ही में अच्छी विद्याकी अभ्यास अच्छे गुरुके द्वारा करे तथा अच्छा रहन-सहन रखे, सात्विक आहार करे सज्जन महात्मासे संग करे, अच्छे ग्रन्थको पढ़े, संसारिक विषयमें लिपायमान न होवे, इन्द्रियोंके द्वारा वाह्य क्रिया करते हुए भी अन्तःकरणसे विरक्त रहें और शास्त्रमें जो बताया हुआ रास्ता है उन रास्तासे चलें तथा गुरुजनोंके वाक्यमें विश्वास रखे तथा देवताओं

में भक्ति करे। माता-पिताकी आज्ञा मानें और सेवा करे इत्यादि नियमसे जो मानव कुमार अवस्थामें समयको व्यतीत करेंगे, उनके लिये स्वर्गादि सुख तुच्छ है और परम सुख जो है मोक्ष उसको प्राप्त कर लेंगे।

पाठक महोदय! कुमार अवस्थामें जैसा संस्कार बनायेंगे वैसा ही बनेगा। जो कार्य ५० वर्षमें पूरा होगा सो कार्य थोड़े ही दिनोंमें कुमार अवस्थामें अभ्यास करनेसे हो जायगा इसलिये मैं साञ्जलि निवेदन करता हूं जो कुमार अवस्थाको व्यर्थ न बितावे। यदि कुमार अवस्थामें इन्द्रियोंको सुख करनेकी इच्छा प्रगट हो तो उनके शान्त करनेके लिये गृहस्थाश्रम तथा युवा अवस्था है। बाल अवस्थामें जैसा अभ्यास किया जायगा वैसा ही मरण पर्यन्त रहेगा, इसलिये इस अवस्थामें अच्छा अभ्यास बनानेका कोशिश रखे।

पाठकजी! जो महान् पुरुष कम-से-कम ३० वर्ष तक यही संसारिक व्यवहार तथा शास्त्रका व्यवसाय और शास्त्र रीतिसे क्रियायें कर चुका हो ऐसे सज्जन पुरुषोंसे उपदेश ग्रहण करें। क्योंकि जो जितना कर चुके हैं उतना ज्ञान उनको हो चुका है। इसलिये ऐसे महान् जनोंका उपदेश लागू होता है तथा शीघ्र फल-दायक होता है। इसका कारण है जो महापुरुष कोई कार्य ५० वर्षमें अनेक प्रकारके दुःख या परिश्रम द्वारा अथवा जैसे-तैसे पूरा कर लिया उन महान् पुरुषोंके द्वारा बताई हुई शीघ्र फलदायक होता है क्योंकि उन महान् जनोंने दुर्गम रास्ता तथा सुगम रास्ता दोनोंने देख चुका है। अतएव उनका बताया हुआ सुगम रास्ता होगा, तब सुगम रास्तासे चलनेवाले शीघ्र लक्ष्यको प्राप्त कर लेता

है। अतएव मैं प्रार्थना करता हूं जो कुमार अवस्थामें ऐसा ज्ञान हो जानेसे युवा अवस्थामें हरेक पदार्थको भोगते हुए भी संसारिक बन्धनमें नहीं फँसते हैं।

युवा अवस्था

जिन महान पुरुषको ब्रह्मचर्याश्रममें रहनेकी इच्छा हो उनके लिए कोई आश्रममें जानेकी आवश्यकता नहीं। वह मरणपर्यन्त ब्रह्मचर्यको पालन करते हुए अन्तमें मोक्ष पदको प्राप्त कर लेंगे।

जिन कुमारको ब्रह्मचर्याश्रमसे गृहस्थाश्रममें आनेको इच्छा हो वह अच्छे कुलकी लड़कीके साथ शास्त्रकी रीतिके अनुसार विवाह करे। हमारे पूर्वज ऋषि महात्माने विवाह पद्धतिमें लिख चुका जो पाणी ग्रहणके समय स्त्रीके साथ अग्नि ब्रह्मा दिन हो तो सूर्य रात्रिमें चन्द्रमा इन देवताओंको साक्षी करके प्रतिज्ञा किया जाती है जो आजसे हम दोनोंका मन-वाणी, शरीरसे जो कार्य करेंगे सो दोनोंके विचार से। पाठकजी ! बात भी सत्य है जो पुरुष गृहस्थाश्रममें रहकर स्त्रीमें अपनी अर्द्धांगिनी धर्म समझ कर उनसे हरएक कामोंमें विचार लेकर कार्य करते हैं वह कार्य सुचारु रूपसे चलता है। जैसे गाड़ीमें दा पहिये रहते हैं और दोनों पहिये बराबर रहता है। वह गाड़ी निर्भयतापूर्वक चलती है और जहाँ जाना हो वहां पहुंचा देती है और जिन गाड़ियोंके दोनों पहियेमें अन्तर रहता है वह गाड़ी अच्छी चालसे नहीं चलती है। वह टूटनेकी सम्भावना बनी रहती है। बल्कि टूट जाती हैं और चढ़नेवाले गिर जाते हैं। इसी तरह जो पुरुष गृहस्थाश्रममें रहते हैं उनके लिये परम आवश्यक है जो अपनी

अर्धाङ्गिनीकी विचारसे मनसे वाणीसे शरीरसे कार्य करें और रहन सहन विचार आदिमें फरक न हो क्योंकि वह शक्तिरूपा है बिना शक्तिसे कोई कार्य होता है नहीं और ऋषि महात्माने स्त्रियोंकी नाम रक्खा है गृहलक्ष्मी। वास्तविकमें जिस घरमें स्त्री और पुरुषमें मेल रहता है तथा दोनोंके विचारसे हर एक कार्य होता है उस घरमें अष्टसिद्धियां नवनिद्धियां सदा बनी रहती हैं और उन दोनोंका बड़े आनन्दसे समय व्यतीत होता है परञ्च स्त्री जातिको स्वतन्त्र न होने दें क्योंकि वह चंचला होती हैं इस-लिए अपाने आधीन रखें जैसे फिलवान हाथीको अंकुश द्वारा अपने अधीन रखते हैं वैसेही स्त्रीके ऊपर अंकुश रखना चाहिये। पाठकगण! स्त्रीजातिका कर्त्तव्य है कि घरको रक्षा करना तथा सन्तान आदिका पालन करना तथा स्वामीके आज्ञाको मानना तथा सात्विक आहार करना तथा दुर्जन पुरुषसे वार्तालाप न करना इधर उधर न घूमना जहां तक हो सके अपने समयको घर का काम ही में लगाना पतिहीको ईश्वर समझना पतिके साथ भूल कर भी कपट न करना और घरके कार्योंमें तथा पति सूश्रूषामें सदा तत्पर रहना स्वामीका जो कार्य हो उस कार्यको पतिके कहने बिना ही आलस्यको त्यागकर करना और जिससे स्वामी प्रसन्न रहें वही कार्य करना पतिके प्रसन्न होनेसे सब देव देवियां तथा पितर लोग प्रसन्न रहते हैं देवताओंका प्रसन्न होनेसे ऐहि संसा-रिक सब भोगोंको भोगकर अन्तमें पतिलोक चली जाती हैं। पाठकगण! पतिको भी चाहिये कि स्त्री अर्द्धाङ्गिनी हैं अर्थात् आधा शरीरका मालिकिनी है पुरुषका शरीरका बामा भाग सक्ति रूपा स्त्री है इसलिये जो कार्य करे सो स्त्रीकी विचारसे परञ्च

व्यापार आदि कार्य करे अपने विचारसे और घरका कार्य करे स्त्री अपनी विचारसे घरमें जो सामानका जरूरत हो ला दे । प्रिय-पाठकगण ? गृहस्थाश्रमसे बढ़कर कोई आश्रम नहीं है यदि गृहस्था-श्रममें शास्त्रके नियमसे चले तो वान प्रस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम में जानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। गृहस्थाश्रममें सबसे पहले ध्यान रखे जो सन्तानोत्पत्ति करना आवश्यक समझे क्योंकि सन्तान होनेसे पितरोंका ऋणसे बिमुक्त हो जाते हैं परन्तु असुर के समान संभोग न करे संन्तानोत्पत्तिके जो समय है उस समय में स्त्री तथा पुरुष दोनों किसी प्रकारकी अपने मनमें विकारको न रखकर तथा प्रसन्न चित्तसे देवताओंका स्मरण करते हुए संभोग करे इस नियमसे जो सन्तान पैदा होती हैं सो बड़े पराक्रमी तथा यशस्वी बलवान तथा पिता माताका आज्ञाकारी और दीर्घायु होते हैं और जो बिना इच्छासे तथा रोग अवस्थामें तथा कुसमय में संभोग करते हैं उन्हींका नाम है असुर संभोग उससे जो सन्तान पैदा होते हैं वही बड़े अज्ञानी तथा सठ दुर्व्यवसायी अभक्ष्य भक्षण करनेवाला तथा कुमार्ग रस्तासे चलनेवाला नास्तिक और पिता माताको दुःख देनेवाला तथा रोगी और अल्पायु होते हैं ऐसे सन्तानोंके द्वारा पितरोंका अधः पतन होता है और कुलका नाशहो जाता है। अतएव सन्तानो त्पत्ति समयका ख्याल रखना आवश्यक हैं। फिर गृहस्थाश्रममें रहकर पितरोंका कर्म करना नित्य तर्पण करना तथा देवताओंका पूजन तथा दर्शन करना तथा सात्विक आहार करना परायी स्त्री को कुदृष्टिसे न देखना तथा सत्यसे व्यापार करना तथा सच बोलनेका अभ्यास रखना किसीको दुःख न देना जहां तक बन

सके दूसरेका उपकार करना जो मिले उसीमें सन्तोष रखना पराये धनको मिट्टीके समान समझना सब इन्द्रियोंको अपने बसमें रखना धर्मके विषयमें पूरा ख्याल रखना पापसे सदा अलग रहना पिता माता तथा गुरुजनोंका सेवा करना तथा आज्ञा मानना तथा उन लोगोंके वाक्यमें विश्वास रखना अपने परिवारकी त्रुटिको पूरा करना स्वाध्याय जप तप पूजा पाठ आदि समयानुसार करना अतिथि सत्कार करना समयको निरर्थक नहीं बिताना। इस नियम से गृहस्थाश्रममें रहते हुये मनसे सब कर्मोंका त्याग करना। पाठक जी इस नियमसे जो मानव गृहस्थाश्रममें रहते हैं उनके लिये न वानप्रस्थाश्रममें जानेको आवश्यकता है न संन्यासाश्रम। इस-लिये मैं साञ्जलि निवेदन करता हूँ जो कलिमें आयु कि कोई निश्चय है नहीं अतएव गृहस्थाश्रममें रहकर सुख दुःखको भोगते हुए मनसे सब विषयको त्याग कर दे और विषय वासनामें लिपायमान न होवे क्योंकि मनुष्य योनि होना फिर दुर्लभ है। अतः उपर लिखा हुआ नियमसे जो मानव चलेगें उनको अन्तमें मोक्षपद प्राप्त हो जायगा ए शास्त्र सिद्धान्त हैं। पाठकजी मनुष्यको स्वतन्त्र रहना चाहिये। परञ्च जो संसारी विषयका पूरा अनुभवी हो तथा शास्त्रोंका पूरा ज्ञाता हो ऐसे मानवोंके आधीन रहें क्योंकि कोई आपत्ति आनेपर उनसे विचार लेकर उनके कथनानुसार काम करे।

गृहस्थाश्रममें रहते हुए हरेक कामको करे, परन्तु मनसे किसीमें लिपायमान न होवे जैसे कमलके पत्ते पानीसे पैदा होतो है और पानीपर रहता है, परन्तु पानीसे सम्बन्ध नहीं रहता है, इसी तरह गृहस्थाश्रममें रह कर सब काम करें। परञ्च किसीमें

आसक्ति न रहें, ऐसा अवस्थाको जीवन्मुक्त अवस्था कहते हैं, वास्तविकमें ऐसा अभ्यास करनेसे जीवन्मुक्त हो जाते हैं। परन्तु मानवोंके लिये क्रोध और आलस्य महा शत्रु है क्योंकि क्रोध होनेसे विचारका नाश हो जाता हैं। विचार न रहनेसे कर्त्तव्यको भूल जाता है और अनर्थ कर बैठता है और क्रोधके आधीन हो जानेसे कोई कार्य सफलो भूत नहीं हो सकता है और क्रोधके आधीन हो जाते हैं, इसलिये सर्व प्रथम क्रोध और आलस्यको जीतनेकी इच्छा रखे। क्रोध और आलस्य ये दोनोंको जीत लेंगे तो उनके लिने मोक्षपद सहजमें लाभ हो जाता है। पाठकजी, मानवोंके लिये ईर्ष्या भी परम शत्रु है, इसलिये क्रोध और आलस्य ये दोनों शत्रुको जीत लेनेपर भी ईर्ष्या मनमें रहेगी तो लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता है। अतः ईर्ष्याको हटावे और ईर्ष्याको हट जानेसे तथा क्रोध और आलस्य ये दोनोंको मनमें न आनेसे लक्ष्य प्राप्त हो जाता है। गृहस्थाश्रममें रहते हुए कुलका या वंशका तथा ग्रामोंका तथा देशका राजका और जहांतक हो सके सेवा करना परम आवश्यक है। परञ्च कलियुगमें आयुका सिद्धान्त १०० एक सौ वर्षका आया है, लेकिन पराशरजीका मत है ६० वर्षका वास्तिविकमें आजकल ६० वर्षका आयु देखनेमें आता है, इसका भी कोई निश्चय नहीं है जो ६० वर्षतक आयु रहेगा। तब चारों आश्रममें वास कैसे किया जाय, इसलिये कलियुगमें प्रधान आश्रम गृहस्थाश्रम माना गया। अब २० वर्षतक तो बाल या कुमार अवस्थामें चली जाती है। इसके बाद मध्य अवस्था या संसारिक सब कार्य करनेके लिये ३० वर्षतक रहता है दोनों मिलाकर ५० वर्षकी अवस्थामें चली जाती हैं। ३० वर्षके अन्दरमें

६ घण्टे सोते हैं रोज और बारह घण्टा रोज धनोपार्जनमें रहता है। व्यापार हो या नौकरी बाकी रह गया ६ घण्टा इसीमें शौच-क्रिया, स्नान, सन्ध्या बन्दन, तर्पण, देवपूजा, देव-दर्शन, शास्त्रोंका अध्ययन और सत्संग सुतक पातक वंशका बृद्धि जादे होनेसे सुतक और पातक जादे काल होता ही रहता है, इसलिये शुभ कर्म करनेका समय कम मिलता है। अतएव रात्रिमें स्वस्थ चित्त होनेपर दिनमें किया हुआ कामोंका विचार करें। पाठकजी शोचनीय है। महान् कार्य जो है मोक्ष उनको अल्प समयमें प्राप्त करना आवश्यक है। परञ्च समय बहुत कमती है, कार्य विशाल है, इसलिये इसका अभ्यास करे, २४ घण्टेमें भी योगारूढ़ रहे या अपनी आत्माको परमात्मासे मिला कर रखे। भीतर से बाहरसे हरेक काम सोना बैठना व्यापार करना नौकरी करना और संसारिक विषयको भोग आदि करना, परन्तु ख्याल रखे भीतरसे जीवात्मा और विराट भगवानका मेलका तागा न टूटे। जैसे पानी भरनेवाली घड़ा मस्तकपर लेनेपर भी आपसमें हँसी-मजाक आदि करते हुए भी पूरा ख्याल पानीके घड़ाके ऊपर गर्दनपर ही रहता है, तैसे ही बाहरसे हरेक कामको करते हुए भी भीतरसे जोवात्माको परमात्मासे जूड़ाया है, वह जूड़ाया हुआ जो तागा है उनको टूटने नहीं दे। ऐसे अभ्यास करनेसे अल्प समयमें ही परमपदको प्राप्त कर लेंगे।

अतः मैं साञ्जलि निवेदन करता हूं, जो अमुलय योनी पाकर मनुष्य सच्चे हृदयसे अभ्यास करे जो इस नियमसे कार्य करेंगे उनको परमपद शीघ्र लाभ होगा, ये शास्त्र सिद्धान्त है। अतएव वानप्रस्थाश्रम तथा संन्यासाश्रम जानेकी कोई आवश्यकता नहीं

पड़ेगी। प्रिय पाठकजी, गृहस्थाश्रममें रहते हुए यदि शास्त्रानु-कूल चले तो वह मानव हरेक आश्रमोंका फल पाकर अन्तमें मोक्षपद अनायास प्राप्त कर लेते हैं और यही संसारिक कार्य शास्त्रानुकूल करनेपर पितरगण तथा देवताओंका आशीषसे वह मानव अपाने सात पुरुष पीछेका तथा सात पुरुष आगेका और माता पैदा हुई है जिस कुलमें उन छः पुरुषोंका और स्वयं अपना सब मिला कर २१ पुरुषोंका उद्धार हो जाता है। शास्त्रानुकूल चलनेसे। पितर लोग सदा इच्छा करते रहते हैं, ऐसा सन्तान हमारे कुलमें पैदा हो जो हम लोगोंको तृप्ति करते हुए अन्तमें मोक्षपदको प्राप्त कर ले।

॥ मौन व्रत ॥

प्रिय पाठकजी! चौरासी लाख योनीमें भ्रमण करते हुए अमूल्य मनुष्य योनि पाकर संसार चक्रसे यदि उद्धार नहीं हुआ तो फिर अन्य योनियोंसे उद्धार होना अति कठिन है। इसलिये संसार चक्रसे उद्धार होनेका मौन व्रत भी उपाय हैं क्योंकि मौन व्रत अर्थात् बोलना नहीं इससे मानसिक विचारका पैदा होती है तथा असत्य भाषण नहीं होता है जादे बोलनेसे असत्य भाषण होता ही है और न बोलनेसे स्वासा कम चलती है। स्वासा कम चलनेसे आयुको वृद्धि होती हैं, आयुकी वृद्धि होनेसे जादा समय मिलता है। समय मिलनेसे शुभ कर्म याने अच्छे-अच्छे कर्म करके अपने वंशका उद्धार करता है और देशका तथा राजका सेवा करनेका समय मिलता है। यदि आयुकी बृद्धि नहीं हो और अल्पायु हो तो कोई कार्य उनसे नहीं हो सकता हैं। अतः मौन व्रत रखने से हरेक कार्य करते हुए अन्तमें मोक्षपद प्राप्त कर लेंगे।

शब्द का प्रयोग

मनुष्ययोनि पाकर शब्दका प्रयोग कैसा करना चाहिये। पाठकजी! शब्द ही में वशीकरण है। शब्द ही में उच्चाटन है, शब्द ही के द्वारा देवताओंको वश कर लेते हैं। शब्दमें आकर्षण शक्ति है। शब्दमें बिगाड़नेकी भी शक्ति है वास्तविकमें शब्दमें ईश्वरीय शक्ति है जो मानवका शब्द मधुर होता है अर्थात् मिठाससे बोलता है। उनके सब प्रिय हो जाते हैं और संसारमें यश फैल जाता है। उन मानवके लिये कठिनसे कठिन कार्य सुगम हो जाता है और संसारका सब विषयका भोगकर अन्तमें मोक्ष पदको प्राप्त कर लेता है। जो मनुष्योंका शब्द कटु होता है अर्थात् खराब शब्द बोलते हैं उन मानवको संसारमें अयश होता है और उनको सब दुर्वचन कहता है और ऐसे मानवोंको न संसारमें ही सुख मिलता है न पारलौकिक सुख मिलता है। अन्ततः उनका अधःपतन हो जाता है। शब्द ही ऐसा पदार्थ है जो कैसेसे कैसी भी मनुष्यको संसारके चक्करसे उद्धार कर देता है। याने वह मानव संसारका जो बन्धन हैं आवागमन उनसे छुटकारा पा जाता है अर्थात् फिर जन्म नहीं होता है। जिन मानवका शब्द सदा सचही सच होता है वह मानव सदाके लिये सत्यरूपमें मिल जाता है। इसलिये अमूल्य मनुष्य योनि पाकर शब्दका प्रयोग मिठास तथा सत्यसे भरा हुआ करे। इसका अभ्यास रखे परञ्च कटु शब्द तथा मिथ्या शब्दका प्रयोग भूलसे भीं न करे।

प्रिय पाठकजी! शब्द द्वारा मन्त्र सिद्ध होता है। शब्दसे ही बड़े बड़े यज्ञ तथा तपस्या होता है। शब्द ही से देवता और

पितर प्रसन्न रहते हैं। यहांतक कि शब्दसे प्रस्थर भी आर्द्र हो जाते हैं ! अतः कलियुगके अन्दर मनुष्य योनि पाकर नाना प्रकारके झंझट होते हुए भी जो मानव अपने शब्दका प्रयोगमें सत्य तथा मिठास रखते हैं वह मानव संसारमें सब सुखोंको प्राप्त कर अन्तमें मोक्ष पद को प्राप्त कर जाते हैं।

इसलिए हर एक मनुष्यको चाहिये कि ऐसा शब्द बोले कि चुम्बक लोहेके समान खींच ले। याने अपने तरफ आकर्षित कर ले ऐसा अभ्यास रखनेसे वह मानव संसारमें आदर्श हो जाते हैं। उनका यशगान होने लगता है। शब्द ही तपस्या है इसलिये जो शब्द बोले सो पहले खूब विचार ले तब उस शब्दका प्रयोग करे। शब्द ही द्वारा ऐहि सांसारिक तथा पारलौकिक कार्य सफल होता है। जहांतक हो सके शब्द बोलनेका तरीका अच्छी तरह रखे क्योंकि शब्दरूप ही ब्रह्म है।

विश्वास

हरएक मनुष्योंको विश्वास करना परमावश्यक है। क्योंकि जबतक विश्वास अन्तःकरणमें न होगा तबतक कार्य सफल नहीं हो सकता। इसलिए सांसारिक कार्य या पारलौकिक कार्य जो हो सो विश्वास हीसे होता है। सांसारिक कार्य जो आहार व्यवहार व्यापार आदि जो कार्य है उनमें बिना विश्वाससे कार्य समुचित रूपसे होता नहीं। जिनके आत्मामें अर्थात् मनमें संशय है याने विश्वास है नहीं उन्हींका नाश होता है। वास्तविक विचारदृष्टिसे देखा जाय तो जबतक कोई विषयमें विश्वास न करेंगे तबतक मन में आशंका बनी रहेगी। मनमें संशय पैदा होनेसे पद पदमें याने हरएक विषयमें संशय होता है। तब उन मानवका आत्मा

संशयालु हो जाता है। जब आत्मा संशयालु होता है तब उस जीवका अधःपतन हो जाता है फिर उन मानवके लिये संसार चक्रसे छुटकारा पाना अति कठिन हो जाता है और जिसकी आत्मा संशयालु नहीं है अर्थात् विश्वास अन्तःकरणमें हैं उन मानवोंके लिए सांसारिक कार्य हो या पारलौकिक कार्य अति सुगम हो जाता है और विश्वासरूपी नौका द्वारा संसाररूपी समुद्रको अति शीघ्र पार हो जाता है। अतः मैं साञ्जलि निवेदन करता हूँ जो मानवोंके लिये सर्वप्रथम अन्तःकरणसे विश्वास रखें। विश्वास रखनेसे हरएक कार्य उनके लिये लाभदायक हो जायगा। प्रिय पाठकजी ! शास्त्रमें जो रास्ता बताया है उनको जानने-वाला जो महान् पुरुष है उनका बताया हुआ जो मार्ग है उनमें विश्वास करना क्या वह पारलौकिक कार्य हो या संसारिक कार्य हो। क्योंकि विश्वाससे ही जड़से चेतन हो जाता है। अतएव हर एक मनुष्यको दृढ़ विश्वास रखना परमावश्यक है।

"नारी धर्म"

स्त्री जातियोंके लिये क्या कर्त्तव्य है—सर्वप्रथम स्त्रीको स्वतन्त्र न रहना चाहिये क्योंकि स्वतन्त्र स्त्री होनेसे बिगड़ जाती है और बिगड़ी हुई स्त्रीके द्वारा सारा कुल नष्ट हो जाता है। यथार्थतः विचार दृष्टिसे देखा जाय तो स्त्री अर्द्धाङ्गिनी है वह धर्म और अधर्म ये दोनोंका साथी है। विशेषतः स्त्री द्वारा ही पुरुष उच्च पदको पाता है अथवा अधः पतन होता है स्त्री चाहे तो बड़े पापीसे पापी पतिको भी संसार चक्रसे उद्धार कर देती हैं। स्त्री चाहे तो बड़े धर्मात्मासे धर्मात्मा पतिको नीचे गिरा दे। स्त्री अच्छी होनेसे ऐहि संसारिक सुखको प्राप्तकर अन्तमें स्त्री सहित

मोक्ष पदको प्राप्त कर जाते हैं। पाठकजी! ऐसा अधिकार जिस स्त्रीको है वह यदि अमूल्य मनुष्य योनि पाकर साध्वी नहीं हुई तो फिर उनके लिये संसार रूपी समुद्रसे पार होना अति कठिन है। अतएव स्त्री जातिको चाहिये कि पति देवके अनुकुल रहन सहन आहार व्यवहार आदि हरेक काम करे और उनके आधिन रहे। यदि अभाग्यवश पतिका देहान्त हो गया हो तो लड़के के आधिन रहकर काम करे किन्तु स्वतन्त्र न रहे परञ्च धर्मके लिये स्वतन्त्र रहे। धर्मके विषय में किसीके आधिन न रहे।

स्त्रियोंके लिये सर्वप्रथम कर्त्तव्य है कि सास-स्वसूरकी आज्ञाको मानना और सेवा करना या घरके अन्दर जो बड़ा हो उनका आदर तथा सेवा आदि करना और देवरको सन्तानके समान आहार व्यवहार आदिमें ध्यान रखना और घरमें रसोई आदि जो कार्य है उनमें दक्ष रहना याने जिनको जिसवस्तुका आवश्यक होउनका पूरा कर देना सन्तानको अच्छी तरह से पालन पोषण करना तथा अच्छा चाल चलन और अच्छी बातोंकी शिक्षा देना सन्तानों को अच्छा होना माताओंके आधिन है क्योंकि बाल अवस्था में माताका सत्संग जादे काल रहता है उन अवस्था में जैसा संस्कार संतानका बन जाता है वह संस्कार मरण पर्यन्त रहता है। इसलिये माताओं का कर्त्तव्य है जो संतानोंका पालन पोषण, आहार, व्यवहार आदि बड़ी सावधानीसे करना और जहाँ तक हो सके इधर उधर न घुमना निरर्थक किसीसे वार्त्तालाप न करना और पतिके साथ भूलसे भी इर्ष्या न करना जादे समय घरके ही कार्योंमें लगाना और नियत रूपसे थोड़ा समय देकर सन्तानों को अच्छा काम सिखलाना तथा अच्छा उपदेश देना

इस रीतिसे जो स्त्री काम करेंगी उनकी मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी और उनकी सब कदर करेंगी और ऐसी साध्वीकी देखा देखी घरमें तथा आस पासमें रहने वाली स्त्रियां सुधर जायेंगी और वह स्त्री संसारका सब सुखको प्राप्तकर अनायास अन्तमें पतिलोक को प्राप्त कर जायेगी। ऐसा शास्त्र सिद्धान्त है।

प्रिय, पाठकजी ! स्त्री जाति सब कलायोंसे सम्पन्न होती हैं इसलिये वह ऐसा काम करे जिससे पिताका कुल और पतिका कुल ये दोनों कुलोंको उच्च पदको प्राप्त करावे किन्तु नीचे न गिरावे।

"एकान्त वास"

चौरासी लाख योनियोंमें सर्वश्रेष्ठ मनुष्य योनि पाकर मोक्ष पदको प्राप्त करना परमावश्यक है। मोक्ष पदको प्राप्त करने के लिये एकान्त वास मुख्य साधन है।

एकान्त वासका अर्थ यह है कि सब इन्द्रियां रोक कर अर्थात् संसारिक विषयोंसे इन्द्रियां को हटाकर याने एकाग्रचित होकर मन द्वारा ब्रह्म विषयका विचार करना। पाठकजी, एकान्त वास घरमें रहने पर भी हो सकता है। घरके अन्दरमें जो लड़का लड़की, बहू, धन आदि हैं उनसे ममता, मोह, मात्सर्य आदिको त्यागकर रात्रिमें सब शांत हो जांय तब विषय वासनासे मनको हटा कर एकाग्र चित्त होकर ब्रह्म विषय का विचार करे। इस नियमसे विचार थोड़े ही दिन करने से उन मानवका यथार्थ विचार अन्तः करणमें आ जाता है तब उन मानवके लिये संसार रूपी समुद्रसे पार हो जाना अति सुगम हो जाता है। यदि एकान्तवासका अर्थ आश्रको त्याग कर याने संसारी विषयको

त्यागकर बनमें रहकर ब्रह्म विषयके विचार करना। परञ्च आज कलके समयमें बनमें जाकर रहने का न स्थान ही है न मानवोंके लिये समय ही है याने आयुका कोई निश्चय ही है। अतएव मैं ऊपर लिख चुका हूं जो आश्रममें रहते हुए भी एकान्त वास करें। विना एकान्त वास करने से याने जब तक संसारिक विषयसे इन्द्रियां को हटाकर मनको ब्रह्ममें एकाग्र न करेंगे तब तक संसार रूपी बन्धनसे छुटकारा न पावेंगे और संसार चक्रमें बारम्बार आना जाना पड़ेगा। इसलिये मैं साञ्जलि निवेदन करता हूं जो बड़े भाग्यसे अमूल्य मनुष्य योनि पाकर संसार चक्रसे उद्धार न हुआ तो फिर अन्य योनिसे होना असम्भव है। अतः आश्रम में रहते हुए भी अवश्य एकान्त वास करे। यदि समय मिल जाय तो बनमें जाकर याने कोई एकान्त जगह में जाकर रहें। वर्षों के अन्दर में एक दो महीने अवश्य एकान्त में रहने की कोशिश करें इससे इन्द्रियोंको जीतने की परीक्षा होती है।

॥ व्यापार ॥

मानव जातियोंके लिये व्यापार द्वारा धन लाभ करना परम आवश्यक है क्योंकि बिना धनसे आजकल कोई कार्य सफल नहीं हो सकता है। उन कार्यमें भी गृहस्थाश्रमका पालन धन बिना हो ही नहीं सकता। पाठक महोदयजी व्यापारमें सत्य और झूठ ये दोनों बिना कार्य सफल नहीं होता है। ये मनु भगवान् भी अपने मनुस्मृति नामक धर्म ग्रन्थमें कहा है कि "सत्या नृतंतु वाणिज्यम्" अर्थात् सत्य और मिथ्या ये मिला कर व्यापार द्वारा अपनी जीवन निर्वाह करो। परन्तु आजकल हमारे भाइयोंने

व्यापारमें ज्यादे झूठ बोल कर ही काम करते हैं। ऐसा व्यापार करनेसे उन मानवोंके लिये कल्याणकारक नहीं है। क्योंकि ज्यादे मिथ्या द्वारा जो धन हैं उस धनसे जो कार्य किया जाता है वह कार्य भविष्यके लिये विफल हो जाता है। यदि आप कहेंगे जो बिना झूठ बोलनेसे व्यापारमें लाभ होगा नहीं, सो समझनेमें फरक है क्योंकि बिना झूठ बोलनेसे भी व्यापारमें लाभ होता है। यदि आप बाजारका भावसे खरीद-बिक्री करेंगे तो उनमें झूठ बोलनेका मौका ही नहीं मिलेगा और व्यापारमें भी लाभ होगा, परन्तु पैसा कम मिलेगा। पाठकजी, ऐसा व्यापार द्वारा जो धन हैं उस धनसे जो कार्य किया जायगा वह कार्य सफल होगा और सदाके लिये शुभदायक होगा। और झूठ बोलनेका अभ्यास नहीं होगा, जब झूठ बोलना बन्द हो जायगा तब उन मानवोंमें कोई अवगुण रहेगा नहीं स्वयं ही अवगुण भाग जायगा और वह मानवको संसारके अन्दर बड़ी प्रतिष्ठा हो जायगी तथा सब गुण आकर स्वयं ही आबसेगी, तब वह मानव संसारोंका सब सुखोंका प्राप्त कर अन्तमें सब विषयेंको त्याग कर परमपदको प्राप्त कर जायेंगे। अतः मैं साञ्जलि निवेदन करता हूं जो अमूल्य मनुष्य योनि पाकर व्यापार द्वारा धन लाभ करें, परञ्च सत्य बोल कर। वास्तविक विचार दृष्टिसे देखा जाय तो न धन रहनेवाला है, न परिवार रहनेवाला है, न शरीर रहनेवाला, ये सब मिथ्या है। तब ऐसो जो मिथ्या है उनके सेवन करे याने उनके आधीन रहें।

हमारे प्रेमियें व्यापारी भाइयेंसे निवेदन करता हूं जो अपाने आत्माको नोचे न गिरावे, क्योंकि असत्य बोलनेसे आत्मा कम-

जोर होकर गिर जाते हैं। यदि आप कोई चीज बाजारके भाव से बिक्री करेंगे तो उनमें असत्य भाषण नहीं होगा, वह कमतीमें खरीद भले हो परञ्च बिक्रीके समयमें बाजारके भावसे बिक्री करें, परन्तु बाजारका भावसे ज्यादा पैसा न लें और अपना खरीदवाला भावको किसीसे न बतावें, क्योंकि वह भाव बतानेसे वह न भावके मोताबिक पैसा देंगे और कह देंगे जो आप गले काट रहे हैं। इसलिये बाजारके भावसे बिक्री करनेसे कहीं दोषी न होंगे और आत्मा सबल रहेगा तथा लाभ भी होगा। इस प्रकार से जो व्यापार करेंगे सो ऐहि संसारिक सब सुखोंको प्राप्त कर अन्तमें जो पारलौकिक व्यापार है वह व्यापार भी सत्य द्वारा सफल हो जायगा। वास्तविकमें सत्य द्वारा जो धन लाभ होता है और उनसे जो कार्य किया जाता है सो अवश्य सफल होता है, ये शास्त्र सिद्धान्त हैं।

॥ पाप कर्मसे अलग रहना ॥

चौरासी लाख योनियोंमेंसे भ्रमण करते हुए अमूल्य मनुष्य योनि पाकर पाप कर्मसे सदा बचे रहें। पापकर्म तीन प्रकारसे होता है और उनका भोग करते हैं। पहला जन्मोंका किया हुआ पाप कर्मोंका भोग। दूसरा इस जन्ममें जान करके पाप करना। तीसरा अनजान पाप कर्म होना। ये तीनों कर्मोंका भोग करना पड़ता हैं। परञ्च जान करके जो पाप किया जाता है उनका भोग ज्यादे काल करना पड़ता है और नाना प्रकार क्लेशोंका भोग करना पड़ता है। एक जन्ममें यदि भोग पूरा नहीं होता है तो अनेक जन्ममें भोग भोगना पड़ता है। इसलिये सर्वश्रेष्ठ मनुष्य योनि पाकर ऐसा कर्म करें जिससे उन तीनों कर्मोंका भोग इस

शरीर द्वारा ही अल्प समयमें ही भोग कर उन कर्मोंसे छुटकारा पा जाय और आगेके लिये कर्म न रहे। वास्तविकमें विचार दृष्टिसे देखा जाय तो मनुष्य और पशु-पक्षी आदिमें क्या फर्क है। पशु पक्षी भी सोते हैं, खाते हैं और सन्तान पैदा करते, मनुष्य भी खाते हैं, सोते हैं और संतान पैदा करते हैं; तब फरक क्या है, तो धर्म और विचार उस धर्मसे विमुख जो मानव हैं, उनसे अच्छा पशु-पक्षी ही हैं।

अतएव मैं साञ्जलि निवेदन करता हूं जो मनुष्य योनि पाकर सदा सचेत रहे जिससे किसी प्रकारका जान और अनजान पाप-कर्म न हों। यदि किसी बातको खुद न जानते हो तो कोई सज्जन पुरुषसे पूछ कर कार्य करें और जो कार्य करें सो खूब सोच विचार कर करे। यदि स्वयं विचार दृढ़ न हो तो दूसरे महान् पुरुषोंसे विचार लेकर करे। इस नियमसे जो मानव इस संसार के अन्दर कार्य करेंगे उनको पाप होगा ही नहीं और वह मानव सदाके लिये धर्मात्मा बने रहेंगे और ऐहि संसारिक सब सुखों को प्राप्त कर अन्तमें मोक्षपदको प्राप्त कर जायेंगे, ये शास्त्र-सिद्धान्त हैं।

॥ जीवन चरित्र ॥

पञ्जाबके अन्दर अमृतसर शहरमें प्रसिद्ध खत्री जाति लाला पेड़ामल कपूरका वंशमें मेरा जन्म है। लाला पेड़ामल कपूरजी शिष्य इतिहास राजा तेजासिंहका प्राइवेट मन्त्री थे और इनके पिता लाला आठवां मल कपूर (उर्फ) बक्सीराम कपूरजी राजा तेजासिंहजीका कोषाध्यक्ष थे। जब पञ्जाब अंग्रेजका आधीन हुआ तब पेड़ामल कपूरजीने नौकरी छोड़ दी। इनके बाद कुछ दिनोंतक व्यापार किया। उनके आठ लड़के थे, उनमेंसे तीसरा लड़का रामपालजी कपूर मेरा पिता थे। जबतक लाला पेड़ामलजी जीता रहें तबतक नित्य कर्म प्रति दिन छः घण्टा याने सुबहसे लेकर मध्याह्न तक एक आसनसे करते थे। उसके बाद मन्दिरमें जाकर देव-देवियोंका दर्शन कर तथा भगवानको भोग लगा कर और ब्राह्मणको भोजन करा कर तब भोजन करते थे। उसके बाद सायंकालका नित्य क्रिया करके स्वस्थ चित्त होकर विद्वान् ब्राह्मणसे योगवासिष्ठ सुनते थे। इसी प्रकारका उनका नित्य नियम थे। इस आचरणसे वह बड़े धर्मात्मा यशस्वी बड़े तेजस्वी तथा बड़े दयालु परोपकारी और सत्यवादी कहलाते थे। सं० १८६८ के लगभग वह पौष शुक्ल द्वादशी तिथिको अपनी इच्छासे इस संसारसे यात्रा कर दिया और एक आश्चर्यजनक घटना सबोंको देखा कर शरीरको छोड़ दिया याने एकादशीके रोज सब परिवारों से व्रत करवाया। फिर द्वादशीको ब्राह्मण भोजन करा कर तथा सब परिवारोंको भोजन करनेके बाद घरसे बाहर याने चौकमें आसन बिछा कर उसपर बैठ कर समाधि लगाकर इस शरीरसे

जीवात्माको निकाल कर परम ब्रह्म परमात्मामें तल्लीन कर लिया। सं० १९१६ में हमारे पिता रामपाल कपूरजीका जन्म हुआ। पिताजीका सादी ११ वर्षके उम्रमें हुआ था। उसके बाद १४ वर्षका उमरमें अपने भाइयोंके साथ कलकत्ता व्यापार करनेके लिये आये थे। परञ्च हमारे पिताजीका नियम था जो सत्य बोलना तथा प्रति दिन योग वासिष्ठको सुनना तथा पढ़ना और प्रणायाम करना तथा व्रतोंको करना, किसीको न सताना जहांतक होता था दूसरेका उपकार करना तथा आहार सात्विक करना तथा सज्जन महात्माओंसे सत्संग करना तथा आचार-विचार अच्छा रखना इसी नियमसे रहते थे। और चिकित्सा शास्त्रका अध्ययन करते थे तथा रासायन बनानेमें निपुण थे।

हमारे पिताजीने दो शादी किया था। पहली शादीमें दो कन्या और एक पुत्र हुआ, जिनका नाम था शिवरामदास कपूर। इनका जन्म सम्वत् १९५५ में हुआ था और सं० १ ७३ में इनका शादी हुआ और सम्वत् १९८७ में पिताजीसे अलग हो गये। इसके बाद सं० १९९० में फाल्गुन शुक्ल दशमीको इनका देहान्त हो गया। हमारे पिताजीका पहले स्त्रीका देहान्त शिवरामदास कपूरसे पहले ही हो गया था। फिर ४५ वर्षके लगभगमें दूसरी शादी किया। इन स्त्रीसे तीन पुत्र हुआ, पहला लड़का रामप्रसाद कपूरका सम्वत् १९६७ चैत्र शुदी रामनवमीको जन्म हुआ। दूसरा लड़का हरप्रसाद कपूरका १९६९ कार्त्तिक बदी पञ्चमीका जन्म हुआ। तीसरा लड़का द्वारकादास कपूरका सम्वत् १९७८ कार्त्तिक शुक्ल एकादशीको जन्म हुआ।

हमारी माता भी पतिका तथा ईश्वरका परम भक्ता थी।

परमपूज्यनीय पतिका आज्ञा मानना तथा उनका सेवादि करना उनके लिये परम धर्म था और नित्य गीताका पाठ तथा गोपाल सहश्रनामका पाठ करना और भागवत सुनना तथा भगवानका चरणामृत लेना रोज थोड़ा-से-थोड़ा भी दान देना ये नित्य नियम से करती थी। परञ्च अल्प ही अवस्थामें याने संवत १९७६ में आषाढ़ कृष्ण द्वादशीको इस संसारसे यात्राकर दिया।

हमारे पिताजीने अपने नित्य नियमको पालन करते हुए अमृतसर शहरमें और कलकत्तामें रहते थे। जब उनकी मृत्यु निकट आ गई तब चार महीने पहिले ही हमलोगोंसे कह दिया जो मैंने इस संसारसे थोड़ा दिनोंमें यात्रा कर देंगे। यह कह कर अमृतसर शहरमें रहने लगे। परन्तु हमलोग कलकत्तामें रहते थे। अन्तःकरणमें भावना पैदा हुई जो पिताजीको अमृतसरशहरमें रहना अकेले अच्छा नहीं है इसलिये बारम्बार पत्र देकर पिताजीको कलकत्ता मँगवा लिये। परञ्च कलकत्ता आने पर एक महीनेके अन्दर हीमें सम्वत् १९९० में अगहन शुदी प्रतिपदाको प्राणायाम द्वारा इस शरीरको त्यागकर परमपदको प्राप्त कर लिये। उस समय मैं च्यारो भाई तथा पिताजीके तीन भाई और हमारे वंशका सब परिवार उपस्थित थे परन्तु पिताजीका नियम था जो सत्य बोलना तथा किसीके हकको न मारना तथा किसीको अपना पैसा न छोड़ना तथा किसीका भय न करना और योगबाशिष्ठका सदा अभ्यास करना।

हमारे भाई हरप्रसाद जब १२ वर्षका हुआ तभीसे हमारे साथ व्यापार याने दूकानोंका कार्य करना आरम्भ कर दिया। थोड़ा ही दिनोंमें बड़ा जोरदारसे कार्य करने लगे और मुझे उनके

द्वारा समय भी मिलने लगा। उसी समयके अन्दर जहांतक हो सका मैंने परमार्थके लिए अभ्यास किया और थोड़ासा रास्ता मैंने उनको बतलाया उसी मोताविक हरप्रसादने अभ्यास किया उस अभ्याससे वह बड़े सचाईसे काम करने लगा तथा सच बोलना किसीके साथ खराब व्यवहार न रखना तथा परिवारों को सद्भावसे देखना आदि अनेक प्रकारके गुणसे सम्पन्न हो गये। इस नियमसे वह २००६ तक हमारे साथ कार्य करते रहे। पश्च कोई कारण वश वह अलग हो गये। २००७ के ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी तिथिको पञ्जाबमेल दुर्घटनामें जसीडोहके समीपमें उनका देहान्त हो गया। उनका दाह क्रिया बैद्यनाथ धाममें किया गया। परन्तु वहां एक वर्ष पहलेसे ही कहते थे कि जो हमसे मोह आप लोग त्याग कर दो। हमारे ऊपर होनी सवार है वह आपलोगों से अलग करवा रहा है। हमलोग अनेक तरहसे समझाये परन्तु नहीं समझा और व्यापारके कार्यमें वह बहुत निपुण थे।

जब मेरी अवस्था ७ वर्षकी हुई तब मेरे पिताजीने एक मुसलमान ओस्ताजके यहां महाजनी पढ़ाईके लिये भेजा डेढ़ वर्षके अन्दरमें ही महाजनी विद्याको पूर्ण हासिल कर लिया। इसके बाद हिन्दी पढ़ने के लिये स्कूलमें भर्ती हुये डेढ़ वर्षमें दूसरी कलासकी सब किताबों को अच्छी तरहसे पढ़ा और समझ लिया इसके बाद कलकत्ता आये उस समय मेरी अवस्था १० सालकी थी। कलकत्ता आने पर व्यापारमें ध्यान लगने लगा। जब व्यापारके तरफ मेरा पूर्ण ध्यान पिताजीने देखा तब पिताजीने मुझे उपदेश दिया जो सबसे पहले बुद्धिको उज्वल करने की कोशिश करो। यह कह कर लिङ्ग पुराणका अध्ययन करवाया उसमें पहली बात यह थ

"ओं नमो भगवते वासुदेवाय, "ओं नमो नारायणाय" ये दोनों मन्त्रोंका उपदेश पिताजी द्वारा मिला इस मन्त्रको मैंने लिङ्ग पुराण में देखा और उसका अर्थ भी देखा जो जिनको मुक्तिकी इच्छा हो वह "ओं नमो भगवते वासुदेवाय" इस मन्त्रको जप करें और जिनको भुक्ति और मुक्ति ये दोनों कि इच्छा हो वह 'ओँ नमो नारायणाय इस मन्त्रका जप करे। ऐसा व्याख्या अर्थ देखने से मुझे विश्वास हो गया और ये दोनों मन्त्रको मैं जप करने लगा। इसके बाद करीब १२ वर्ष ६ महीने की अवस्था हमारी हुई तब मेरी माताजो इस संसारसे यात्रा कर दी। इसके बाद १३ वर्षकी अवस्थामें एक महात्मासे मुलाकात हुई उनसे कुछ वार्त्तालाप होने पर वह मेरा तिरस्कार कर दिया उनकी तिरस्कार रूपी वाणी हमारे हृदयमें वज्रके समान चोट लगी तब हमारे मनमें विचार पैदा हुआ जो कौनसी त्रुटि हमारी है जिससे महात्माजीने मेरा तिरस्कार किया याने अपशब्द कहा ऐसा विचार करते करते तीन महीना लग गया तब जाकर अपानी त्रुटि मालूम हुई तब मेरे मन में विराग पैदा हुआ विराग पैदा होतेके साथ योग वासिष्ठका वैराग्य प्रकरण और मुमुक्षु प्रकरण ये दोनों प्रकरणका मैंने अध्ययन किया ये अध्ययन करनेसे मेरे मनमें वैराग्यकी दृढ़ता हो गई। इनके बाद योग वसिष्ठ सम्पूर्ण मैंने अध्ययन किया इनके बाद १८ वर्षकी अवस्था में काश्यपगोत्रोत्पन्न वयोवृद्ध गोस्वामी राजाराम शर्माजी के द्वारा यज्ञोपवित का उपदेश मिला याने गायत्री मन्त्रका उपदेश मिला और उन्हीं महान् पुरुषसे सन्ध्या तथा गायत्री मन्त्र जपने का नियम सिखा और करना आरम्भ कर दिया इसके बाद २० वर्षकी अवस्थामें विवाह हुआ परन्तु

२ वर्ष २ महीने में ही हमारी स्त्री स्वर्गको चली गई इनके बाद २३ वर्षकी अवस्थामें दूसरी सादी हमारी हुई परन्च १३ वर्षकी अवस्थासे लेकर २३ वर्षकी अवस्था तक योग वासिष्ठका शङ्का समाधान पिताजीके साथ लगातार होता ही रहा यह प्रतिदिन का नियम था और १३ वर्षकी अवस्था से हमारे ये नियम था जो जहां पर वृद्ध लोग आपसमें बात करते रहते थे वहां पर जाकर उनलोगों की बात बड़े ध्यान लगाकर सुनते थे और जहां पर रामायणकी कथा होती थी वहां जाकर एकाग्रचितसे कथा सुनते थे और १० वर्षकी अवस्था से लेकर अद्य पर्यन्त मैंने अनेकों महातमाओंसे सत्संग किया तथा उनलोगोंका उपदेश ग्रहण किया तथा विद्वानोंसे सत्संग किया तथा अनेक ग्रन्थोंका अध्ययन किया और जिन महान् पुरुषोंका उपदेशको मैंने ग्रहण किया वे हमारे गुरु हैं और उन्हीं लोगोंके आशीषसे तथा परमात्माको दयासे हमारे ऐसे अलपज्ञको भी ऐसे ग्रन्थ लिखने का साहस हुआ।

इति शुभम्

रामप्रसाद कपूर

* पञ्चबलि *

सव्य होकर करें

गो ग्रास (पत्तेपर)

सौरभ्येयः सर्वहिताः पवित्राः पुण्य राशयः ।
प्रति गृह्णन्तु मे ग्रासं गाव स्त्रैलोक्य मातरः ॥
इदमन्नं गोभ्योः नमः ॥

श्वान बलि (पत्तेपर)

द्वौ श्वानौ श्यामशवलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ ॥
ताभ्या मन्नं प्रदास्यामि स्यातामेता वहिंसकौ ॥
इदमन्नं श्वभ्यान्नमः ।

काकबलि (पृथ्वीपर)

ऐन्द्र वारुण वायव्याः सौम्या वै नै ऋं तास्तथा ॥
वायसाः प्रति गृह्णन्तु भूमा वन्नं मयार्पितम् ॥
इदमन्नं वायसेभ्योनमः ॥

अतिथिःबलि (पत्तेपर)

देवा मनुष्याः पशवो वयांसिसिद्धाश्च यक्षोरगदैत्य संघा ।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया
प्रदत्तम् ॥ इदमन्नं देवादिभ्योनमः ॥

पिपीलिकादि बलि (पत्तेपर)

पिपीलिकाः कीट पतङ्ग काद्या वुभुक्षिताः कर्म निवन्धवद्धाः ।
तृप्त्यर्थ मन्नं हि मया प्रदत्तं तेषामिदन्ते मुदिता भवन्तु ।
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो नमः ॥